श्रमण

ŚRAMAṆA

(A Quarterly Research Journal of Jain Studies)

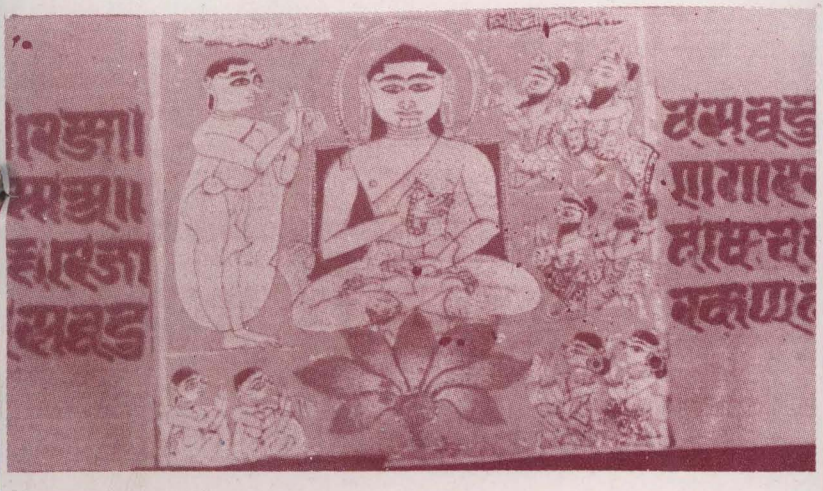

Vol. 49 No. 10 - 12

OCTOBER - DECEMBER 1998

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी

PĀRŚVANĀTHA VIDYĀPĪṬHA, VARANASI

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमण

पार्श्वनाथ विद्यापीठ की त्रैमासिक शोध-पत्रिका

अंक १०-१२ अक्टूबर- दिसम्बर १९९८

प्रधान सम्पादक
प्रोफेसर सागरमल जैन

सम्पादक
डॉ० शिवप्रसाद

प्रकाशनार्थ लेख-सामग्री, समाचार, विज्ञापन एवं सदस्यता आदि के लिए सम्पर्क करें

सम्पादक
श्रमण
पार्श्वनाथ विद्यापीठ
आई० टी० आई० मार्ग, करौंदी
पो० आ०- बी० एच० यू०
वाराणसी 221005 (उ० प्र०)

दूरभाष : 316521, 318046
फैक्स : 0542- 318046

ISSN 0972-1002

वार्षिक सदस्यता शुल्क

संस्थाओं के लिए	: रु० 150.00
व्यक्तियों के लिए	: रु० 100.00
इस अंक का मूल्य	: रु० 50.00

आजीवन सदस्यता शुल्क

संस्थाओं के लिए	: रु० 1000.00
व्यक्तियों के लिए	: रु० 500.00

नोट : सदस्यता शुल्क का चेक या ड्राफ्ट पार्श्वनाथ विद्यापीठ के नाम से ही भेजें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

पार्श्वनाथ विद्यापीठ (पूर्व पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान) द्वारा गत ४९ वर्षों से निरन्तर श्रमण नामक शोध पत्रिका का प्रकाशन होता आ रहा है। इसमें जैनधर्म-दर्शन के विविध पक्षों के महत्त्वपूर्ण लेखों का विशाल संग्रह अब तक प्रकाशित हो चुका है। पहले यह शोध पत्रिका मासिक प्रकाशित होती रही परन्तु अब १९९० से यह त्रैमासिक रूप में प्रकाशित हो रही है। बहुत समय से सुधी पाठकों की मांग थी की श्रमण में प्रकाशित लेखों की सूची का प्रकाशन हो जिससे विद्वत्जन अपने अनुकूल विषयों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकें। पार्श्वनाथ विद्यापीठ के पूर्व निदेशक और वर्तमान में मार्गदर्शक प्रो० सागरमल जैन की प्रेरणा से यह कार्य प्रारम्भ किया गया। प्रथम वर्ग में लेखों को वर्षक्रमानुसार रखा गया है। द्वितीय वर्ग में लेखकों का वर्ण क्रमानुसार वर्गीकरण करते हुए उनके लेखों की अकारादिक्रम से सूची दी गयी है जिसे श्रमण के अप्रैल-सितम्बर १९९८ के अंक में हम प्रकाशित कर चुके हैं। इस अंक में श्रमण में प्रकाशित लेखों को विषयानुक्रम से रखा गया है। इसके अन्तर्गत सात खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में दर्शन-तत्त्वमीमांसा और ज्ञान मीमांसा; दूसरे खण्ड में धर्म, साधना, नीति एवं आचार, तीसरे खण्ड में आगम एवं साहित्य; चौथे खण्ड में इतिहास, जैन पुरातत्त्व एवं कला; पांचवें खण्ड में समाज एवं संस्कृति; छठे खण्ड में तुलनात्मक विषयों और अन्तिम खण्ड में शेष विविध विषयों को रखा गया है।

इस सूची को तैयार करने में मुझे विद्यापीठ के प्रवक्ता डॉ० विजय कुमार जैन, डॉ० सुधा जैन और डॉ० असीम कुमार मिश्र से सहयोग प्राप्त हुआ है। अक्षर सज्जा राजेश कम्प्यूटर्स एवं मुद्रण कार्य डिवाइन प्रिंटर्स ने पूर्ण किया है। मैं इन सभी का हृदय से आभारी हूँ।

इस सूची को तैयार करने में जो भी त्रुटियां रह गयी हैं उनके लिए पाठक क्षमा करने की कृपा करेंगे ऐसी प्रार्थना है।

सम्पादक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमण

विषयानुसार लेख सूची

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमण

श्रमण अतीत के झरोखे मे

संकलनकर्ता

डॉ० शिवप्रसाद

डॉ० विजय कुमार जैन

डॉ० सुधा जैन

डॉ० असीम कुमार मिश्र

प्रस्तुत अङ्क में

	पृष्ठ
१. श्रमण : विषयानुसार लेख सूची	
(१) दर्शन-तत्त्व मीमांसा और ज्ञान मीमांसा	३४९-३६७
(२) धर्म, साधना, नीति एवं आचार	३६८-३८९
(३) आगम और साहित्य	३९०-४१९
(४) इतिहास, पुरातत्त्व एवं कला	४१९-४३९
(५) समाज एवं संस्कृति	४३९-४७६
(६) तुलनात्मक	४७७-४८२
(७) विविध	४८२-४९२
२. साहित्य सत्कार	१-९
३. जैन जगत्	९-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१. दर्शन-तत्त्व मीमांसा और ज्ञान मीमांसा					
अकलंकदेव की दार्शनिक कृतियाँ	डॉ० मोहनलाल मेहता	२८	३	१९७७	३१-३४
अजीवद्रव्य	श्री हुकुमचन्द्र संगवे	२२	९	१९७१	१७-२२
अध्यात्मवाद और भौतिकवाद	डॉ० सागरमल जैन	३१	६	१९८०	१-६
अध्यात्मवाद : एक अध्ययन	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१९	१-२	१९६७	५४-६४
अध्यात्मवादियों से	पं० उदय जैन	२२	३	१९७१	१८-२४
अन्तः प्रज्ञाशक्ति	दर्शनाचार्य मुनि योगेश कुमार	३६	५	१९८५	२-४
अर्न्तयात्रा	मुनि राजेन्द्रकुमार 'रत्नेश'	३९	१२	१९८८	१९-२१
अन्तरालगति	डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा	२८	५	१९७७	८-१३
अनेकान्त : अहिंसा	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	१४	२	१९६२	७-८
अनेकान्त अहिंसा का व्यापक रूप	,,	१३	७-८	१९६२	५१-५२
अनेकान्त एक दृष्टि	श्री ऋषभचंद जैन 'फौजदार'	३१	७	१९८०	१०-१२
अनेकान्त दर्शन	मुनिश्री नगराज जी	४०	३	१९८९	९-१०
अनेकान्तवाद	डॉ० प्रतिभा जैन	३४	५	१९८३	२-९
अनेकान्तवाद और उसकी व्यावहारिकता	डॉ० विजय कुमार	४७	१०-१२	१९९६	१३-३५
अनेकान्तवाद की व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता	शीतलचंद जैन	३१	१०	१९८०	२३-२७

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अनेकान्तवाद की व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता	डॉ० सनत् कुमार जैन	३२	१	१९८१	१८-१९
अपने को जानिये	श्री देवेन्द्र कुमार	५	७	१९५४	३१-३३
अभव्यजीव नवग्रैवेयक तक कैसे जाता है ?	श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	८	१९६८	७-११
अरविन्द का अनेकान्त दर्शन	श्री श्रीप्रकाश दुबे	१३	१२	१९६२	६-८
अर्हं परमात्मने नमः	प्रो० कल्याणमल लोढ़ा	४२	४-६	१९९१	१-१०
अशोक के अभिलेखों में अनेकांतवादी चिन्तन : एक समीक्षा	डा० अरुणप्रताप सिंह	४४	१०-१२	१९९३	८-१३
असंयत जीव का जीना चाहना राग है	प्रो० दलसुख मालवणिया	४	३	१९५३	३-६
आकाश	डॉ० मोहनलाल मेहता	२०	६	१९६९	५-७
आगम साहित्य में कर्मवाद	,,	२२	७	१९७१	४-१२
आचार्य दिवाकर का प्रमाण : एक अनुशीलन	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१७	१-२	१९६५	३-६
आचार्य हरिभद्रसूरि का दार्शनिक दृष्टिकोण	कु० सुशीला जैन	२३	१	१९७१	१९-२३
आचारांग का दार्शनिक पक्ष	स्व० डॉ० परमेष्ठी दास जैन	३८	१२	१९८७	१-११
आचारांग की दार्शनिक मान्यतायें	डा० इन्द्र	४	१०	१९५३	१-६
आचारांग में उल्लेखित 'परमत'	पं० बेचरदास दोशी	१७	७	१९६६	२१-२४
आचारांग में सोऽहम् की अवधारणा का अर्थ	मुनि योगेश कुमार	३५	७	१९८४	१-१०
आत्म-अनात्म द्वन्द्वात्मिकी	संन्यासी राम	३८	११	१९८७	९-१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आत्म परिमाण (विस्तार क्षेत्र) जैन दर्शन के सन्दर्भ में	मुनि योगेश कुमार	३५	१२	१९८४	२८-३६
आत्मबोध का क्षण	आचार्य आनन्द ऋषि	३४	४	१९८३	१०-११
आत्म विज्ञान	श्री गोपीचन्द धारीवाल	१६	९	१९६५	३१-३८
आत्मा और परमात्मा	डॉ० सागरमल जैन	३१	५	१९८०	१
आत्मा का बल	श्री किशोरीलाल मशरूवाला	५	३	१९५४	१-२
आत्मा की महिमा	श्री जयभगवान जी एडवोकेट	३	७-८	१९५२	३०
आधुनिक सन्दर्भ में जैन दर्शन	श्री बृजकिशोर पाण्डेय	३०	१२	१९७९	१८-२२
आप सम्यग् दृष्टि हैं या मिथ्या दृष्टि	प्रो० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	२	८	१९५१	३२-३६
आस्रव व बंध	श्री गोपीचन्द धारीवाल	१७	१-२	१९६५	१९-२५
आस्तिक और नास्तिक	डॉ० इन्द्र	५	७	१९५४	२७-३०
इन्द्रिय निग्रह से मोक्ष-प्राप्ति	श्री कृष्ण 'जुगनू'	३७	११	१९८६	५-७
ईश्वर और आत्मा : जैन दृष्टि	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	३१	६	१९८०	१०-१४
ईश्वरत्व: जैन और योग-एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ० ललितकिशोरलाल श्रीवास्तव	४१	१०-१२	१९९०	७१-८४
उच्चगोत्र और नीचगोत्र	डॉ० मोहनलाल मेहता	२२	१२	१९७१	३-४
उत्तराध्ययन का अनेकान्तिक पक्ष	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२८	१२	१९७७	३-१०
उत्तराध्ययन में मोक्ष की अवधारणा	डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह	४०	७	१९८९	३५-३८
उपासकदशांगसूत्र का आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ० सुभाष कोठारी	३८	२	१९८६	८-१३

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति	पं० सुखलाल जी	४	७-८	१९५३	३-१०
कर्म और अनीश्वरवाद	श्री श्रीप्रकाश दुबे	१४	८	१९६३	९-१२
कर्म और कर्मबन्ध	डॉ० नन्दलाल जैन	४५	१०-१२	१९९४	१०-२२
कर्म का स्वरूप	डॉ० मोहनलाल मेहता	२२	३	१९७१	३-११
कर्म का स्वरूप	श्री रवीन्द्रनाथ मिश्र	३५	३	१९८४	५-७
कर्म की नैतिकता का आधार-तत्त्वार्थसूत्र के प्रसंग में	डॉ० रत्ना श्रीवास्तव	४५	७-९	१९९४	१-९
कर्मवाद व अन्यवाद	डॉ० मोहनलाल मेहता	२२	५	१९७१	११-२०
क्या जैन दर्शन नास्तिक दर्शन है ?	डॉ० लालचन्द जैन	३०	६	१९७९	३-१५
क्या जैनधर्म रहस्यवादी है ?	डॉ० प्रद्युम्नकुमार जैन	२८	८	१९७७	११-१७
क्या धन-सम्पत्ति आदि कर्म के फल हैं	पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री	२	९	१९५१	३०-३९
काल	डॉ० मोहनलाल मेहता	२०	७	१९६९	७-९
कालचक्र	डॉ० धूपनाथ	४६	१०-१२	१९९५	४२-४३
केवलज्ञान सम्बन्धी कुछ बातें	प्रो० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	३	४	१९५२	१९-२२
कर्म की विचित्रता- मनोविज्ञान की भाषा में	डॉ० रत्नलाल जैन	४०	४	१९८९	३५-४१
षड्द्रव्य : एक परिचय	श्री रमेश मुनि	२४	१२	१९७२	१४-१५
गणधरवाद	डॉ० मोहनलाल मेहता	१०	२	१९५८	३-६
गाँधी सिद्धान्त	प्रो० रामचन्द्र महेन्द्र	९	११-१२	१९५८	२८-२९
गुणस्थान : मनोदशाओं का आध्यात्मिक विश्लेषण	श्री अभयकुमार जैन	२८	३	१९७७	३-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	,,	२८	४	१९७७	९-१८
गुणस्थान सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास	डॉ० सागरमल जैन	४३	१-३	१९९२	२३-४३
गुणस्थान सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास	डॉ० सागरमल जैन	४३	४-६	१९९२	१-२६
गुरुत्वाकर्षण से परमाणु शक्ति तक	श्री दुलीचन्द जैन	११	५	१९६०	३०-३४
छद्मस्थानां च मतिभ्रम:	श्री कस्तूरमल बांठिया	१०	१	१९५८	२६-३०
२६ वाँ प्राच्यविद्या विश्व-सम्मेलन	डॉ० नारायण हेमनदास सम्तानी	१५	४	१९६४	३-८
क्षत्रचूड़ामणि में उल्लिखित कतिपय नीतिवाक्य	श्री उदयचंद जैन 'प्रभाकर'	२४	३	१९७३	१२-२१
जगत् : सत्य या मिथ्या	श्री कन्हैयालाल सरावगी	३९	५	१९८८	५-११
जीव और जगत्	पं० बेचरदास दोशी	१२	१	१९६०	१३-१५
जैन अध्यात्मवाद : आधुनिक संदर्भ में	डॉ० सागरमल जैन	३४	१०	१९८३	१-१७
जैन आगम और गुणस्थान सिद्धान्त	डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय	४७	७-९	१९९६	३-१४
जैन आगम साहित्य में प्रमाणवाद	श्री गणेशमुनि शास्त्री	३०	११	१९७९	२९-३४
जैन आगमों में धर्म-अधर्म (द्रव्य) : एक ऐतिहासिक विवेचन	डॉ० विजय कुमार	४८	१०-१२	१९९७	५३-७२
जैन एवं न्यायदर्शन में कर्मसिद्धान्त	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२४	१	१९७२	१२-१९
जैन एवं बौद्ध धर्म में स्वहित एवं लोकहित का प्रश्न	डॉ० सागरमल जैन	३१	१२	१९८०	२-१०
,,	,,	३२	१	१९८०	५-१३
जैन कर्म-सिद्धान्त	डॉ० प्रमोद कुमार	२५	५	१९७४	३-९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन कर्म सिद्धान्त: एक विश्लेषण	डॉ० सागरमल जैन	४५	१-३	१९९४	९४-१२७
जैन कर्म सिद्धान्त और मनोविज्ञान	डॉ० रत्नलाल जैन	४३	७-९	१९९२	६५-७०
जैन कर्म सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास	श्री रवीन्द्रनाथ मिश्र	३६	१०	१९८५	१९-२६
जैन कर्म सिद्धान्त का क्रमिक विकास	,,	३६	९	१९८५	१६-२१
जैन तर्कशास्त्र में बौद्ध प्रत्यक्ष प्रमाणवाद	श्री लालचन्द जैन	२७	३	१९७६	३-८
,,	,,	२७	४	१९७६	१०-१५
,,	,,	२७	५	१९७६	१५-१९
,,	,,	२७	६	१९७६	१२-२०
जैन तर्कशास्त्र में 'सन्निकर्स-प्रमाणवाद'	,,	२३	१२	१९७२	८-१५
जैनदर्शन	सुश्री हीरा कुमारी	३	३	१९५२	९-१५
जैनदर्शन और अरविन्द दर्शन में एकत्व और अनेकत्व सम्बन्धी विचार	कु० ममता गुप्ता	३५	७	१९८४	१६-२०
जैनदर्शन और भक्ति : एक थीसिस	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१६	४	१९६५	३-८
जैन दर्शन और मार्क्सवाद	श्री हरिओम् सिंह	३२	१०	१९८१	१६-२०
जैनदर्शन का शब्द विज्ञान	श्री मनोहर मुनि जी	१२	८	१९६१	२८-३१
जैनदर्शन का स्याद्वाद सिद्धान्त	श्री अभयकुमार जैन	२७	१	१९७५	३-१४
जैनदर्शन की देन	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	७	४	१९५६	१३-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनदर्शन की पृष्ठभूमि में ईश्वर का अस्तित्त्व	डॉ० विनोदकुमार तिवारी	३६	७	१९८५	९-११
जैनदर्शन के अन्तर्गत जीव तत्त्व का स्वरूप	,,	३३	१२	१९८२	१२-१५
जैनदर्शन में कर्म का स्वरूप	डॉ० राधेश्याम श्रीवास्तव	२४	५	१९७३	३१-३५
जैनदर्शन के सन्दर्भ में भाषा की उत्पत्ति	कु० अर्चना पाण्डेय	३७	५	१९८६	११-१८
जैनदर्शन में अजीव तत्त्व का स्थान	डॉ० विनोदकुमार तिवारी	३४	७	१९८३	१८-२१
जैनदर्शन में अनेकान्तवाद का स्वरूप	श्री भिखारीराम यादव	३२	१०	१९८१	१-९
जैनदर्शन में आत्मस्वरूप	डॉ० उदयचन्द जैन	३६	१०	१९८५	१-११
जैनदर्शन में कथन की सत्यता	सुश्री अर्चना पाण्डेय	३६	५	१९८५	६-९
जैनदर्शन में कर्मवाद की अवधारणा	कु० प्रमिला पाण्डेय	२३	३	१९७२	२२-२७
जैनदर्शन में ज्ञान का स्वरूप	डॉ० रामजी सिंह	२४	३	१९७३	२७-३२
जैनदर्शन में नैतिकता की सापेक्षता	डॉ० सागरमल जैन	४६	४-६	१९९५	१२३-१३३
जैन तत्त्वविद्या में 'पुद्गल' की अवधारणा	श्री अम्बिकादत्त शर्मा	३९	१	१९८७	६-१५
जैन तर्क शास्त्र के सप्तभंगी नय की आगमिक व्याख्या	डॉ० भिखारीराम यादव	३९	१०	१९८८	१-२६
जैन दर्शन	श्री उदय मुनि	२९	२	१९७७	१४-१७
जैन दर्शन में जन्म और मृत्यु की प्रक्रिया	श्री अम्बिकादत्त शर्मा	३८	९	१९८७	२-९
जैन दर्शन में जीव का स्वरूप	श्री विजय कुमार	३७	११	१९८६	९-१५
जैन दर्शन में परीषह जय का स्वरूप एवं महत्त्व	कु० कमला जोशी	४०	११	१९८९	४१-४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन दर्शन में प्रत्यक्ष का स्वरूप (विशेष शोध निबन्ध)	डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा	३३	३	१९८२	१-२४
जैनदर्शन में प्रमाण (विशेष शोध निबन्ध)	,,	३२	८	१९८१	१-३४
जैनदर्शन में पुद्गल द्रव्य	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२५	४	१९७४	८-१५
जैनदर्शन में पुद्गल स्कन्ध	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२८	११	१९७७	१०-१२
जैनदर्शन में प्रमाण का स्वरूप	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२६	३	१९७५	९-१३
,,	,,	२६	४	१९७५	९-१३
,,	,,	२६	५	१९७५	१६-२२
,,	,,	२६	६	१९७५	७-९
,,	,,	२६	७	१९७५	१५-१८
,,	,,	२६	८	१९७५	२३-२९
जैनदर्शन में बन्ध और मुक्ति	श्री हरेराम सिंह	२७	४	१९७६	२५-३०
जैनदर्शन में बन्ध का स्वरूप: वैज्ञानिक अवधारणाओं के सन्दर्भ में	श्री अनिलकुमार गुप्त	२६	५	१९७५	३-९
जैनदर्शन में बंधन मोक्ष	श्री विजय कुमार	३७	६	१९८६	१०-१९
जैन दर्शन में ब्रह्माद्वैतवाद	डॉ० लालचन्द जैन	३०	९	१९७९	११-२६
जैन दर्शन में मुक्ति की अवधारणा	श्री पाण्डेय रामदास 'गंभीर'	३१	१०	१९८०	२-१२
जैन दर्शन में शब्दार्थ सम्बन्ध	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	४३	४-६	१९९२	२७-३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन दर्शन में सर्वज्ञता का स्वरूप	श्री ललितकिशोरलाल श्रीवास्तव	२५	७	१९७४	२३-२८
जैन दर्शन में स्याद्वाद और उसका महत्त्व	श्री रामजी	२३	१०	१९७२	१८-२२
जैन दार्शनिक साहित्य में अभाव प्रमाण : एक मीमांसा	श्री रमेशमुनि शास्त्री	३०	४	१९७९	२३-३५
जैन दार्शनिक साहित्य में ईश्वरवाद की समालोचना	श्रीमती मंजुला भट्टाचार्या	४३	१०-१२	१९९२	६७-६९
जैन दृष्टि से ज्ञान-निरूपण	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२९	११	१९७८	२९-३५
जैनधर्म का लेश्या-सिद्धान्त : एक विमर्श	डॉ० सागरमल जैन	४६	४-६	१९९५	१५०-१६५
जैनधर्म की प्रासंगिकता	डॉ० निजामुद्दीन	३१	८	१९८०	१९-२५
जैनधर्म-दर्शन का सारतत्त्व	डॉ० सागरमल जैन	४५	१-३	१९९४	१-१३
जैनधर्म : मानवतावादी दृष्टिकोण : एक मूल्यांकन	डॉ० ललितकिशोरलाल श्रीवास्तव	४०	३	१९८९	३४-४५
जैनधर्म में आत्मतत्त्व निरूपण	प्रो० रामदेव राम	३३	४	१९८२	१-९
जैनधर्म में 'एकान्त नियतिवाद' और 'सम्यक् नियति' का भेद	पं० फूलचन्द सिद्धान्तशास्त्री	१३	७-८	१९६२	६-८
जैनधर्म में कर्मयोग का स्वरूप	श्री कन्हैयालाल सरावगी	३०	११	१९७९	१५-२०
जैनधर्म में मानव	डॉ० रज्जन कुमार/डॉ० सुनीता कुमारी	४१	१-३	१९९०	१०५-११२
जैनधर्म में मानवतावाद	श्री कस्तूरमल बांठिया	१७	३	१९६६	२५-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म में शुभ और अशुभ की अवधारणा	श्री सुभाषचन्द जैन	३०	६	१९७९	२३-३२
जैनधर्मानुसार जीव,प्राण और हिंसा	डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा	१९	७	१९६८	१८-२२
जैन नीति-दर्शन एवं उसका व्यावहारिक पक्ष	डॉ० डी० आर० भंडारी	३६	७	१९८५	१-८
जैन न्यायदर्शन : समन्वय का मार्ग	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२६	५	१९७५	२३-२७
जैन पुराणों में पुनर्जन्म की कथायें-	श्री धन्यकुमार राजेश	२२	५	१९७१	२३-३१
,,	,,	२२	६	१९७१	१०-१५
जैनभाषादर्शन की समस्याएँ	श्रीमती अर्चनारानी पाण्डेय	४२	१-३	१९९१	९३-९६
जैन महाकवि पं० बनारसीदास का रहस्यवाद	श्री गणेशप्रसाद जैन	२०	२	१९६८	१८-२२
जैन मिस्टीसिज्म	प्रो० यू० ए० आसरानी	२४	६	१९७३	२७-३८
,,	,,	२४	७	१९७३	३२-४१
जैन वाङ्मय में आयुर्वेद	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२०	१	१९६८	१४-२२
जैन श्रमण साधना: एक परिचय	डॉ० सुभाष कोठारी	४२	१-३	१९९१	३३-५०
जैन संस्कृति और मिथ्यात्त्व	पं० बेचरदास दोशी	५	३	१९५४	४०
जैन संस्कृति का दिव्य सन्देश-अनेकान्त	मुनि ज्योतिर्धर	३७	१	१९८५	२-७
जैन संस्कृति में सत्य की अवधारणा	डॉ० राजदेव दुबे एवं प्रमोदकुमार सिंह	३५	४	१९८४	१२-१५
जैन सिद्धान्त	डॉ० मोहनलाल मेहता	२९	८	१९७८	३-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनागमों में ज्ञानवाद	डॉ० मोहनलाल मेहता	६	२	१९५४	५-९
ज्ञान भी सम्पदा है	मुनिश्री रामकृष्ण	३३	२	१९८१	७-११
ज्ञान की खोज में	मुनिश्री जयन्तीलाल जी	३	९	१९५२	१७-२१
ज्ञान-प्रमाण्य और जैन दर्शन	श्री भिखारीराम यादव	३३	६	१९८२	३४-३६
ज्ञान सापेक्ष है	प्रो० विमलदास	३	९	१९५२	५-११
डॉ० गोविन्द त्रिगुणायक का "जैन दर्शन व संत-कवि" सम्बन्धी वक्तव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	१६	१	१९६४	२८-३६
तत्त्वसूत्र	संन्यासी राम	३९	४	१९८८	१-८
तत्त्वार्थराजवार्तिक में वर्णित बौद्धादिमत	डॉ० उदयचन्द जैन	३५	१२	१९८४	३७-४८
तर्क का क्षेत्र	प्रो० विमलदास जैन	३	३	१९५२	३१-३६
तीर्थंकर और दुःखवाद	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२४	८	१९७३	२६-२८
तीर्थंकरवाद	श्री कस्तूरमल बांठिया	७	९	१९५६	९-१६
त्याग का मनोविज्ञान	श्री माँ अरविन्दाश्रम	१६	३	१९६५	२९-३३
तीर्थंकर, बुद्ध और अवतार की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन	श्री रमेशचन्द्र गुप्त	३६	१०	१९८५	२७-३७
द्वन्द्व और द्वन्द्व निवारण (जैन दर्शन के विशेष-प्रसंग में)	डॉ० सुरेन्द्र वर्मा	४७	१०-१२	१९९६	१-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
दर्शन और धर्म	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१६	७	१९६५	३-७
दर्शन और ज्ञान जब चारित्र में आया	श्री महेन्द्रसागर प्रचण्डिया	३६	७	१९८५	१८-१९
दर्शन और धर्म	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	१४	२	१९६२	९-१३
दर्शन और विज्ञान : एक चिन्तन	श्री गणेशमुनि शास्त्री	१६	९	१९६५	८-१२
द्वादशारनयचक्र का दार्शनिक अध्ययन	श्री जितेन्द्र बी० शाह	४३	७-९	१९९२	५९-६३
धर्म और दर्शन के क्षेत्र में हरिभद्र का अवदान	डॉ० सागरमल जैन	३७	१२	१९८६	१-२०
धर्म और दर्शन के क्षेत्र में हरिभद्र का अवदान	संगीता झा	४०	११	१९८९	३०-४०
धर्म एवं दर्शन-एक गवेषणात्मक विवेचन	मुनि राजेन्द्रकुमार रत्नेश	३६	१०	१९८५	१६-१८
धर्म और दर्शन	मुनिश्री सुशीलकुमार जी	८	१	१९५६	२०-२३
”	”	८	२	१९५६	२३-२८
नय और निक्षेप-एक विश्लेषण	डॉ० कृपाशंकर व्यास	३२	१२	१९८१	३५-४८
नयवाद: एक दृष्टि	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२९	१०	१९७८	१४-१८
निक्षेप में नय योजना	श्री उदयचंद जैन	२३	४	१९७२	१३-१७
निक्षेपवाद : एक परिदृष्टि	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२५	५	१९७४	१०-१५
निह्नववाद	श्री मोहनलाल मेहता	७	३	१९५६	५-१२
निश्चय और व्यवहार	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	२५	१२	१९७४	३-८
निश्चय और व्यवहार : पुण्य और पाप	पं० दलसुख मालवणिया	२५	१०	१९७४	३-१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
न्याय सम्पन्न विभव	,,	२	१	१९५०	९-१२
पंचकारण समवाय	डॉ० रतनचन्द्र जैन	४८	१०-१२	१९९७	७३-८०
परमतत्त्व : आचार्य विनोबा भावे की दृष्टि में	डॉ० नरेन्द्र बहादुर	३६	४	१९८५	२२-२६
परमाणु	डॉ०मोहनलाल मेहता	२०	११	१९६९	५-७
परिग्रह मीमांसा	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	२	५	१९५१	९-१४
पुद्गल	डॉ० मोहनलाल मेहता	२०	९	१९६९	२०-२२
पुद्गल : एक विवेचन	मुनि बुद्धमल्ल जी	२५	१०	१९७४	१४-१८
पुनर्जन्म सिद्धान्त की व्यापकता	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२४	४	१९७३	३-१०
प्रातिभज्ञानात्मक चिन्तन : सापेक्ष चिन्तन	श्री पाण्डेय रामदास 'गंभीर'	३४	२	१९८२	५-१७
प्रत्येक आत्मा परमात्मा है	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	१५	२	१९६३	३१-३२
प्रमाणवाद : एक पर्यवेक्षण - क्रमशः	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२५	६	१९७४	३-१३
,,	,,	२५	७	१९७४	७-१८
,,	,,	२५	८	१९७४	१३-२२
प्रमाण-लक्षण-निरूपण में प्रमाण मीमांसा का अवदान	डॉ० सागरमल जैन	४८	४-६	१९९७	१३३-१४०
प्रमाण स्वरूप विमर्श - क्रमशः	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	२४	२	१९७२	३-१५
,,	,,	२४	३	१९७३	३-११
प्रमेय : एक अनुचिन्तन	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२३	३	१९७२	११-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्रलय से एकलय की ओर	मुनि राजेन्द्र कुमार 'रत्नेश'	३९	५	१९८८	२-४
प्रवर्तक एवं निवर्तक धर्मों का मनोवैज्ञानिक विकास एव उनके दार्शनिक एवं सांस्कृतिक प्रदेय	डॉ० सागरमल जैन	३०	८	१९७९	१४-२०
प्राचीन जैन आगमों में चार्वाक दर्शन का प्रस्तुतीकरण	,,	४६	१-३	१९९५	४६-५८
प्राचीन जैन ग्रंथों में कर्म सिद्धान्त का विकासक्रम	डॉ० अशोक सिंह	४३	१०-१२	१९९३	१९-२८
बंधन से अलंकार	सुश्री मोहिनी शर्मा	४	४	१९५३	३-५
बन्ध के कार्य में मिथ्यात्त्व और कषाय की भूमिकाएं	डॉ० रतनचन्द्र जैन	३४	६	१९८३	२-८
ब्रह्माद्वैतवाद का समालोचनात्मक परिशीलन	डॉ० लालचन्द जैन	३०	१०	१९७९	३-१३
,,	,,	३१	२	१९७९	९-२२
भगवान् महावीर का अध्यात्म दर्शन	उपाध्याय श्री अमरमुनि	१४	६-७	१९६३	१-५
भगवान् महावीर का ईश्वरवाद	डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा	२६	१०	१९७५	९-१२
भगवान् महावीर का तत्त्वज्ञान	कु० मंजुला मेहता	२६	१-२	१९७४	६३-६७
भारतीय दर्शनों की आत्मा	उपाध्याय श्री अमरमुनि जी	१२	९	१९६१	९-११
भारतीय दर्शनों की समन्वय परम्परा	डॉ० एन० के० देवराज	१२	९	१९६१	२१-२४
भारतीय दर्शनों में आत्मा	श्री बशिष्ठनारायण सिन्हा	१०	४	१९५९	१९-२६
भारतीय संस्कृति में दान का महत्त्व	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२०	७	१९६९	१०-२०
भारतीय समाज का आध्यात्मिक दर्शन	श्री देवेन्द्र कुमार	१	१२	१९५०	२७-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भेद में अभेद का सर्जक स्याद्वाद	श्री छगनलाल शास्त्री	१४	२	१९६२	२६-२८
भेद विज्ञान : मुक्ति का सिंहद्वार	डॉ० सागरमल जैन	३१	९	१९८०	३-११
भौतिकवाद एवं समयसार की सप्तभंगी व्याख्या	डॉ० केवलकृष्ण मित्तल	२९	८	१९७८	१४-२०
मन और संज्ञा	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२८	९	१९७७	२५-२८
मन की शक्ति बनाम सामायिक	युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ	३४	२	१९८२	१८-२२
मन-निग्रह	श्री अभयमुनि जी महाराज	६	१२	१९५५	३६-३७
मन, शक्ति, स्वरूप और साधना : एक विश्लेषण	डॉ० सागरमल जैन	४६	४-६	१९९५	९७-१२२
महाकवि स्वयंभू का प्रकृति दर्शन	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२४	१२	१९७३	३-५
महावीर के समकालीन विभिन्न आत्मवाद एवं उसमें जैन आत्मवाद का वैशिष्ट्य	डॉ० सागरमल जैन	४६	१-३	१९९५	५९-६८
महावीर संदेश-दार्शनिक दृष्टि	श्री हरिओम् सिंह	३१	५	१९८०	१८-२१
महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के जैनधर्म सम्बन्धी मन्तव्यों की समालोचना	डॉ० सागरमल जैन	४५	४-६	१९९४	१७९-१८४
मानव	पुष्पा धारीवाल	६	५	१९५५	२४-३६
मानवतावादी समाज का आधार अहिंसा	मुनिश्री सुशीलकुमार जी	११	२	१९५९	७-११
मानवव्यक्तित्व का वर्गीकरण	डॉ० त्रिवेणीप्रसाद सिंह	४१	४-६	१९९०	४१-५०
मुनिराम सिंह का उग्र अध्यात्मवाद	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१९	६	१९६८	१२-२२

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मुनि वारिषेण का सम्यकत्त्व	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१५	५-६	१९६४	४२-४७
मूल्य और मूल्यबोध की सापेक्षता का सिद्धांत	डॉ० सागरमल जैन	४३	१-३	१९९२	१-२२
मूल्यों का संकट और आध्यात्मिकता	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१६	८	१९६५	२०-२३
मोक्ष मीमांसा में जैन दर्शन का योगदान	श्री धन्यकुमार राजेश	२२	९	१९७१	३-९
यज्ञ : एक अनुचिन्तन - क्रमशः	श्री सुदर्शनलाल जैन	१७	११	१९६६	३१-३८
,,	,,	१७	१२	१९६६	१५-२७
रूपी और अरूपी	डॉ० मोहनलाल मेहता	२०	४	१९६९	५-७
लब्धिफल	पं० अम्बालाल प्रेमचन्द शाह	१७	४	१९६६	२९-३९
लब्धियां	,,	१७	१-२	१९६५	७३-८४
लेश्या : एक विश्लेषण	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२७	८	१९७६	१४-१७
वनस्पति की गतिशीलता	श्री कोमलचन्द शास्त्री	१२	३	१९६१	१२-१५
वनस्पति विज्ञान	श्री पं० बेचरदास दोशी	१२	३	१९६१	१०-११
वास्तविकतावाद और जैन दर्शन	मुनिश्री महेन्द्रकुमार 'द्वितीय'	१९	१२	१९६७	५-१७
विग्रहगति एवं अन्तराभव	डॉ० कोमलचंद जैन	२०	१२	१९६९	२२-२५
विश्व का निर्माण तत्त्व : द्रव्य	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१८	३	१९६७	३२-३६
विश्व विज्ञान	पं० बेचरदास जी दोशी	१२	२	१९६०	१६-१९
वृत्ति : बोध और विरोध	महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर	४४	४-९	१९९३	११-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
व्युत्सर्ग आवश्यक	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२८	६	१९७७	१७-२०
शब्द का वाच्यार्थ जाति या व्यक्ति	कु० अर्चना पाण्डेय	३६	९	१९८५	९-१३
शब्दों की अर्थ मीमांसा	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२८	४	१९७७	२२-२६
षड्जीवनिकाय में त्रस एवं स्थावर के वर्गीकरण की समस्या	डॉ० सागरमल जैन	४४	४-६	१९९३	१३-२१
षड्आवश्यक में सामायिक	श्री हुकुमचंद संगवे	२२	११	१९७१	११-१६
श्रोतेन्द्रिय की प्राप्यकारिता : एक समीक्षा	श्री नंदलाल जैन	३३	३	१९८२	२५-३२
संवर और निर्जरा	श्री गोपीचंद धारीवाल	१८	५	१९६७	१०-१७
संसार का अन्तरंग प्रदेश	,,	१९	७	१९६८	२३-२५
संस्कृत साहित्य में कर्मवाद	डा० रत्नलाल जैन	३८	९	१९८७	१०-१६
सत्य के आवरण या मूर्च्छाएं	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१६	१	१९६४	१२-१९
'सत्यं स्वर्गस्य सोपानम्'	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	६	१	१९५४	३-४
सम्यग् ज्ञान और मिथ्या ज्ञान	प्रो० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	२	४	१९५१	११-१४
सम्यक् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	५	३	१९५४	३-१०
,,	,,	५	४	१९५४	४-११
सबसे बड़ा प्रश्न - मैं कौन हूँ	मुनिश्री रामकृष्ण जी महाराज	२	११	१९५१	९-१४
समन्तभद्र द्वारा क्षणिकवाद की समीक्षा	श्री नरेन्द्रकुमार जैन	३०	१	१९७९	११-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	,,	३०	२	१९७९	१७-२५
समराइच्चकहा में चार्वाक दर्शन	श्री झिनकू यादव	२४	१	१९७२	२४-२७
समयसार के अनुसार आत्मा का कर्तृत्व अकर्तृत्व एवं भोक्तृत्व-अभोक्तृत्व	डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय	४२	१-३	१९९१	५७-७०
समयसार सप्तदशांगी टीका में गणितीय न्याय एवं दर्शन	डॉ० लक्ष्मीचंद जैन	२९	९	१९७८	६-१०
सम्यकत्व की कसौटी	डॉ० मोहनलाल मेहता	१	३	१९४९	२८-२९
सम्यग्दर्शन	श्री गोपीचंद धारीवाल	१९	१-२	१९६७	२७-३१
सम्यक् दृष्टिकोण सत्य पारखी दृष्टि	मुनिश्री श्रीमल्लजी	११	७-८	१९६०	२५-२९
सर्वज्ञता - एक चिन्तन	डॉ० मोहनलाल मेहता	२१	७	१९७०	३४-३८
सूत्रकृतांग में वर्णित दार्शनिक विचार	डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय	४१	४-६	१९९०	५७-७६
सूत्रकृतांग में वर्णित मत-मतांतर	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	५	५	१९५४	११-२०
स्वप्न : एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	श्री मोहनलाल मेहता	४	२	१९५२	११-१५
स्वरूप और पररूप	पं० सुखलाल जी संघवी	३	११	१९५२	५-१०
स्याद्वाद	कु० कुसुम जैन	३०	११	१९८०	२१-३३
स्याद्वाद-एक पर्यवेक्षण	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२५	१-२	१९७४	२२-२८
स्याद्वाद:एक भाषायी पद्धति	श्री भिखारीराम यादव	३३	३	१९८२	३३-३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
स्याद्वाद और अनेकान्तवाद	पं० दरबारीलाल कोठिया	१५	५-६	१९६४	१७-२०
स्याद्वाद और सप्तभंगी-एक चिन्तन	प्रो० सागरमल जैन	४१	१-३	१९९०	३-४४
स्याद्वाद एक परिशीलन -क्रमशः	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२०	१०	१९६९	१५-२०
,,	,,	२०	११	१९६९	८-१५
,,	,,	२०	१२	१९६९	१३-२१
स्याद्वाद की अवधारणा : उद्भव एवं विकास	डॉ० सीताराम दुबे	४८	७-९	१९९७	१-१३
स्याद्वाद की सर्वप्रियता	श्री चन्द्रशंकर शुक्ल	४	१	१९५२	३-८
सूत्रकृतांग में प्रस्तुत तज्जीव तच्छरीरवाद	श्रीमती मंजू सिंह	३५	८	१९८४	१५-२३
सौन्दर्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	डॉ० मोहनलाल मेहता	२	२	१९५०	२५-२८
हम अनेकान्तवादी हैं या एकान्तवादी ?	श्री कस्तूरमल बांठिया	९	१०	१९५८	१७-२०
हर क्षेत्र में अनेकान्तवाद का प्रयोग हो	मुनिश्री नेमिचन्द्र जी	१०	६	१९५९	२४-२८
हरिभद्र की क्रान्तदर्शी दृष्टि, धूर्ताख्यान के सन्दर्भ में	प्रो० सागरमल जैन	३९	४	१९८८	२१-२५
हरिभद्र के धर्म-दर्शन में क्रान्तिकारी तत्त्व : सम्बोधप्रकरण के सन्दर्भ में	,,	३९	४	१९८८	९-२०
हिन्दी जैन कवियों का आत्म-स्वातंत्र्य	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१४	५	१९६३	२७-३०
हिंसा-अहिंसा का जैन दर्शन	डॉ० मोहनलाल मेहता	३१	४	१९८०	१२-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२- धर्म, साधना, नीति एवं आचार					
अक्षय तृतीया : एक चिन्तन	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१८	८	१९६७	७-१२
अतीत धर्म और साधु संस्था	बरट्रेन्ड रसल	२	३	१९५१	३१-३४
अधिमास और पर्युषणा	श्री कस्तूरमल बांठिया	७	१	१९५५	१७-२३
अध्यात्म-आवास/पर्युषण	मुनि योगेशकुमार	३५	११	१९८४	७-१६
अनासक्ति	अजित शुकदेव शर्मा	२३	१०	१९७२	२३-२६
अर्धमागधी आगम साहित्य में समाधिमरण की अवधारणा	डॉ० सागरमल जैन	४५	१-३	१९९४	८०-९३
अध्यात्म साधना कैसी हो	आचार्य विनोबा	११	११	१९६०	१०-१२
अष्टपाहुड़ की प्राचीन टीकाएँ	डॉ० महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज'	४३	१०-१२	१९९२	४५-४८
अस्वाद व्रत भी तप है	श्री अगरचन्द नाहटा	१२	१२	१९६१	२५-३१
अहिंसक शक्तियों का ऐक्य	सतीश कुमार	९	९	१९५८	२०-२५
अहिंसा	श्री मदनलाल जैन	६	६-७	१९५५	५५-५६
,,	श्री राजकुमार जैन 'अखिल'	७	१२	१९५६	२४-२९
अहिंसा	श्री गोपीचंद धारीवाल	१६	७	१९६५	२०-२८
अहिंसा : एक विश्लेषण	,,	१८	८	१९६७	१८-१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अहिंसा : एक विश्लेषण	श्री बशिष्ठनारायण सिन्हा	१८	१-२	१९६६	७३-७७
,,	,,	१८	६	१९६७	१०-१५
,,	श्री नन्दलाल मारू	१८	११	१९६७	३३-३७
अहिंसा और शस्त्रबल	आचार्य विनोबा भावे	१	२	१९४९	२४-२६
अहिंसा और शिशु	श्री ए० एम० योस्तन	८	३-४	१९५७	३-९
अहिंसा का जैन दृष्टि से विश्लेषण	श्री नन्दलाल मारू	१८	५	१९६७	११-१४
अहिंसा का अर्थ विस्तार, संभावना और					
अहिंसा की कसौटी का क्षण	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१०	६	१९५९	७-८,४४-४६
सीमा क्षेत्र	डॉ० सागरमल जैन	३१	३	१९८०	३-२१
अहिंसा का व्यावहारिक रूप	पं० श्री मल्ल जी	११	६	१९६०	२८-३१
अहिंसा का महान् नियम	श्री वासुदेवशरण अग्रवाल	४	९	१९५३	१-२
अहिंसा का विराट रूप	श्री उदय जैन	२१	९	१९७०	२८-३१
अहिंसा का व्यापक अर्थ	श्री लालजी राम शुक्ल	१	२	१९४९	३३-३६
अहिंसा की तीन धारायें	पं० मुनिश्री मल्लजी म०सा०	९	३	१९५८	३४-३७
अहिंसा की प्रतिष्ठा का मार्ग	श्री हस्तिमल जी 'साधक'	१०	७-८	१९५९	४३-४५
अहिंसा की महानता	श्री नारायण सक्सेना	१६	१०	१९६५	१२-१५
अहिंसा की युगवाणी	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	६	६-७	१९५५	३-४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अहिंसा की परिणति-समन्वय और सत्याग्रह	काका कालेलकर	१७	९	१९६६	१८-२१
अहिंसा की लोकप्रियता	श्री ज्ञानमुनि	१५	१२	१९६४	१९-२४
अहिंसा की समस्याएँ	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३४	९	१९८३	२-४
अहिंसा की साधना	काका कालेलकर	१	७	१९५०	११-१३
अहिंसा की साधना	श्री गोपीचंद धारीवाल	१८	१-२	१९६६	४३-६०
अहिंसा की सार्थकता	श्री सौभाग्यमल जैन	३५	२	१९८३	८-१२
अहिंसा के इतिहास में निरामिषता	श्री गणेशमुनि शास्त्री	१९	११	१९६८	९-१४
अहिंसा के तीन क्षेत्र (क्रमशः)	काका कालेलकर	१५	९	१९६४	१६-१९
,,	,,	१५	१०	१९६४	१६-१७
अहिंसा निउणा दिट्ठा	श्री कस्तूरमल बांठिया	१४	६-७	१९६३	३४-४३
अहिंसा परमोधर्मः	श्री रविशंकर मिश्र	३३	५	१९८२	१७-१९
अहिंसा, संयम और तप	श्री जमनालाल जैन	११	६	१९६०	३५-३८
अहिंसा से कोई विरोध नहीं	श्री शरदकुमार 'साधक'	१४	९	१९६३	३६-३९
आगम मर्यादा और संतों के वर्षावास	मुनिश्री आईदानजी	८	१०	१९५७	२६-३३
आचार्य हरिभद्र एवं उनका योग	डॉ० कमल जैन	४४	१-३	१९९३	८-२७
आचार्य हरिभद्र का योगदर्शन	श्री धनंजय मिश्र	४१	७-९	१९९०	३५-४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आचारांग के शस्त्र परिज्ञा अध्ययन में प्रतिपादित षड्जीवनिकाय सम्बन्धी अहिंसा	डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी'	३९	१२	१९८८	८-१५
आचारांग में अनासक्ति	डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय	४२	४-६	१९९१	७३-८८
आचेलक्य कल्प-एक चिन्तन	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२९	२	१९७७	१८-२०
आत्मशुद्धि और साधना का पर्व	श्री माईदयाल जैन	१०	१२	१९५९	२०-२१
आत्मशुद्धि का पर्व - पर्युषण	श्री सरदारमल जैन	१६	११	१९६५	३४-३५
आत्मशोधन का महान् पर्व : पर्युषण	श्री अगरचन्द नाहटा	२	११	१९५१	७-१३
आत्मोपलब्धि की कला : ध्यान	महोपाध्याय मुनि चन्द्रप्रभसागर	४४	१-३	१९९३	१-७
आध्यात्मिक खोज	पं० श्री बेचरदास दोशी	११	११	१९६०	१३-१५
आध्यात्मिक साधना और उसकी परम्पराएँ	कुमारी इन्दुला	१०	१०	१९५९	९-१६
आहार दर्शन	डॉ० कस्तूरनाथ गोस्वामी	३८	८	१९८७	२१-२२
आहार-विहार में उत्सर्ग-अपवाद मार्ग का समन्वय	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	४०	९	१९८९	११-१५
आहार शुद्धि के लिए क्या करें ?	मुनिश्री निर्मल कुमार	११	१०	१९६०	१९-२०
ईर्यापथ-प्रतिक्रमण	श्री धीरजलाल टोकरशीशाह	१	७	१९५०	३४-३६
ईश्वरलालकृत "जैन निर्वाण : परम्परा और परिवृत" लेख में आत्मा की माप-जोख शीर्षक-के अन्तर्गत उठाये गये प्रश्नों के उत्तर	श्री पुखराज भण्डारी	४४	१-३	१९९३	२८-३४
उतार-चढ़ाव के बीच उभरती अहिंसा	श्री शरदकुमार साधक	३१	४	१९८०	१५-१८

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
उपशमन का आध्यात्मिक पर्व	पं० दलसुख मालवणिया	५	११	१९५४	३-५
उदायन का पुर्यषण	उपाध्याय श्री अमरमुनि	३१	११	१९८०	७-११
"ॐ"	महात्मा भगवानदीन	१४	८	१९६३	२६-२९
ऋग्वेद में अहिंसा के सन्दर्भ	डॉ० प्रतिभा त्रिपाठी	४२	४-६	१९९१	४४-६२
एकान्तपाप और एकान्तपुण्य	पं० दलसुख मालवणिया	६	१२	१९५५	११-१६
कलचुरी नरेश और जैन धर्म	श्री शिवकुमार नामदेव	२५	७	१९७४	१९-२२
कालिदास के काव्यों में अहिंसा और जैनत्व	श्री प्रेमचन्द्र रांवका	२७	७	१९७६	२३-२६
कृतिकर्म के बारह प्रकार	मुनिश्री नथमल जी	२१	१	१९६९	२६-३३
कीर्ति कें शत्रु- क्रोध और कुशील	आचार्य आनन्द ऋषि जी	३२	४	१९८१	१-९
क्षमा का आदर्श	पं० रत्न श्री ज्ञानमुनि जी	१०	११	१९५९	२९-३१
क्षमापना का आदर्श	पं० श्री विजयमुनि शास्त्री	८	११	१९५७	१५-१६
क्षमा का पर्व	मुनिश्री समदर्शी जी	१०	११	१९५९	३८-३९
क्षमापना दिन	श्री लक्ष्मीनारायण भारतीय	१३	११	१९६२	१-४
क्षमा पहला धर्म है	डॉ० कोमलचन्द जैन	१०	११	१९५९	३२-३४
क्षमा से विश्व बन्धुत्व	श्री सौभाग्यमल जैन	३७	११	१९८५	२-४
गांधीजी और अहिंसा	श्री रामप्रवेश शास्त्री	१२	१२	१९६१	९-१३
गांधी जी की दृष्टि में अहिंसा का अर्थ	अनु० नरेन्द्र गुप्त	४	१	१९५२	११-१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
गुजरात का जैनधर्म	स्व० मुनिश्री जिनविजय जी	३९	३	१९८७	१-३९
गुणव्रत	डॉ० मोहनलाल मेहता	१७	९	१९६६	२२-२७
ग्यारह प्रतिमा (व्रत) और एकादशी	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२९	१२	१९७८	१८-२३
चरित्र के मापदण्ड	श्री इन्द्र	१	६	१९५०	२१-२२
चातुर्मास	पं० दलसुख मालवणिया	१	१०	१९५०	२८-३०
चातुर्मास: स्वरूप और परम्पराएँ	पं० कलानाथ शास्त्री	४६	७-९	१९९५	७०-७३
जैन साहित्य और शिल्प में रामकथा	श्री मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी	२८	४	१९७७	१९-२१
जैन त्यागी वर्ग के सामने एक विकट समस्या	पं० बेचरदास जी दोशी	१०	११	१९५९	४०-४५
जैनधर्म की देन	श्री पी० एस० कुमारस्वामी राजा	१	४	१९५०	३३-३५
जैन दर्शन में अहिंसा	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२२	८	१९७१	१३-२२
जैन दर्शन में आवश्यक साधना	कु० कमला जोशी	४०	४	१९८९	२७-३४
जैन दर्शन में योग का प्रत्यय	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२४	७	१९७३	८-१२
जैनधर्म	श्री सिद्धराज ढड्ढा	९	११-१२	१९५८	६०-६३
जैनधर्म	श्री दिनकर	११	६	१९६०	१७-२३
जैनधर्म का दृष्टिकोण	मुनिश्री नन्दीषेण विजय	१४	१०	१९६३	१९-२१
जैनधर्म : निर्जरा एवं तप	डॉ० मुकुलराज मेहता	३८	११	१९८७	४-८
जैनधर्म में उपासना	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२३	२	१९७१	१२-१७

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म में शक्तिपूजा का स्वरूप	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२२	१२	१९७१	९-१२
जैनेतर दर्शनों में अहिंसा	,,	२२	१०	१९७१	२०-२८
जैनधर्म में भक्ति का स्थान	कु० प्रमिला पाण्डेय	२३	५	१९७२	२८-३३
जैन दर्शन में मोक्ष का स्वरूप	डॉ० प्रमोद कुमार	२६	४	१९७५	१४-२०
जैनधर्म एक सम्प्रदायातीत धर्म	डॉ० निजामुद्दीन	३३	८	१९८२	३-७
जैनधर्म में समाधिमरण की अवधारणा	श्री रज्जन कुमार	३९	८	१९८८	३-८
जैनधर्म विषयक भ्रान्तियां	पं० बेचरदासजी दोशी	८	१२	१९५९	१९-२७
जैन साधना पद्धति में ध्यान योग	साध्वी प्रियदर्शना जी	३७	१०	१९८६	१८-२७
जैन साधना में चैतन्य केन्द्रों का निरूपण	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३८	४	१९८७	२-५
जैन स्तोत्रों में नवधा भक्ति	श्री धर्मचन्द्र जैन	३४	१०	१९८३	२५-२९
जैन आचार शास्त्र की गतिशीलता का समाज-शास्त्रीय अध्ययन	श्री धन्यकुमार राजेश	२१	१०	१९७०	३-१२
जैन परम्परा में ध्यान योग	,,	२४	६	१९७३	९-१६
जैन और वैदिक साहित्य में पराविद्या	,,	२१	५	१९७०	५-१५
जैनधर्म आस्तिक या नास्तिक (क्रमशः)	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२६	३	१९७५	१९-२५
,,	,,	२६	४	१९७५	२१-२५
जैनधर्म में भावना	डॉ० अजित शुकदेव	२४	१०	१९७३	१२-१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन सिद्धान्त में योग और आस्रव	आचार्य अनन्तप्रसाद जैन	२५	३	१९७४	११-१९
जिनधर्म का तमाशा	श्री अगरचंद नाहटा	५	७	१९५४	९-११
जैनधर्म और भक्ति	श्री गुलाबचन्द जैन	३०	७	१९७९	२४-३१
जैनधर्म दर्शन में आराधना का महत्त्व	,,	३५	३	१९८४	११-१४
जैनधर्म एवं बौद्धधर्म-परस्पर पूरक	डॉ० कोमलचन्द्र जैन	२७	६	१९७६	८-११
जैनधर्म : एक अवलोकन	डॉ० के० एच० त्रिवेदी	२३	८	१९७२	२४-२८
जैनधर्म और प्रयाग	डॉ० कृष्णलाल त्रिपाठी	४७	७-९	१९९६	१५-२२
जिनमार्ग	श्री कस्तूरमल बांठिया	२१	११	१९७०	३-१५
जैन दर्शन में मोक्षोपाय	डॉ० रामजी सिंह	२४	१०	१९७३	३२-३६
जैनधर्म में मोक्ष का स्वरूप	श्री विनोदकुमार तिवारी	३३	९	१९८२	७-१०
जैनधर्म का वैशिष्ट्य	प्रो० विमलदास कोंदिया	५	९	१९५४	३-१०
जीवन की अंतिम साधना	श्री सत्यदेव विद्यालंकार	७	१	१९५५	३१-३३
जैन साधना के मनोवैज्ञानिक आधार	डॉ० सागरमल जैन	३०	११	१९७९	८-१४
जैनधर्म में अचेलकत्व और सचेलकत्व का प्रश्न	,,	४८	४-६	१९९७	७७-११२
जैनधर्म में आध्यात्मिक विकास	,,	४८	४-६	१९९७	१५७-१६०
जैनधर्म में तीर्थ की अवधारणा	,,	४१	४-६	१९९०	१-२८
जैनधर्म में भक्ति का स्थान	,,	३१	५	१९८०	१४-१७

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म में भक्ति की अवधारणा	डॉ० सागरमल जैन	४५	१-३	१९९४	१८-३६
जैनधर्म में स्वाध्याय का अर्थ एवं स्थान	,,	४५	१-३	१९९४	३७-४३
जैन साधना में ध्यान	,,	४५	१-३	१९९४	४४-७९
जैन साधु की भिक्षा विधि	श्री सतीश कुमार	९	११-१२	१९५८	६४-६५
जैन दर्शन में पुरुषार्थ चतुष्टय	प्रो० सुरेन्द्र वर्मा	४७	१-३	१९९६	२१-४६
जैन साधना	पं० सुखलाल जी संघवी	१	८	१९५०	९-११
जैन दर्शन में मोक्ष का स्वरूप : भारतीय दर्शनों के परिपेक्ष्य में	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	३५	१	१९८३	१८-२४
जैन आचार पद्धति में अहिंसा	डॉ० राजदेव दुबे	३५	२	१९८३	१३-२०
चारित्र निर्माण में आचार पद्धति का योगदान	,,	३४	७	१९८३	२६-३२
जैन साधना पद्धति में सम्यग्दर्शन	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२६	११	१९७५	९-१२
,,	,,	२६	१२	१९७५	३-६
जैनधर्म में अहिंसा	श्री रामदेव यादव	३३	२	१९८१	१६-२२
जैनागमों में वर्णित नागपूजा	श्री रामहंस चतुर्वेदी	३७	१०	१९८६	१-७
जैनधर्म की आचार संहिता	श्री रिखबचंद लहरी	१६	२	१९६४	२६-२८
जैनधर्म में तांत्रिक साधना का प्रवेश	डॉ० रतिलाल म० शाह	२४	१२	१९७३	२५-३०
जैनधर्म में तप का स्वरूप और महत्त्व	श्री रामजी सिंह	२५	११	१९७४	२२-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म में नीतिधर्म और साधना	श्री रामजी सिंह	२५	५	१९७४	२५-३०
जैनधर्म में भक्ति का स्वरूप	मुनि ललितप्रभ सागर	३४	९	१९८३	५-७
जैनधर्म भगवान् महावीर की कसौटी पर	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१४	६-७	१९६३	६-८
जैन दृष्टि में चारित्र	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	३४	४	१९८३	१७-२१
जैनधर्म : एक निर्वचन	,,	७	२	१९५५	३-६
जैनधर्म और बिहार	,,	२०	९	१९६९	५-१९
जैन आचार में इन्द्रियदमन की मनोवैज्ञानिकता	श्री रतनचन्द जैन	३२	८	१९८१	१-१६
जैनधर्म में अरिहन्त और तीर्थंकर की अवधारणा	श्री रमेशचन्द्र गुप्त	३४	४	१९८३	५-९
जैन दृष्टि से चारित्र विकास-क्रमशः	डॉ० मोहनलाल मेहता	१५	११	१९६४	१७-२३
,,	,,	१५	१२	१९६४	१३-१८
जैन श्रावकाचार - क्रमशः	,,	३०	६	१९७९	१६-२२
,,	,,	३०	७	१९७९	१६-२३
,,	,,	३०	८	१९७९	२१-३२
जैनों में साध्वी प्रतिमा की प्रतिष्ठा-पूजा व वन्दन	श्री महेन्द्रकुमार जैन 'मस्त'	४८	७-९	१९९७	८२-८५
ज्ञानीजनों का मरण: भक्त प्रत्याख्यान मरण	श्री रज्जन कुमार	३८	७	१९८७	१४-१९
तनाव:कारण एवं निवारण	डॉ० सुधा जैन	४८	१-३	१९९७	१-२०
तप का उपादेय : कर्मों की निर्जरा	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'	३५	११	१९८४	१९-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
तप के प्रतीक महावीर	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	३	६	१९५२	८
तप क्या है ?	पं० बेचरदास दोशी	१९	१-२	१९६७	१४-१९
तपश्चर्या-उपवास	श्री चिमनलाल चकुभाई शाह	३५	९	१९८४	२०-२२
तपोधन महावीर	श्री वृजनन्दन मिश्र	१२	६-७	१९६१	५६-५७
तृष्णा और उसका अंत	श्री ज्ञानमुनि जी महाराज	७	३	१९५६	१९-२०
तीर्थंकर	डॉ० बी० सी० जैन	३२	७	१९८१	८-१०
त्रिरत्न : मोक्ष के सोपान	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२४	३	१९७३	२२-२६
दयामूर्ति : धर्मरुचि अनगार	उपाध्याय श्री अमरमुनि	३२	७	१९८१	५-७
दशधर्म योग साधना है	श्री अर्हद्दास दिगे	१९	१०	१९६८	३१-३६
दशलक्षण/दशलक्षण धर्म के	डॉ० सागरमल जैन	३४	११	१९८३	१३-२८
दान, शील, तप, भाव के रचयिता और दानकुलक का पाठ	श्री अगरचंद नाहटा	२४	१०	१९७३	१८-२४
दिगम्बर परम्परा में श्रावक के गुण और भेद	श्री कस्तूरमल बांठिया	१७	१-२	१९६५	५६-६६
दिवाभोजन ही क्यों ?	डॉ० महेशदान सिंह चौहान	६	१०	१९५५	३३-३४
धर्म और अधर्म	डॉ० मोहनलाल मेहता	२०	५	१९६९	५-७
धर्म और धार्मिक	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया	३४	१०	१९८३	२०-२१
धर्म और पुरुषार्थ	पं० सुखलाल जी	११	१०	१९६०	१४-१७
धर्म और सहिष्णुता	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	१५	५-६	१९६४	३३-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
धर्म-कल्याण का मार्ग	पं० मुनिश्री रामकृष्ण जी महाराज	९	१	१९५७	१६-१९
धर्म का बीज और उसका विकास	पं० सुखलालजी संघवी	२	१२	१९५१	९-१४
धर्म का तत्त्व	टॉलस्टॉय	३	१२	१९५२	२२-२६
धर्म का बहिष्कार या परिष्कार	श्री अजातशत्रु	११	४	१९६०	१९-२२
धर्म का मूल आधार-अहिंसा	श्री शिवनारायण सक्सेना	१६	१२	१९६५	२०-२३
धर्म का मर्म	श्री सुबोधकुमार जैन	४	९	१९५३	२४-२९
धर्म का स्वरूप	भंडारी सरदारचंद जैन	३६	२	१९८४	५-७
धर्म क्या है ?	डॉ० सागरमल जैन	३१	४	१९८०	१-८
,,	,,	३१	५	१९८०	२-५
,,	,,	३१	७	१९८०	२-७
,,	,,	३४	४	१९८३	२-४
धर्म करते पाप तो होता ही है!	श्री प्रवाही	३	१२	१९५२	३५-३७
धर्म की उत्पत्ति और उसका अर्थ	श्री मोहनलाल मेहता	३	४	१९५२	९-१४
धर्म को छानने की आवश्यकता	श्री रतिलाल म० शाह	२८	१०	१९७७	२९-३५
धर्म क्षेत्रे-हिम क्षेत्रे	श्री कानजी भाई पटेल	१४	३	१९६३	१९-२८
धर्म निरपेक्ष या ईश्वर निरपेक्ष	श्री प्रभाकर गुप्त	८	१०	१९५७	४-८
धर्म परिवर्तन-श्रमण धर्मों की भूमिका और निदान	श्री महेन्द्रकुमार फुसकेले	३३	७	१९८२	५-११
धर्म : मेरी दृष्टि में	मुनिश्री नेमिचंद	१८	४	१९६७	२४-२८

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
धार्मिक एकता	,,	१५	५-६	१९६४	६५-६८
धार्मिक जीवन की प्रेरणा	उपाध्याय अमरमुनि	११	१०	१९५९	९-१२
ध्यान योग की जैन परम्परा	श्री सूरजचन्द्र 'सत्यप्रेमी'	१०	९	१९५८	१७-१८
नैतिक आचरण विधि : सोरेन कीर्केगार्ड और जैन दर्शन	पाण्डेय रामदास 'गम्भीर'	३३	५	१९८१	३-१२
ध्यान साधना का दिशाबोध	श्री सौभाग्य मुनि जी 'कुमुद'	३५	७	१९८४	११-१४
नई पीढ़ी और धर्म	श्री सागरमल जैन 'साथी'	१३	१	१९६१	३१-३४
निर्वाण : उपनिषद् से जैन दर्शन तक	डॉ० शान्ति जैन	२७	११	१९७६	२५-२९
नि:शस्त्रीकरण	मुनि आईदान	९	६-७	१९५८	१७-२२
नैतिकता का आधार	श्री जगदीश सहाय	३३	१	१९८१	१-१८
पंचयाम धर्म-एक पर्यवेक्षण	श्री व्रजनन्दन	१५	९	१९६४	२०-२३
पंचपरमेष्ठि मंत्र का कर्तृत्व और दशवैकालिक	साध्वी (डॉ०) सुरेखाश्री	४२	७-१२	१९९१	१-१०
पर्युषण	श्री मधुकर मुनि	३१	११	१९८०	२-६
पर्युषण: आत्म चिन्तन से सामाजिक चिन्तन की ओर	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	१२	११	१९६१	१५-१७
पर्युषण : आत्म संक्रान्ति का अद्वितीय अध्याय	डॉ० नरेन्द्र भानावत	३२	११	१९८१	२-५
पर्युषण : आत्मा की उपासना का पर्व	मुनिश्री रामकृष्ण	३२	११	१९८१	२६-३०
पर्युषण और नई प्रतिमाएँ	श्री लक्ष्मीनारायण	१२	११	१९६१	२४-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पर्युषण और पश्चाताप	मुनिश्री कन्हैयालाल जी 'कमल'	१२	११	१९६१	२८
पर्युषण और बौद्ध धर्म	श्री उदयचन्द जैन	१२	११	१९६१	२७-३०
पर्युषण और सामाजिक शुद्धि	मुनिश्री नेमिचन्द जी	१२	११	१९६१	१९-२२
पर्युषण और हमारा कर्तव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	८	११	१९५७	९-१४
,,	,,	३६	११	१९८५	६-१२
पर्युषण एक चिन्तन	श्री लक्ष्मीनारायण भारतीय	१०	११	१९५९	९-१०
पर्युषण की सही आराधना	श्री हीराचन्द्र सूरि विद्यालंकार	१०	११	१९५९	६-८
पर्युषण : परिचय और व्याख्या	सुश्री शरबती जैन	१२	११	१९६१	९-११
पर्युषण : दस लक्षण	श्री गुलाबचंद जैन	१२	१२	१९६१	१४-१५
पर्युषण पर्व	श्री विमलदास जैन	१	११	१९५०	३१-४०
पर्युषण का पावन संदेश	श्री अगरचंद नाहटा	१०	११	१९५९	२५-२६
पर्युषण पर्व का मतलब	भाई बंशीधर	१२	११	१९६१	१३-१४
,,	,,	१०	११	१९८९	४-५
पर्युषण पर्व : क्या, कब और कैसे	डॉ० सागरमल जैन	३३	१०	१९८२	१-१९
पर्युषण : संभावनाओं की खोज	डॉ० नेमिचंद जैन	३०	११	१९७९	३-७
पर्वराज-दस लक्षणी पर्युषण पर्व	श्री गणेशप्रसाद जैन	३१	११	१९८०	१९-२५
परिनिर्वाण	श्री जय भिक्खु	३	१२	१९५२	१७-२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पर्व की आराधना	उपाध्याय अमरमुनि	१०	१२	१९५९	१७-१९
पर्वराज पर्युषण	पं० अमृतलाल शास्त्री	१०	११	१९५९	१५-१६
पर्वाराधन की एक रूपता का प्रश्न	श्री सौभाग्य मुनि 'कुमुद'	३६	१२	१९८५	१४-१५
पाश्चाताप	श्री भंवरलाल नाहटा	३९	८	१९८८	२३-२४
,,	,,	३९	११	१९८८	२२-२४
पार्श्वकालीन जैनधर्म	डॉ० विनोदकुमार तिवारी	४०	५	१९८९	३-९
पुण्य और पाप	डॉ० मोहनलाल मेहता	२२	१०	१९७१	३-७
पुराण प्रतिपादित शीलव्रत	श्री सनतकुमार जैन	३०	५	१९७९	१५-१७
प्रतिक्रमण	स्वामी सत्यभक्त जी	६	११	१९५५	३-१२
प्रत्यालोचना-महावीर का अन्तस्तल	श्री कस्तूरमल बांठिया	६	५	१९५५	३३-३६
प्राकृत जैनागम परम्परा में गृहस्थाचार तथा उसकी पारिभाषिक शब्दावली	डॉ० कमलेश जैन	४३	४-६	१९९२	४७-६८
प्राणातिपात विरमण: अहिंसा की उपादेयता	डॉ० ब्रजनारायण शर्मा	३८	५	१९८७	६-१५
प्राचीन मथुरा में जैन धर्म का वैभव	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	४	१०	१९५३	७-११
प्राचीन भारतीय श्रमण एवं श्रमणचर्या	डॉ० झिनकू यादव	२४	१२	१९७३	६-१२
प्रेम की सरिता प्रवाहित करने वाला पर्व	मुनि मणिप्रभ सागर	३५	११	१९८४	४-६
बारहभावना : एक अनुशीलन	डॉ० कमलेशकुमार जैन	४५	७-९	१९९४	५६-६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
बाल संन्यास दीक्षा प्रतिबन्धक बिल उचित है !	श्री प्रभुदास बालूभाई पटावरी	७	४	१९५६	१८-२३
बौद्ध एवं जैन अहिंसा का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ० भागचन्द जैन	३२	९	१९८१	१-१६
बौद्ध ग्रन्थों में जैन धर्म	डॉ० गुलाबचंद जैन	८	७-८	१९५७	१८-२८
बौद्धधर्म	पं० दलसुख मालवणिया	१	७	१९५०	१९-२२
बौद्ध धर्म का छठां संगायन	भिक्षु धर्मरक्षित	५	९	१९५४	१२-१८
ब्रह्मचर्य की गुप्ति	उपाध्याय श्री हस्तिमल जी	१७	१-२	१९६५	७-१३
भगवान् महावीर और अहिंसा	सुश्री शरबती जैन	७	६-७	१९५६	४०-४५
भगवान् महावीर और उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म	श्री ऋषभचन्द 'फौजदार'	३२	७	१९८१	२-४
भगवान् महावीर और धर्मक्रांति	मुनिश्री नेमिचन्द जी	१४	८	१९६३	२१-२५
भगवान् महावीर का अचेलधर्म	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	२८	८	१९७७	३-१०
भगवान् महावीर का मार्ग	पं० दलसुख मालवणिया	६	६-७	१९५५	२०-२२
भगवान् महावीर की अहिंसा	श्री नरेन्द्र जैन	१५	११	१९६४	२४-२६
भगवान् महावीर की जीवन साधना	प्रो० देवेन्द्रकुमार जैन	६	६-७	१९५५	६२-६४
भगवान् महावीर की धर्म क्रांति	प्रो० पृथ्वीराज जैन	८	६	१९५७	२६-३०
भगवान् महावीर की साधना	उपाध्याय अमरमुनि	३५	१२	१९८४	१-१०
भगवान् महावीर की साधना एवं देशना	श्री भूरचंद जैन	२९	७	१९७८	२१-२७
भक्तामरस्तोत्र के पादपूर्तिरूप स्तवकाव्य	श्री अगरचंद नाहटा	२१	११	१९७०	२५-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भक्तिमार्ग का सिंहावलोकन	पं० दलसुख मालवणिया	२	९	१९५१	९-१५
भारतीय दर्शनों में अहिंसा	श्री रत्नलाल जैन	३६	११	१९८५	२३-३१
भारतीय दर्शन में मोक्ष की अवधारणा	डॉ० राजीव प्रचण्डिया	४५	१०-१२	१९९४	१-९
भारतीय चिन्तन में मोक्ष और मोक्षमार्ग -क्रमशः	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२७	९	१९७६	३-१०
,,	,,	२७	१०	१९७६	३-७
,,	,,	२७	११	१९७६	३-८
मरण के विविध प्रकार	श्री रज्जन कुमार	३८	१२	१९८७	२५-३१
महाकवि पुष्पदन्त की भक्ति चेतना	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२७	३	१९७६	९-१४
महापर्व पर्युषण का पावन सन्देश : अपने आप को परखें	आचार्य आनन्दऋषि जी	३६	११	१९८५	१४-१५
महाभारत का आचार दर्शन	श्री बशिष्ठनारायण सिन्हा	१४	१	१९६२	२७-३६
महापर्व संवत्सरी	ज्ञान मुनि महाराज	६	११	१९५५	२४-२८
महाभिनिष्क्रमण	रसिक त्रिवेदी	३	५	१९५२	१९-२२
महावीर का तपः कर्म	डॉ० मोहनलाल मेहता	१५	५-६	१९६४	३७-४१
महावीर का धर्म : सर्वोदय तीर्थ	आचार्य राजकुमार जैन	२५	५	१९७४	१६-२०
महावीर का संयम और उनका साधनामय जीवन	कु० सविता जैन	३२	६	१९८१	२७-३०
,,	,,	३३	७	१९८२	१९-२३
महावीर की साधना और सिद्धान्त	कु० विजया जैन	१३	२	१९६१	२४-२६
महावीर स्तुति	श्री अगरचंद नाहटा	१०	१	१९५८	१३-१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महावीरोपदिष्ट परिग्रह परिमाण व्रत	श्री जमनालाल जैन	२६	१-२	१९७४	५७-६२
मानतुंगसूरिरचित पंचपरमेष्ठिस्तोत्र	श्री अगरचन्द नाहटा	२६	१२	१९७५	१४-१७
मानव साध्य है या साधन	प्रो० नेमिचरण मित्तल	११	९	१९६०	९-११
मुनियों का आदर्श त्याग	मुनिश्री आईदान जी महाराज	३	७	१९५२	७-८
मूलाचार में मुनि की आहार-चर्या	डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी'	२६	९	१९७५	३-१३
मूलाधार की समाधिमरण	श्री उदयचंद जैन	२३	२	१९७१	२१-३०
मैं मुक्ति चाहता हूँ	श्री भँवरमल सिंघी	७	२	१९५५	१३
मोक्ष	श्री गोपीचंद धारीवाल	१७	६	१९६६	१४-१९
मृत्यु एवं सल्लेखना	डॉ० हुकुमचन्द संगवे	२५	३	१९७४	३२-३९
यशस्तिलक चम्पू और जैन धर्म	डॉ० (कु०) सत्यभामा	३५	३	१९८४	१५-२८
युवाचित्त धर्म से विमुख क्यों	दर्शनाचार्य मुनि योगेश	३८	७	१९८७	२०-२२
योग और भोग	विजयमुनि शास्त्री	९	४	१९५८	७-८
योग का जनतन्त्रीकरण	प्रो० श्रीरंजन सूरिदेव	२९	४	१९७८	३-७
लेश्या-एक विश्लेषण	कुमारी सुशीला जैन	२३	५	१९७२	२०-२४
वर्षा ऋतु का आहार-विहार	वैद्यराज पं० सुन्दरलाल जैन	५	१०	१९५४	१६-१९
,,	,,	७	१०	१९५६	२३-२५
वसन्त ऋतु का आहार-विहार	,,	६	४	१९५५	१९-२०
व्रत का मूल्य	डॉ० नेमिचन्द शास्त्री	१३	१२	१९६२	२९-३४
वीतराग की उपासना	श्री ज्ञानमुनि जी	१३	११	१९६२	२६-३०

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वीर हनुमान: स्वयंभू कवि की दृष्टि में	श्रीरंजन सूरिदेव	२५	१२	१९७४	९-१५
वीरों का शृंगार : अहिंसा	श्रीनारायण संक्सेना	१६	६	१९६५	३-८
वैराग्य क्या है ?	स्व० छोटालाल हरजीवन सुशील	१५	१०	१९६४	२२-२९
वैदिक धर्म तथा जैन धर्म	पं० के० भुजबली शास्त्री	२९	१०	१९७८	९-१३
शांति का अमोघ अस्त्र-क्षमा	मुनि ललितप्रभ सागर	३४	११	१९८३	२९-३१
शीतऋतु का आहार-विहार	वैद्यराज पं० सुंदरलाल जैन	६	२	१९५४	१९-२०
शीलव्रत: एक विवेचन	श्री सनतकुमार जैन	३०	३	१९७९	१०-१८
शीलव्रत ग्रहण	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	२	८	१९५१	१२-१३
शुद्ध-अशुद्ध भावधारा	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३८	३	१९८७	२-६
शुद्धि, चिकित्सा और सिद्धि का महान् पर्व-संवत्सरी	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३५	११	१९८४	२-३
शुद्धि प्रयोग का झांकी	मुनिश्री नेमिचन्द्र जी	१५	४	१९६४	९-१३
शुद्ध व्यवहार का आन्दोलन	श्री किशोरीलाल मशरूवाला	२	११	१९५१	१४-१८
श्वेताम्बर पण्डित परम्परा	श्री अगरचन्द नाहटा	३८	७	१९८७	१०-१३
श्वेताम्बर-परम्परा में श्रावक के गुण और भेद	श्री कस्तूरमल बांठिया	१७	४	१९६६	३-१४
श्रद्धा का क्षेत्र	पं० दलसुख मालवणिया	३	५	१९५२	९-१२
श्रमण-आचार : एक परिचय	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२७	६	१९७६	३-७
श्रमण : एक व्याख्या	श्री महेन्द्रकुमार जैन	१३	२	१९६१	११-१३
श्रमण जीवन का बदलता हुआ इतिहास	मुनिश्री आईदान जी	७	९	१९५६	२९-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्रमण-धर्म	डॉ० मोहनलाल मेहता	२५	७	१९७४	३३-३८
श्रमण-धर्म : एक विश्लेषण	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२७	३	१९७६	१५-१८
श्रमण परम्परा में धर्म और उसका महत्त्व	श्री कानजीभाई पटेल	१५	५-६	१९६४	२३-२७
श्रमण संस्कृति में अहिंसा के प्राचीन संदर्भ-क्रमशः	डॉ० भागचंद जैन 'भास्कर'	२१	७	१९७०	३-९
,,	,,	२१	८	१९७०	१०-१७
श्रमण संस्कृति में मोक्ष की अवधारणा	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२३	६	१९७२	३-९
श्रमणों का युगधर्म	मुनिश्री नेमिचन्द्र जी	१२	३	१९६१	८-९
श्रावक के गुण एवं भेद- क्रमशः	श्री कस्तूरमल बांठिया	१७	६	१९६६	३-११
,,	,,	१७	७	१९६६	३-११
,,	,,	१७	८	१९६६	३-१०
श्रावक में षट्कर्म	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२६	१२	१९७५	७-१३
संथारा आत्महत्या नहीं	श्री दलसुख मालवणिया	१३	१२	१९६२	३५-३९
संन्यास का आधार अन्तर्मुखी प्रवृत्ति	डॉ०मोहनलाल मेहता	२	३	१९५१	२३-२६
संन्यास की मर्यादा	आचार्य विनोबा	११	२	१९५९	१३-१४
संन्यासमार्ग और महावीर	पं० दलसुख मालवणिया	४	५	१९५३	७-११
संयम जीवन का सम्यक् दृष्टिकोण	डॉ० सागरमल जैन	३१	८	१९८०	२-१३
संवत्सरी	श्री समीर मुनि 'सुधाकर'	१२	११	१९६१	३१-३५
संवत्सरी	डॉ० गोकुलचन्द जैन	४०	११	१९८९	३
संवत्सरी की सर्वमान्य तारीख	दिलीप सुराणा	३६	११	१९८५	१६-२२

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
संवत्सरी महापर्व : स्वरूप और अपेक्षाएं	मुनि नगराज जी	३३	११	१९८२	६-९
सकारात्मक अहिंसा की भूमिका	डॉ० सागरमल जैन	४६	१-३	१९९५	६९-८६
सच्ची साधना का प्रभाव	श्री राजाराम जैन	४	५	१९५३	२८-२९
सचेल-अचेल	मुनि दुलहराज	१६	८	१९६५	११-१५
सदाचार का महत्त्व	आचार्य आनन्द ऋषि	३४	५	१९८३	११-१२
सदाचार के शाश्वत मानदण्ड	डॉ० सागरमल जैन	४६	४-६	१९९५	१३४-१४९
सदाचार-मानदण्ड और जैनधर्म	,,	३२	४	१९८१	२२-२७
समाधिमरण	श्री गणेशप्रसाद जैन	३४	९	१९८३	९-१३
समाधिमरण का स्वरूप	श्री रज्जन कुमार	३९	५	१९८८	१२-१७
समाधिमरण की अवधारणा: उत्तराध्ययन-सूत्र के परिप्रेक्ष्य में	,,	३८	३	१९८७	१३-१८
समाधिमरण की अवधारणा की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समीक्षा	डॉ० सागरमल जैन	४२	४-६	१९९१	९९-१०१
साधना की अमर ज्योति	मुनि समदर्शी	१४	५	१९६३	४१-४७
साधना में श्रद्धा का स्थान	आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी	३१	११	१९८०	१२-१८
साधु मर्यादा क्या ? कितनी ?	श्री सौभाग्यमल जैन	३३	७	१९८२	१५-१८
साधु समाज और निवृत्ति	पं० दलसुख मालवणिया	३	२	१९५१	९-१२
साधुओं का शिथिलाचार	श्री सौभाग्यमल जैन	१५	३	१९६४	९-१३
सामायिक का मूल्य	उपाध्याय श्री अमरमुनि	३१	५	१९८०	६-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सामायिक की सार्थकता	महासती उज्जवल कुमारी	१	१२	१९५०	२६
सामायिक : सौ सयाने एकमत	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२९	५	१९७८	१०-१७
सिद्धर्षिगणिकृत उपमितिभवप्रपंचाकथा से संकलित "धर्म की महिमा"	श्री गोपीचंद धारीवाल	१८	११	१९६७	१८-२३
सिद्धि का पथ : आर्जवधर्म	श्रीमती अलका प्रचण्डिया 'दीति'	३५	११	१९८४	१७-१८
सिद्धि योग का महत्त्व	पं० के० भुजबली शास्त्री	२९	६	१९७८	२८-२९
सिरोही जिले में जैनधर्म	डॉ० सोहनलाल पाटनी	३३	१०	१९८२	३२-३७
सेवा : स्वरूप और दर्शन	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२८	१	१९७६	३-४
सोमदेवकृत उपासकाध्ययन में शीलव्रत(क्रमशः)	श्री सनतकुमार जैन	३०	११	१९७९	३४-३८
,,	,,	३०	१२	१९७९	२३-२८
स्वाध्याय : एक आत्म चिन्तन	श्री राजकुमार छाजेड	३२	६	१९८१	३५-३६
हजरत मुहम्मद और इस्लाम	पृथ्वीराज जैन	१	८	१९५०	२५-३१
हमारी भक्ति निष्ठा कैसी हो ?	श्री अगरचंद नाहटा	६	१०	१९५५	८-९
हरिभद्र की श्रावकप्रज्ञप्ति में वर्णित अहिंसा: - आधुनिक संदर्भ में	डॉ० अरुणप्रताप सिंह	४१	१०-१२	१९९०	५७-७०
हिंसक और अहिंसक युद्ध	अशोक कुमार सिंह	३८	११	१९८७	१-३
हिंसा का बोलबाला	श्री ताराचन्द्र मेहता	१४	१	१९६२	६-७
Ahimsa in the Ancient East	Shri Ram Chandra Jain	१६	५	१९६५	२३-३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
३. आगम और साहित्य					
अंग ग्रंथों का बाह्य रूप	पं० बेचरदास दोशी	१६	२	१९६४	१५-२२
अंगविज्जा	श्री नारायण शास्त्री	२१	८	१९७०	२८-३२
अखिल भारतीय प्राच्यविद्या महासम्मेलन	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	३	१	१९५१	३८-४४
अज्ञात कविकृत शीलसंधि	डॉ० सनत्कुमार रंगाटिया	२०	७	१९६९	२१-२६
अणगार वन्दना बत्तीसी	डॉ० (श्रीमती) मुन्नी जैन	४८	१-३	१९९७	६०-७०
अद्धमागहाए भाषाए भासंति अरिहा	श्री नंदलाल मारु	२४	९	१९७३	१३-१५
अपने को परखिए	मुनिश्री सुरेशचन्द्र जी शास्त्री	६	११	१९५५	३९-४१
अपभ्रंश और देशी तत्त्व	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२५	११	१९७४	३-८
अपभ्रंश कथाकाव्यों का हिन्दी प्रेमाख्यानों के शिल्प पर प्रभाव	श्री प्रेमचंद जैन	१९	१-२	१९६७	४३-५३
अपभ्रंश का काव्य सौन्दर्य	प्रो० सुरेशचन्द्र गुप्त	५	८	१९५४	२३-३०
अपभ्रंश का विकास कार्य तथा जैन साहित्यकारों की देन	श्रीमती मीना भारती	२३	८	१९७२	२९-३४
अपभ्रंश की शोध कहानी	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	१८	१-२	१९६६	३-७
अपभ्रंश के जैनपुराण और पुराणकार	रीता विश्वनोई	४२	७-१२	१९९१	४५-५६

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अपभ्रंश के जैन साहित्य का महत्त्व	डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी	४	११	१९५३	१-३
अपभ्रंश चरितकाव्य तथा कथाकाव्य	डॉ० देवेन्द्र कुमार	२३	३	१९७२	३-१०
अपभ्रंश जैन साहित्य	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२२	४	१९७१	१८-१२
,,	,,	२२	३	१९७१	१२-१७
अपभ्रंश साहित्य : उपलब्धियाँ और प्रभाव	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१२	१	१९६०	२१-२५
अभयकुमार श्रेणिकरास	डॉ० सनतकुमार रंगाटिया	१९	१०	१९६८	२५-३०
,,	,,	१९	११	१९६८	२२-२८
अर्धमागधी आगम साहित्य	डॉ० सागरमल जैन	४६	१-३	१९९५	१-४५
अर्धमागधी भाषा में सम्बोधन का एक विस्मृत शब्द-प्रयोग 'आउसन्ते'	डॉ० के० आर० चन्द्र	४६	७-९	१९९५	६६-६९
अललित जैन साहित्य का अनुवाद-कुछ समस्याएँ	डॉ० नंदलाल जैन	३२	१२	१९८१	२१-२६
अष्टलक्षी: संसार का एक अद्‌भुत ग्रन्थ	महोपाध्याय चन्द्रप्रभ सागर	४०	३	१९८९	२-८
अष्टलक्षी में उल्लिखित अप्राप्य रचनायें	श्री अगरचंद नाहटा	१८	७	१९६७	९-११
असाम्प्रदायिक जैन साहित्य	डॉ० पी० एल० वैद्य	४	७-८	१९५३	१७-२४
चौथी आगमवाचना का सवाल	श्री कस्तूरमल बांठिया	९	११-१२	१९५८	६८-७०
आगम साहित्य में प्रकीर्णकों का स्थान, महत्त्व, रचना-काल एवं रचयिता	डॉ० सागरमल जैन	४८	४-६	१९९७	१४७-१५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आगमिक प्रकरण	डॉ० मोहनलाल मेहता	२९	२	१९७७	३-१३
आगमिक व्याख्याएँ	डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	१२	१९७९	३-१७
आगमों का आनुयोगिक-वर्गीकरण	मुनि श्री कन्हैयालाल 'कमल'	१३	१०	१९६२	९-१२
आगमों के सम्पादन में कुछ विचार योग्य प्रश्न	पं० बेचरदास दोशी	४	७-८	१९५३	२५-२९
आचार्य कुन्दकुन्द और उनका साहित्य	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	१९	११	१९६८	१५-२१
आचार्य भद्रबाहु और हरिभद्र की अज्ञात रचनाएँ	श्री अगरचन्द नाहटा	२५	३	१९७४	२५-३१
आचार्य मानतुंगसूरिविरचित भक्तामरकाव्य	राजमल पवैया	३३	७	१९८२	१-४
आचार्य वादिराजसूरि	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१९	८	१९६८	२६-२९
आचार्य सिद्धसेन दिवाकर की साहित्य साधना	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२०	२	१९६८	५-१४
आचार्य हरिभद्र और उनका साहित्य	डॉ० कमल जैन	४४	४-६	१९९३	१-१२
आचार्य हरिभद्र और धर्मसंग्रहणी - क्रमशः	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	२०	१०	१९६९	२१-२९
,,	,,	२०	११	१९६८	१६-२२
आचार्य हेमचन्द्र और कुमारपालचरित	श्री उदयचंद जैन	२२	११	१९७१	३-१०
आचार्य हेमचन्द्र के पट्टधर आचार्य रामचद्र के अनुपलब्ध नाटकों की खोज अत्यावश्यक	श्री अगरचंद नाहटा	१८	४	१९६७	२१-२५
आचार्य हेमचन्द्र के योगशास्त्र पर एक प्राचीन टीका	श्री जुगलकिशोर मुख्तार	१८	११	१९६७	२-१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आचारांग का परिचय	मुनिश्री कन्हैयालाल जी 'कमल'	१२	५	१९६१	२७-३५
आचारांग के कुछ महत्त्वपूर्ण शब्द	साध्वी श्री कनकप्रभा	१८	१-२	१९६६	६१-६४
आचारांगसूत्र -क्रमशः	पं० दलसुख मालवणिया	८	१२	१९५७	४-७
,,	,,	९	१	१९५७	७-९
,,	,,	९	२	१९५७	१०-२
,,	,,	९	३	१९५८	२३-२५
,,	,,	९	४	१९५८	३-६
,,	,,	९	५	१९५८	३-६
,,	,,	९	६-७	१९५८	३४-३७
,,	,,	९	८	१९५८	९-१५
,,	,,	९	९	१९५८	२६-२९
,,	,,	९	१०	१९५८	२५-२७
आचारांगसूत्र- एक विश्लेषण	डॉ० सागरमल जैन	३९	२	१९८७	१-१९
आर्षप्राकृत का व्याकरण -क्रमशः	पं० बेचरदास दोशी	१७	८	१९६६	१९-२६
,,	,,	१७	९	१९६६	१२-१४
,,	,,	१८	३	१९६७	२९-३१
,,	,,	१८	८	१९६७	३-६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
एक अज्ञात ग्रन्थ की उपलब्धि	श्री अगरचंद नाहटा	१२	१०	१९६१	२९-३०
एक अज्ञात जैनमुनि का संस्कृत दूत काव्य "हंसदूत"	श्री अगरचन्द नाहटा	१२	५	१९६१	१७-२१
एक अप्रकाशित प्राचीन प्राकृत सूत्र का अध्ययन	,,	२२	८	१९७१	२३-२५
एक आश्चर्यमय ग्रन्थ	डॉ० सूर्यदेव शर्मा	६	४	१९५५	२९-३२
उत्तराध्ययन: नामकरण व कर्तृत्व	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२९	३	१९७८	३-११
उत्तराध्ययनसूत्र	श्री मिश्रीलाल जैन	३५	५	१९८४	२-२६
उत्तराध्ययनसूत्र : धार्मिक काव्य	प्रो० कानजी भाई पटेल	१५	७-८	१९६४	४८-५७
उपदेशमाला (धर्मदासगणि) एक समीक्षा	दीनानाथ शर्मा	४२	१-३	१९९१	९७-१००
उपा० भक्तिलाभरचित न्यायसारअवचूर्णि	श्री अगरचंद नाहटा	२१	४	१९७०	१९-२१
ऋग्वेद में अर्हत् और ऋषभवाची					
ऋचायें : एक- अध्ययन	डॉ० सागरमल जैन	४५	४-६	१९९४	१८५-२०२
ऋषिभाषित का अन्तस्तल	श्री मनोहर मुनि	११	३	१९६०	७-८
ऋषिभाषित का परीक्षण	,,	१५	४	१९६४	२६-३१
ऋषिभाषित का सामाजिक दर्शन	साध्वी (डॉ०) प्रमोद कुमारी	४३	१-३	१९९२	६९-७९
कर्मप्राभृत अथवा षट्खण्डागम: एक परिचय	डॉ० मोहनलाल मेहता	१६	१	१९६४	२०-२७
कर्मयोगी कृष्ण के आगामी भव	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२३	९	१९७२	३-९
कतिपय जैनेतर ग्रथों की अज्ञात जैन टीकाएं	श्री अगरचंद नाहटा	३०	२	१९७८	२६-३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कन्नड़ में जैन साहित्य	पं० के० भुजबली शास्त्री	२४	७	१९७३	१३-२०
कवि छल्लकृत अरडकमल्ल का चार भाषाओं में वर्णन	श्री भँवरलाल नाहटा	४३	७-९	१९९२	५३-५८
कवि देपाल की अन्य रचनायें	श्री अगरचंद नाहटा	३४	१	१९८२	२९-३३
कवि रत्नाकर और रत्नाकरशतक	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१९	१०	१९६८	१७-२४
कविवीर और उनका जंबूसामिचरिउ	डॉ० देवेन्द्र कुमार	२०	४	१९६९	८-१७
कल्पसूत्र का हिन्दी पद्यानुवाद	श्री अगरचंद नाहटा	६	१२	१९५५	२-८
कल्याणसागरसूरि को प्रेषित सचित्र विज्ञप्तिलेख	,,	१६	९	१९६५	२९-३०
कषायप्राभृत	डॉ० मोहनलाल मेहता	१६	१०	१९६५	१६-२१
,,	,,	१६	११	१९६५	२२-२६
कषायप्राभृत की व्याख्यायें	,,	१८	५	१९६७	१५-२२
क्या 'सपकमाला' नामक रचनाँए अलंकार शास्त्र सम्बन्धी है?	श्री अगरचन्द नाहटा	२९	३	१९७८	१२-१७
क्या व्याख्याप्रज्ञप्ति का १५वां शतक प्रक्षिप्त है?	,,	२१	९	१९७०	१२-१९
काव्यकल्पलतावृत्ति	,,	९	५	१९५८	१२-१५
कीर्तिवर्द्धनकृत सदयवत्स-सावलिंगाचउपई	श्री अशोककुमार मिश्र	२८	२	१९७६	२२-२६
कुन्दकुन्दाचार्य की साहित्यिक उद्भावनाएँ	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२७	१२	१९७६	३०-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कुंभारियाके जैन अभिलेखों का सांस्कृतिक-अध्ययन	डॉ० हरिहर सिंह	२८	११	१९७७	३०-३६
,,	,,	२८	१२	१९७७	२५-३८
कुरलकाव्य	श्री फूलचंद जैन 'प्रेमी'	२३	१	१९७१	२४-२९
कुवलयमालाकहा का कथा-स्थापत्य-संयोजन	श्री प्रेमसुमन जैन	१८	१०	१९६७	३-८
कुवलयमाला की मुख्य कथा और अवान्तर - कथाएँ (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२६	३	१९७५	३-८
,,	,,	२६	४	१९७५	३-८
,,	,,	२६	६	१९७५	१०-११
,,	,,	२६	७	१९७५	१९-२१
,,	,,	२६	८	१९७५	१९-२२
,,	,,	२६	९	१९७५	२१-२५
''कुवलयमाला'' मध्ययुग के आदिकाल की एक - जैन कथा	श्री कस्तूरमल बांठिया	१८	४	१९६७	२-१७
कुवलयमालाकहा में उल्लिखित कडंग, चन्द्र - और तार द्वीप	श्री प्रेमसुमन जैन	२३	८	१९७२	१३-८
गीतासंज्ञक जैन रचनाएं	श्री अगरचन्द नाहटा	२	९	१९५१	२५-२७
क्षेत्रज्ञ शब्द का स्वीकार्य प्राचीनतम अर्धमागधी रूप	डॉ० के० आर० चन्द्र	४३	१०-१२	१९९२	४१-४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
क्षेत्रज्ञ शब्द के विविध रूपों की कथा और उसका-अर्धमागधी रूपान्तर	,,	४१	१०-१२	१९९०	४९-५६
चतुर्विंशतिस्तव का पाठ भेद और एक अतिरिक्त गाथा	श्री अगरचंद नाहटा	२२	१२	१९७१	१३-१७
चन्द्रवेध्यक आदि-सूत्र अनुपलब्ध नहीं हैं।	,,	५	६	१९५४	१६-१७
चन्द्रवेध्यक (प्रकीर्णक) एक आलोचनात्मक - परिचय	श्री सुरेश सिसोदिया	४३	१-३	१९९२	४५-५३
चन्दन-मलयागिरि	श्री अशोक कुमार मिश्र	२७	५	१९७६	२०-२५
चूर्णियां और चूर्णिकार	डॉ० मोहनलाल मेहता	६	१०	१९५५	१०-१४
छीहल की एक दुर्लभ प्रबन्ध कृति	श्री अशोककुमार मिश्र	२७	९	१९७६	२२-२८
जयप्रभसूरिरचित कुमारसंभवटीका	श्री अगरचंद नाहटा	२१	७	१९७०	३१-३३
जयसिंहसूरिरचित अप्रसिद्ध ऋषभदेव और वीर-चरित्र युगल काव्य	श्री अगरचंद भंवरलाल नाहटा	३०	३	१९७९	१९-२३
जिनचन्द्रसूरिकृत क्षपक शिक्षा का विषय	,,	२२	९	१९७१	३४-३५
जिनराजसूरिकृत नैषधमहाकाव्यवृत्ति	,,	२०	८	१९६९	१५-१८
जिनसेन का पार्श्वाभ्युदय : मेघदूत का माखौल	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	१८	११	१९६७	२८-३२
जीवित साहित्य की वाणी	श्री विजय मुनि	२	९	१९५१	३६-३७
जैकोबी और वासी-चन्दन-कल्प -क्रमशः	मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी 'द्वितीय'	१७	५	१९६६	२७-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	,,	१७	६	१९६६	२३-२८
,,	,,	१७	७	१९६६	१४-२०
,,	,,	१७	८	१९६६	१३-१८
जैन अभिलेखों की भाषाओं का स्वरूप एवं - विविधताएँ	श्रीनारायण दुबे	४२	४-६	१९९१	८९-९२
जैन आगम और विज्ञान	श्री कस्तूरमल बांठिया	१२	११	१९६१	३६-४०
जैन आगमों का मन्थन -क्रमश:	डॉ० इन्द्र	४	१०	१९५३	३५-३७
,,	,,	४	१२	१९५३	२९-३०
जैन आगमों का महत्त्व और कर्त्तव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	१	९	१९५०	९-१४
जैन आगमों की मूल भाषा : अर्धमागधी या शौरसेनी	डॉ० सागरमल जैन	४८	१०-१२	१९९७	१-२८
जैन आगमों में विद्वत् गोष्ठी	श्री सौभाग्यमल जैन	३५	८	१९८४	६-९
जैन आगमों में निर्युक्तियाँ	श्री मोहनलाल मेहता	७	५	१९५६	९-१२
जैन आगमों में हुआ भाषिक स्वरूप परिवर्तन - एक विमर्श	डॉ० सागरमल जैन	४५	४-६	१९९४	२३९-२५३
जैन आलंकारिकों की रसविषयक मन्यताएँ	डॉ० कमलेशकुमार जैन	२९	६	१९७८	१४-२४
जैन कला विषयक साहित्य	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	२९	३	१९७८	१८-२१
जैन कन्नड़ वाङ्मय	श्री के० भुजबली शास्त्री	४	७-८	१९५३	४७-५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन कवि जटमलकृत प्रेमविलासकथा	श्री अशोककुमार मिश्र	२६	११	१९७५	२०-२३
जैन कवि विक्रम और उनका नेमिदूत काव्य	श्री रविशंकर मिश्र	३२	१०	१९८१	९-१४
जैन कृष्ण साहित्य -क्रमश:	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२२	९	१९७१	१०-१६
,,	,,	२२	१०	१९७१	१४-१९
''जैनचम्पूकाव्य''- एक परिचय	डॉ० रामप्रवेश कुमार	४८	१-३	१९९७	७१-७५
जैन धर्म दर्शन का स्रोत-साहित्य	डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	५	१९७८	३-१४
जैन पुराण साहित्य	पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री	४	७-८	१९५३	३५-३८
जैन, बौद्ध और वैदिक साहित्य-एक तुलनात्मक - अध्ययन	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	३२	५	१९८१	१-२८
जैन महापुराण : एक कलापरक अध्ययन	डॉ० कुमुद गिरि	४५	१०-१२	१९९४	३३-३६
जैनरत्नशास्त्र	पं० अम्बालाल प्रेमचंद शाह	२१	४	१९७०	२९-३२
जैन रास की दुर्लभ हस्तलिखित प्रति : विक्रम - लीलावतीचौपाई	डॉ० सुरेन्द्रकुमार आर्य	२६	११	१९७५	१३-१४
जैन रास साहित्य	श्री अगरचंद नाहटा	७	४	१९५६	१५-१६
जैन लोककथा साहित्य : एक अध्ययन	श्री महेन्द्र राजा	४	११	१९५३	१३-२८
जैन विद्या के अध्ययन एवं संशोधन केन्द्रों की -स्थापना	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	३४	७	१९८३	२२-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन विद्वानों के कुछ हिन्दी वैद्यक ग्रन्थ	आचार्य राजकुमार जैन	२७	११	१९७६	१५-२४
जैन व्याकरणशास्त्रों में शोध की संभावनाएँ	श्री रामकृष्ण पुरोहित	३०	४	१९७९	१३-२२
जैन व्याख्या और विचार	डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा	११	१२	१९६०	२१-२४
जैन व्याख्या पद्धति	पं० सुखलाल जी	४	७-८	१९५३	७१-७३
जैन शास्त्रों में वर्णित १८ श्रेणियों का उल्लेख	श्री ज्ञानचन्द	२७	२	१९७५	१८-२१
जैन साहित्य और अनुसंधान की दिशा	श्री गोकुलचंद	११	१	१९५९	३३-३५
जैन साहित्य और सांस्कृतिक संवेदना	श्री गुरुचरणसिंह मोंगिया	२७	९	१९७६	११-२१
जैन साहित्य का इतिहास और इसकी प्रगति	पं० दलसुख मालवणिया	६	२	१९५४	३०-३९
जैन साहित्य का नवीन अनुशीलन	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	४	७-८	१९५३	११-१२
जैन साहित्य का नवीन संस्करण	वाल्टर शूब्रिंग	४	७-८	१९५३	१३-१४
जैन साहित्य का सिंहावलोकन	पं० दलसुख मालवणिया	९	५	१९५८	३०-४०
जैन कथा साहित्य का सार्वजनीन महत्त्व	मुनि जिनविजय जी	५	५	१९५४	२९-३८
जैन साहित्य का विहंगावलोकन	डॉ० इन्द्र	५	२	१९५३	८-१४
जैन साहित्य का बृहद इतिहास, भाग ५ के कतिपय संशोधन	श्री अगरचंद नाहटा	२१	९	१९७०	२०-२३
जैन साहित्य की प्रतिष्ठा	श्री गोकुलचंद्र जैन	११	६	१९६०	३२-३४
जैन साहित्य के विषय में अजैन विद्वानों की दृष्टियाँ	डॉ० इन्द्र	५	१	१९५३	२५-२८

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन साहित्य निर्माण की नवीन योजना	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	३	७-८	१९५२	९-१२
जैन साहित्य के संकेत चिन्ह	डॉ० इन्द्र	५	२	१९५३	३०-३८
जैन साहित्य में कृष्ण-कथा	श्रीमती रीता सिंह	३९	१०	१९८८	२७-३२
जैन साहित्य सेवा	डॉ० इन्द्र	९	१०	१९५८	१३-१५
जैन हरिवंशपुराण-एक सांस्कृतिक अध्ययन	लल्लू पाठक	३३	११	१९८२	१५-२२
जैनागम-पदानुक्रम -क्रमशः	डॉ० मोहनलाल मेहता श्री जमनालाल जैन	२६	३	१९७५	२६-३३
,,	,,	२६	४	१९७५	२६-३०
,,	,,	२६	५	१९७५	२८-३१
,,	,,	२६	६	१९७५	२१-२५
,,	,,	२६	७	१९७५	२२-२६
,,	,,	२६	८	१९७५	३०-३२
,,	,,	२७	१	१९७५	२९-३१
,,	,,	२७	२	१९७५	२४-२७
,,	,,	२७	३	१९७६	२७-३०
,,	,,	२७	४	१९७६	३१-३३
,,	,,	२७	५	१९७६	३१-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	,,	२७	६	१९७६	२९-३१
,,	,,	२७	७	१९७६	२७-३०
,,	,,	२७	८	१९७	२९-३०
,,	,,	२७	९	१९७६	३७-३८
,,	,,	२७	१०	१९७५	२९-३१
,,	,,	२७	११	१९७६	३०-३२
,,	,,	२७	१२	१९७६	३३-३४
जैन साहित्य का नवीन अनुशीलन	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	४	७-८	१९५३	११-१२
जैनाचार्यों द्वारा आयुर्वेद साहित्य में योगदान	आचार्य राजकुमार जैन	३२	५	१९८१	७८-८६
जैनों में सती प्रथा	श्री चम्पालाल सिंघई	२३	३	१९७२	२०-२१
ज्योतिषशास्त्र और सन्मति वर्धमान महावीर	डॉ० भूपसिंह राजपूत	२९	१२	१९७८	३-११
ज्ञानार्णव (ग्रन्थ परिचय)	श्री अगरचंद नाहटा	११	६	१९६०	५९-६२
तरंगलोला और उसके रचयिता से सम्बन्धित - भ्रान्तियों का निवारण	पं० विश्वनाथ पाठक	४६	१०-१२	१९९५	१५-२३
तीर्थंकर प्रतिमाओं का उद्‌भव और विकास	डॉ० हरिहर सिंह	२५	१-२	१९७३	४३-५२
तित्थोगाली (तिर्थोद्‌गालिक) प्रकीर्णक की गाथा - संख्या का निर्धारण	अतुलकुमार प्रसाद सिंह	४७	१०-१२	१९९६	५३-६४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
तेरापंथ सम्प्रदाय के हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहालय	श्री अगरचंद नाहटा	११	५	१९६०	२३-२५
थुल्लवंश की एक अपूर्ण प्रशस्ति	श्री भँवरलाल नाहटा	१८	१-२	१९६६	२१-१५
तेलगूभाषा के अवधानी विद्वानों की परम्परा	श्री अगरचंद नाहटा	११	२	१९५९	२४-२७
दशरूपक एक अपभ्रंश दोहा : कुछ तथ्य	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	३३	७	१९८२	२४-२६
दशरूपक की एक अव्याख्यात्मक गाथा	पं० विंश्वनाथ पाठक	३३	५	१९८२	२०-२१
दशरूपकावलोक में उद्धृत अपभ्रंश उदाहरण	डॉ० हरिवल्लभ भयाणी	३३	१०	१९८२	३८
दशाश्रुतस्कन्ध की बृहद् टीका और टीकाकार मतिकीर्ति	श्री अगरचंद नाहटा	२९	५	१९७८	३-९
दशाश्रुतस्कन्ध के विविध संस्करण एवं टीकाएँ	,,	२९	२	१९७७	२१-२४
दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति : अन्तरावलोकन	डॉ० अशोककुमार सिंह	४८	१०-१२	१९९७	३१-४४
दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति में इंङ्गित दृष्टांत	,,	४८	१-३	१९९७	४७-५९
द्वीपसागरप्रज्ञप्ति	श्री अगरचंद नाहटा	१६	३	१९६५	१८-१९
धम्मपद और उत्तराध्ययन का एक तुलनात्मक अध्ययन	महेन्द्रनाथ सिंह	३७	८-९	१९८६	१-९
ध्वन्यालोक एवं दशरूपक की दो प्राकृत गाथाएं-एक चिन्तन	श्री विश्वनाथ पाठक	३०	७	१९७९	३२-३६
धूमावली-प्रकरणम्	साध्वी अतुलप्रभा	४७	१-३	१९९६	६०-६४
नन्दीसूत्र की एक जैनेतर टीका	श्री अगरचंद नाहटा	१६	७	१९६५	१३-१४
निर्युक्ति साहित्य : एक पुनर्चिन्तन	डॉ० सागरमल जैन	४५	४-६	१९९४	२०३-२३३

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
निर्युक्तियाँ और निर्युक्तिकार	श्री मोहनलाल मेहता	५	११	१९५४	९-१५
निशीथचूर्णि पर एक दृष्टि	श्री विजय मुनि	११	६	१९६०	५४-५८
नेमिचन्द्रजी शास्त्री और 'अरिहा' शब्द	पं० बेचरदास दोशी	२०	३	१९६९	३२-३६
पंचास्तिकाय के टीकाकार और टीकाएं	डॉ० लालचन्द जैन	३०	४	१९७९	३-१२
पंचेन्द्रिय संवाद : एक आध्यात्मिक रूपक काव्य	डॉ० मुन्नी जैन	४८	७-९	१९९७	५१-६७
पंजाबी में जैन साहित्य की आवश्यकता	श्री माईदयाल जैन	१२	५	१९६१	२२-२३
पं० जोधराज कासलीवाल और उनका सुखविलास	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२५	६	१९७४	१४-१७
पं० मुनि विनयचन्द्रकृत ग्रहदीपिका	श्री अगरचंद नाहटा	२१	३	१९७०	१५-१७
पं० रामचंद्र गणिरचित सुमुखनृपतिकाव्य	,,	१९	८	१९६८	३०-३१
पउमचरिउ-परम्परा, संदर्भ और शिल्प	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२३	१२	१९७२	३-७
पउमचरियं : संक्षिप्त कथावस्तु	डॉ० के० ऋषभ चन्द्र	१७	९	१९६६	८-११
,,	,,	१७	१०	१९६६	२२-२७
,,	,,	१७	११	१९६६	२६-३०
,,	,,	१७	१२	१९६६	३-८
पउमसिरीचरिउ के मूल स्रोत	,,	१७	३	१९६६	३-८
,,	,,	१७	४	१९६६	१६-२३
पच्चीसवीं निर्वाण-शताब्दी के आयोजनों में - आगम-वाचना भी हो	श्री नन्दलाल मारु	२५	६	१९७४	३२-३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पद्मचरित : एक महाकाव्य	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२५	७	१९७४	३-६
पद्मचरित की भाषा और शैली	,,	२३	११	१९७२	१०-१८
पद्ममंदिररचित बालावबोध प्रवचनसार का नहीं प्रवचनसारोद्धार का है	श्री अगरचन्द नाहटा	२१	५	१९७०	३०-३१
परमानन्दविलास : एक परिचय	श्री अभयकुमार जैन	२८	११	१९७७	१३-१७
पश्चिम भारत का जैन संस्कृत साहित्य को योगदान	श्री प्रेमसुमन जैन	२४	८	१९७३	३-१६
पाणिनीय व्याकरण का सरलीकरण और आचार्य हेमचन्द्र	श्री श्यामधर शुक्ल	४७	४-६	१९९६	३-१०
पालि क्या बोलचाल की भाषा थी ?	डॉ० कोमलचंद जैन	२०	६	१९६९	१७-२१
पार्श्वाभ्युदय में श्रृंगाररस	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२८	७	१९७७	९-१५
पार्श्वाभ्युदय में प्रकृति-चित्रण	,,	२८	३	१९७७	२५-३०
पिण्डनिर्युक्ति	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	१७	९	१९६६	२८-३१
पुण्डरीक का दृष्टात	श्री श्रीप्रकाश दुबे	१५	५-६	१९६४	१२-१४
पुराणों में ऋषभदेव	डॉ० मनोहरलाल दलाल	२५	९	१९७४	११-१४
पुरुदेवचम्पू का आलोचनात्मक परिशीलन	डॉ० कपूरचन्द जैन	३८	८	१९८७	७-१३
पुष्पदन्त और सूर का कृष्ण लीलाचित्रण	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२२	११	१९७०	३-११
पुष्पदन्त का कृष्ण काव्य	,,	१९	१-२	१९६७	३-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पुष्पदन्त का कृष्ण-काव्य : एक अनुशीलन	कु० प्रेमलता जैन	२७	४	१९७६	३-९
,,	,,	२७	५	१९७६	३-९
पुष्पदन्त की रामकथा	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	१७	१-२	१९६५	१४-१८
पुष्पदन्त की रामकथा की विशेषताएँ	कु० प्रेमलता जैन	२८	१	१९७६	५-१२
पैंतालीस और बत्तीस सूत्रों की मान्यता पर विचार	श्री अगरचन्द नाहटा	१	११	१९५०	२४-२९
४५ आगम और मूलसूत्र की मान्यता पर विचार	,,	३३	६	१९८२	६१-६३
प्रबन्धकोश का ऐतिहासिक वैभव	डॉ० प्रवेश भारद्वाज	४१	४-६	१९९०	८९-१००
प्रसिद्धिप्राप्त श्वेताम्बर जैनों की कुछ कृत्रिम कृतियां	श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	४	१९६८	९-३०
प्राकृत का अध्ययन	डॉ० सुनीतकुमार चाटुर्ज्या	१९	९	१९६८	१०-१२
प्राकृत और उसका विकास स्रोत	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	२२	६	१९७१	३-९
प्राकृत और उसका साहित्य	श्री अगरचन्द नाहटा	१०	३	१९५९	१३-१९
प्राकृत की बृहत्कथा "वसुदेवहिण्डी" में वर्णित कृष्ण	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	४५	७-९	१९९४	२३-३०
प्राकृत के विकास में बिहार की देन-क्रमशः	,,	२१	९	१९७०	४-१४
,,	,,	२१	१०	१९७०	२०-३६
प्राकृत जैन कथा साहित्य-क्रमशः	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२२	५	१९७१	३-१०
,,	,,	२२	६	१९७१	१६-२१
प्राकृत 'पउमचरिय' रामचरित	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२२	२	१९७०	१४-१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्राकृत भद्रबाहुसंहिता का अर्धकाण्ड	श्री अगरचन्द नाहटा	२७	५	१९७६	१०-१४
प्राकृत भाषा के कुछ ध्वनि-परिवर्तनों की ध्वनि - वैज्ञानिक व्याख्या	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२८	५	१९७७	३-७
प्राकृत भाषा और जैन आगम	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	३८	५	१९८७	१६-२२
प्राकृत भाषा के चार कर्मग्रन्थ	श्री अगरचन्द नाहटा	१३	१०	१९६२	२४-२५
प्राकृत व्याकरण और भोजपुरी का 'केर' प्रत्यय-क्रमशः	पं० कपिलदेव गिरि	२२	१०	१९७१	२९-३८
,,	,,	२२	११	१९७१	२४-३८
प्राकृत व्याकरण : वररुचि बनाम हेमचन्द्र - अंधानुकरण या विशिष्ट प्रदान	डॉ० के० आर० चन्द्र	४२	४-६	१९९१	११-१९
प्राकृत साहित्य के इतिहास के प्रकाशन की - आवश्यकता	श्री अगरचन्द नाहटा	४	६	१९५३	२१-२७
प्राकृत साहित्य में श्रीदेवी की लोक-परम्परा	श्री रमेश जैन	२८	६	१९७७	२१-२५
पार्श्वाभ्युदयकाव्य : विचार-वितर्क	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१९	१-२	१९६७	३९-४२
प्रज्ञाचक्षु राजकवि श्रीपाल की एक अज्ञात रचना-शतार्थी	श्री अगरचंद नाहटा	१८	५	१९६७	६-८
प्रद्युम्नचरित में प्रयुक्त छन्द-एक अध्ययन	कु० भारती	४८	७-९	१९९७	६८-८०
प्राचीन जैन कथा साहित्य का उद्भव, विकास - और वसुदेवहिंडी	डॉ० (श्रीमती) कमल जैन	४६	१०-१२	१९९५	५२-६३

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्राचीन जैन राजस्थानी गद्य साहित्य	श्री अगरचंद नाहटा	७	१०	१९५६	११-१८
प्राचीन जैन साहित्य के प्रारम्भिक निष्ठासूत्र	पं० दलसुखभाई मालवणिया	४०	११	१९८९	११-२०
प्राचीन पांडुलिपियों का संपादन : कुछ प्रश्न और हल	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२९	११	१९७८	१९-२३
प्राचीन भारतीय वाङ्मय में पार्श्वचरित	डॉ० जयकुमार जैन	३२	५	१९८०	२९-४५
प्राणप्रिय काव्य का रचनाकाल, श्लोक संख्या - और सम्प्रदाय	श्री अगरचंद नाहटा	३३	७	१९८२	२७-२९
बंगला आदि भाषाओं के सम्बन्धवाची प्रत्यय	पं० कपिलदेव गिरि	२२	१२	१९७१	१८-२९
ब्राह्मी लिपि और ऋषभनाथ	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२७	१	१९७५	२५-२८
बुन्देलखण्डी भाषा में प्राकृत के देशीशब्द	डॉ० कोमलचंद जैन	२१	७	१९७०	२०-२३
बीसवीं शती का जैन इतिहास	श्री अगरचन्द नाहटा	५	३	१९५४	२०-२४
भक्तामर की एक और सचित्रप्रति	,,	२४	७	१९७३	२१-२४
भक्तामरस्त्रोत की सचित्रप्रतियाँ	,,	२२	४	१९७१	१३-१९
भक्तामरस्त्रोत के श्लोकों की संख्या ४४ या ४८	,,	२१	१०	१९७०	२७-३१
भगवान् महावीर की २५वीं निवार्णशती कैसे-मनायें?	श्री नन्दलाल मारु	१९	१-२	१९६७	३२-३६
भगवान् महावीर की मंगल विरासत	पं० सुखलाल संघवी	४०	६	१९८९	१-८
भट्टअकलंककृत लघीयस्त्रय : एक दार्शनिक-अध्ययन	हेमन्तकुमार जैन	४१	७-९	१९९०	८३-९०
भट्टारक सकलकीर्ति और उनकी सद्भाषितावली	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२५	१-२	१९७३	२९-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भद्रबाहु का कालमान	मुनिश्री फूलचन्द जी	६	१	१९५४	६-८
भरतमुनि द्वारा प्राकृत को संस्कृत के साथ प्रदत्त-सम्मान और गौरवपूर्ण स्थान	डॉ० के०आर०चन्द्र	४२	१-३	१९९१	७१-७४
भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथाकाव्य; कुछ - प्रतिस्थापनायें	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२३	२	१९७१	६-११
भारतीय आर्यभाषा और अपभ्रंश	,,	२७	११	१९७६	९-१२
भारतीय आचार्यों की दृष्टि में काव्य के हेतु	डॉ० गंगासागर राय	१४	९	१९६३	२४-२७
भारतीय कथा साहित्य में पद्मचरित का स्थान	श्री रमेशचन्द्र जैन	२४	१०	१९७३	३-११
भारतीय प्रतीक परम्परा में जैन साहित्य का योगदान	डॉ० प्रेमचंद जैन	२१	५	१९७०	३२-३७
भारतीय वाङ्मय में प्राकृत भाषा का महत्त्व	पं० बेचरदास दोशी	१९	१०	१९६८	६-१६
भारतीय साहित्य की रमणीय काव्य रचना : - गउडवहो	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२४	७	१९७३	३-७
भाषा और साहित्य	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२७	१२	१९७६	३-१४
भाष्य और भाष्यकार	श्री मोहनलाल मेहता	६	४	१९५५	४-१२
मंगलकलशकथा	श्री भँवरलाल नाहटा	१९	७	१९६८	२६-३४
मल्लिषेण और उनकी स्याद्वादमंजरी	डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा	२६	६	१९७५	३-६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महाकथा कुवलयमाला के रचनाकार का उद्देश्य - और पात्रों का आयोजन	डॉ० के०आर० चन्द्र	२४	११	१९७३	१०-१३
महाकवि बनारसीदास का रसदर्शन	श्री गणेशप्रसाद जैन	२३	६	१९७२	३१-४१
महाकवि जिनहर्ष और उनकी कविता	श्री मोहन 'रत्नेश'	२९	५	१९७८	२४-२६
महाकवि स्वयंभू के काव्यविचार	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२४	१०	१९७३	२५-२७
महान् साहित्यकार आचार्य हरिभद्रसूरि	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	१७	१-२	१९६५	५३-५५
महाराष्ट्री प्राकृत	पं० बेचरदास दोशी	१९	११	१९६८	५-८
महावीर-सम्बन्धी एक अज्ञात संस्कृत चरित्र	श्री अगरचन्द नाहटा	२६	१-२	१९७४	५२-५६
महावीर-सम्बन्धी साहित्य	कु० मंजुला मेहता	२५	४	१९७४	२७-३२
महावीर से पहले का जैन इतिहास	डॉ० इन्दु	४	७-८	१९५३	३०-३४
महेन्द्रकुमार 'न्यायाचार्य' द्वारा सम्पादित एवं - अनूदित षड्दर्शनसमुच्चय की समीक्षा	डॉ० सागरमल जैन	४८	४-६	१९९७	१४१-१४६
महो० समयसुंदर का एक संग्रहग्रंथ 'गाथासहस्त्री'	श्री अगरचंद नाहटा	२३	११	१९७२	२३-२८
महोपाध्याय समयसुन्दर-रचित कथाकोश	श्री भँवरलाल नाहटा	२८	१	१९७६	२४-२७
माणिक्यनन्दीविरचित परीक्षामुख	डॉ० मोहनलाल मेहता	२८	५	१९७७	२३-२४
मानवमूल्यों की काव्यकथा भविसयत्तकहा	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१९	९	१९६८	५-९
मुनिमेघकुमाररचित किरातमहाकाव्य की अवचूरि	श्री अगरचंद नाहटा	२०	२	१९६८	१५-१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मुनिरामसिंहकृत 'पाहुडदोहा' एक अध्ययन	श्री प्रेमचंद जैन	१८	६	१९६७	२-९
मूक साहित्यसेवी : श्री पन्नालालजी	श्री माईदयाल जैन	४	९	१९५३	७-११
मूलअर्धमागधी के स्वरूप की पुनर्रचना	डॉ० के० आर० चन्द्र	४२	७-१२	१९९१	११-१५
मूलाचार	श्री प्रेमचंद जैन	२१	३	१९७०	९८-२४
मेघदूत की एक अज्ञात बालबोधिका पंजिका	श्री अगरचंद नाहटा	१५	७-८	१९६४	६३-६४
मेघविजय के समस्यापूर्ति काव्य	श्री श्रेयांसकुमार जैन	२९	१	१९७७	१७-२२
मेरुतुंग के जैनमेघदूत का एक समीक्षात्मक अध्ययन	श्री रविशंकर मिश्र	३२	५	१९८०	७०-७७
मेवाड़ में चित्रित कल्पसूत्र की एक	डॉ० कमलेश कुमार जैन				
विशिष्ट प्रति	श्री अगरचन्द नाहटा	२८	८	१९७७	२४-२६
योगनिधान	श्री कुन्दनलाल जैन	४८	१-३	१९९७	२१-३२
रघुवंश की अज्ञात जैन टीका	श्री अगरचंद नाहटा	१५	१	१९६३	३१-३२
रस-विवेचन : अनुयोगद्वार सूत्र में		२७	१२	१९७६	२३-२९
रहस्यवादी जैन अपभ्रंशकाव्य का हिन्दी साहित्य		१६	४	१९६५	२६-३१
पर प्रभाव -क्रमशः	श्री प्रेमचन्द्र जैन	१६	५	१९६५	१२-१७
,,	,,	१६	६	१९६५	१२-१७
,,	,,	१६	७	१९६५	१५-१९
राजस्थानी के विकास में अपभ्रंश का योगदान	श्री रमेशचन्द्र जैन	२०	३	१९६९	२३-३१

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
राजस्थानी जैन साहित्य	श्री अगरचन्द्र नाहटा	६	५	१९५५	१५-२२
,,	,,	६	८	१९५५	४-९
राजस्थानी एवं हिन्दी जैन साहित्य	श्री भँवरलाल नाहटा	३९	६-७	१९८८	२-४
राजस्थानी लोक-कथाओं सम्बन्धी साहित्य - निर्माण में जैनों का योगदान	श्री अगरचन्द्र नाहटा	१०	९	१९५९	२९-३१
रामचन्द्रसूरि और उनका साहित्य	डॉ० कृष्णपाल त्रिपाठी	४५	७-९	१९९४	१०-२२
रायपसेणइ उपांग और उसका रचनाकाल-क्रमशः	श्री कस्तूरमल बांठिया	१५	१०	१९६४	९-१६
,,	,,	१५	११	१९६४	२-८
,,	,,	१५	१२	१९६४	३-१०
,,	,,	१६	१	१९६४	३-११
,,	,,	१६	२	१९६४	३-११
'रायपसेणियउपांग और उसका रचनाकाल की समीक्षा	मुनि कल्याणविजय	१६	४	१९६५	३८
लंदन में कतिपय अप्राप्य जैन ग्रन्थ	श्री अगरचन्द्र नाहटा	२	५	१९५१	२७-२९
लोक साहित्य के आदिसर्जक-जैन विद्वान्	,,	७	२	१९५५	९-१२
लोंकागच्छीय विद्वानों के तीन संस्कृत ग्रन्थ	,,	११	१०	१९६०	२४-२८
वचन-कोष	श्री भागचन्द्र जैन	१२	३	१९६१	३४-३६
वज्जालग्ग की कुछ गाथाओं के अर्थ पर पुनर्विचार (क्रमशः)	पं० विश्वनाथ पाठक	३१	७	१९८०	३-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	,,	३१	२	१९७९	३-८
वसन्तविलासमहाकाव्य का काव्य-सौन्दर्य	डॉ० केशवप्रसाद गुप्त	४४	४-६	१९९३	३६-५८
वसुदेवहिण्डी का समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ० कमल जैन	४७	४-६	१९९६	११-३५
वसुदेवहिण्डी में रामकथा	श्री गणेशप्रसाद जैन	३६	१२	१९८५	७-१३
वसुमतीमहाकाव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	१२	८	१९६१	१७-२०
वाग्भट्टालंकार	पं० अमृतलाल शास्त्री	८	१	१९५६	४-७
,,	,,	२२	२	१९७०	२०-२८
वाचक श्रीवल्लभरचित 'विदग्धमुखमण्डन' की दर्पण टीका की पूरी प्रति अन्वेषणीय है	स्व० अगरचन्द नाहटा	४६	७-९	१९९५	७४-७५
वासुपूज्यचरितम् : एक अध्ययन - क्रमशः	श्री उदयचंद प्रभाकर	२३	५	१९७२	३-१०
,,	,,	२३	६	१९७२	१०-१७
विक्रमलीलावतीचौपाईविषयक विशेष ज्ञातव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	२७	२	१९७५	२२-२३
विद्याविलासरास	श्री सनत्कुमार रंगाटिया	१९	८	१९६८	१२-२५
विदेशों में जैन साहित्य : अध्ययन और अनुसंधान	डॉ० भागचन्द भास्कर	३३	६	१९८२	१६-२८
विनयप्रभकृत जैन व्याकरण ग्रंथ शब्ददीपिका	श्री अगरचंद नाहटा	३०	१०	१९७९	१७-२१
विपाकसूत्र की कथायें	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१०	२	१९५८	१७-२०
विपाकसूत्र के आख्यान : एक विहंगावलोकन	श्री जमनालाल जैन	२९	१	१९७७	९-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
विलासकीर्तिरचित प्रक्रियासारकौमुदी	श्री अगरचंद नाहटा	२९	११	१९७८	२४-२८
विश्वेश्वरकृत शृंगारमंजरीसट्टक का अनुवाद-क्रमशः	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	२३	११	१९७२	३४-३८
,,	,,	२३	१२	१९७२	२०-२३
,,	,,	२४	१	१९७२	२८-३२
,,	,,	२४	२	१९७२	३०-३४
,,	,,	२४	३	१९७३	३३-३५
,,	,,	२४	४	१९७३	३२-३७
,,	,,	२४	५	१९७३	३६-३८
,,	,,	२४	६	१९७३	२२-२६
,,	,,	२४	७	१९७३	२५-३०
,,	,,	२४	८	१९७३	२९-३४
,,	,,	२४	९	१९७३	१६-१९
वीरनन्दी और उनका चन्द्रप्रभचरित	पं० अमृतलाल शास्त्री	१७	११	१९६६	१८-२५
वीरवर्धमानचरित में शान्तरस विमर्श	श्रीमती उर्मिला जैन	३५	१	१९८३	२५-२८
वैराग्यमूलक एक ऐतिहासिक प्रेमकाव्य : तरंगवती	श्री गणेशप्रसाद जैन	३४	६	१९८३	१४-२४
वैराग्यशतक	श्री अगरचन्द नाहटा	१२	२	१९६०	३२-३३
वैशाली और भगवान् महावीर का दिव्य संदेश	श्री महावीरप्रसाद प्रेमी	५	४	१९५४	१४-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
शब्दरत्न-महोदधि नामक संस्कृत गुजराती जैन कोश	श्री अगरचन्द नाहटा	२८	१२	१९७७	२२-२४
शम्बूक आख्यान (जैन तथा जैनेतर) सामग्री का - तुलनात्मक अध्ययन	श्री विमलचन्द्र शुक्ल	३२	५	१९८०	४६-५१
शान्त रस : मान्यता और स्थान	श्री जयकुमार जैन	२९	४	१९७८	८-१२
शान्त रस : जैन काव्यों का प्रमुख रस	डॉ० मंगलप्रकाश मेहता	३६	२	१९८४	१-३
शास्त्र की मर्यादा	पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य	३	३	१९५२	२५-२९
शास्त्र रचना का उद्देश्य	पं० सुखलाल जी	५	१	१९५३	२४
शास्त्र वाचना की आज फिर आवश्यकता है	श्री कस्तूरमल बांठिया	८	५	१९५७	४-७
शास्त्रों की प्रामाणिकता	डॉ० मोहनलाल मेहता	२१	५	१९७०	३८-४०
शिवशर्मसूरिकृत कर्मप्रकृति	,,	१५	९	१९६४	७-१५
श्वेताम्बर साहित्य में रामकथा	डॉ० सागरमल जैन	३२	१२	१९८१	७-११
श्वेताम्बर साहित्य में रामकथा का स्वरूप	,,	३६	१२	१९८५	२-६
श्रमण भगवान् महावीर	पं० बेचरदास दोशी	२३	११	१९७२	३-९
श्रमण-साहित्य में वर्णित विविध सम्प्रदाय	डॉ० भागचन्द्र जैन 'भास्कर'	२६	८	१९७५	३-१३
श्रावकप्रज्ञप्ति के रचयिता कौन ?	पं० बालचन्द्र शास्त्री	१६	७	१९६५	३-७
श्री आत्मारामजी और हिन्दी भाषा	श्री पृथ्वीराज जैन	५	१०	१९५४	११-१५
श्री किशनदास जी कृत-'उपदेशबावनी'	श्री अम्बाशंकर नागर	११	११	१९६०	२८-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्री जयभिक्खू के ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद	श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	१२	१९६८	२५-३४
श्रीमद्देवचन्द्ररचित कर्म साहित्य	श्री अगरचन्द नाहटा	१७	१-२	१९६५	३३-३७
श्रीपालचरित की कथा	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२२	४	१९७१	३-७
षट्दर्शनसमुच्चय के लघुटीकाकार सोमतिलकसूरि	श्री अगरचंद नाहटा	२४	१	१९७२	२०-२३
षट्प्राभृत के रचनाकार और उसका रचनाकाल	डॉ० के० आर० चन्द्र	४८	१०-१२	१९९७	४५-५२
संडेरगच्छीय ईश्वरसूरि की प्राप्त एवं अप्राप्त-रचनायें	श्री अगरचन्द नाहटा	२५	७	१९७४	२९-३२
संदेशरासक में उल्लिखित (वनस्पतियों के नाम)					
पर्यावरण के तत्त्व	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	२८	२	१९७६	२७-२९
,,	,,	४६	१०-१२	१९९५	२४-२७
संवेगरंगशाला-एक स्पष्टीकरण	प्रो० हीरालाल रसिकलाल कापड़िया	२०	१२	१९६९	३२
संयुक्तनिकाय में जैन सन्दर्भ	विजयकुमार जैन	३३	१२	१९८१	१६-२३
संवेगरंगशाला देवभद्रसूरि रचित और अनुपलब्ध है ?	श्री अगरचन्द नाहटा	२०	११	१९६९	२३-२६
संवेगरंगशाला नामक दो ग्रन्थ नहीं एक ही है	,,	२१	१	१९६९	३४
संस्कृत काव्य शास्त्र के विकास में प्राकृत की भूमिका	श्री धनीराम अवस्थी	३७	५	१९८६	२-९
संस्कृत दूत काव्यों के निर्माण में जैन कवियों का योगदान	श्री रविशंकर मिश्र	३३	६	१९८२	१-१५
संस्कृत व्याकरण शास्त्र में जैनाचार्यों का योगदान	श्रीराम यादव	३३	८	१९८२	११-२०
संस्कृत साहित्य के इतिहास के जैन सम्बन्धित संशोधन	श्री अगरचन्द नाहटा	१७	५	१९६६	२२-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
संस्कृत साहित्य में अभ्युदय नामान्त जैन काव्य	श्री जयकुमार जैन	२९	१	१९७७	३-८
सन्दर्भ एवं भाषायी दृष्टि से आचारांग के उपोद्घात में प्रयुक्त प्रथम वाक्यं के पाठ की प्राचीनता पर कुछ विचार	डॉ० के० आर० चन्द्र	४५	७- ९	१९९४	५२-५९
सप्तक्षेत्रिरासु	डॉ० सनत्कुमार रंगाटिया	१९	६	१९६८	२३-२८
सप्तसन्धानमहाकाव्य में ज्योतिष	श्री श्रेयांसकुमार जैन	२८	१२	१९७७	१७-२१
समयसार	श्री मिश्रीलाल जैन	३५	५	१९८४	४२-५९
समणसुत्तं	,,	३५	५	१९८४	२७-४१
समयसार : आचार-मीमांसा	डॉ० दयानन्द भार्गव	२९	७	१९७८	३-११
समयसार सप्तदशांगी टीका : एक साहित्यिक-मूल्यांकन	डॉ० नेमिचन्द जैन	२९	१०	१९७८	३-८
समराइच्चकहा का अविकलगुर्जरानुवाद	श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	५	१९६८	६-१७
समराइच्चकहा की संक्षिप्त कथावस्तु और उसका-सांस्कृतिक महत्त्व	डॉ० झिनकू यादव	२५	१-२	१९७३	३५-४२
समवायांगसूत्र में विसंगति	श्री नंदलाल मारु	१९	५	१९६८	३२-३४
सर्वांगसुन्दरी-कथानक	डॉ० के०आर० चन्द्र	२४	५	१९७३	१६-२१
सात लाख श्लोक परिमित संस्कृत साहित्य के निर्माता जैनाचार्य विजयलावण्यसूरि	श्री अगरचन्द नाहटा	२३	८	१९७२	१९-२३
साधुवन्दना के रचयिता	,,	२२	२	१९७०	२९-३२
सावयपण्णत्ति : एक तुलनात्मक अध्ययन -क्रमश :	पं० बालचंद सिद्धान्तशास्त्री	२१	२	१९६९	५-११

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	,,	२१	३	१९७०	५-१३
,,	,,	२१	४	१९७०	२२-२८
,,	,,	२१	५	१९७०	२४-२९
,,	,,	२१	६	१९७०	२०-२७
,,	,,	२१	१	१९६९	५-१३
साहित्य और साहित्यिक	संत विनोबा	१५	३	१९६४	१५-२८
साहित्य भवन के निर्माण का शुभारंभ	श्री सतीश कुमार	११	१	१९५९	२४-२७
सिरिपालचरिउ : एक मूल्याकंन	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२२	८	१९७१	३-७
सिरिपालचरिउ : संदर्भ और शिल्प	,,	२०	१०	१९६९	५-१४
सिद्धर्षिगणिकृत उपमितिभवप्रपंचाकथा	श्री गोपीचंद धारीवाल	१८	७	१९६७	२६-३१
सिद्धिविनिश्चय और अकलंक	पं० दलसुख मालवणिया	५	४	१९५४	३१-३२
सिंहदेव रचित एक विलक्षण महावीरस्तोत्र	श्री अगरचंद नाहटा	३०	५	१९७९	२०-२५
सोमदेवकृत यशस्तिलक	श्री गोकुलचंद जैन	१६	९	१९६५	२-७
स्वयंभू और उनका पउमचरिउ	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२५	१-२	१९७३	३-१३
स्वयंभू का कृष्णकाव्य और सूरकाव्य के अध्ययन - की समस्याएँ	,,	३०	८	१९७९	३३-३५
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में गणधरवाद	डॉ० मंजुला मेहता	२८	६	१९७७	११-१६
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में महावीर चरित	,,	२७	७	१९७६	१६-२२
त्रिषष्टिशलाकापरुषचरित में रसोद भावना	,,	२८	३	१९७७	१५-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
हरिकलशरचित दिल्ली-मेवात देश चैत्यपरिपाटी	श्री अगरचंद नाहटा	२७	८	१९७६	१८-२१
हरिभद्र के धूर्ताख्यान का मूल स्रोत: एक चिन्तन	प्रो० सागरमल जैन	३९	४	१९८८	२६-२८
हर्षकीर्तिसूरि रचित धातुतरंगिणी	श्री अगरचंद नाहटा	३०	१२	१९७९	३५-३८
हर्षकुलचरित कमलपंचशतिका	,,	२०	५	१९६९	२०-२२
हिन्दी काव्यों में महावीर	श्री प्रेमचन्द रांवका	२६	९	१९७५	१४-२०
हीराणंदसूरि का विद्याविलास और उस पर - आधारित रचनाएं	श्री अशोककुमार मिश्र	२६	१२	१९७५	२१-२६
हेमचन्द्र और भारतीय काव्यालोचना	डॉ० देवेन्द्रकुमार	१७	९	१९६६	२-७
हेमविजयगणि और विजयप्रशस्तिमहाकाव्य	श्री उदयचंद जैन	२२	९	१९७१	२३-२४
Metrical Studies of Daśāśrutaskandha Niryukti in the light of its parallels	Dr. Ashok Kumar Singh	४७	७-९	१९९६	५९-७६

४. इतिहास, पुरातत्त्व एवं कला

अकबर और जैनधर्म	डॉ० ओमप्रकाश सिंह	३३	६	१९८२	५६-६०
'अगस्त' की ऐतिहासिकता	श्री शरदचन्द्र मुखर्जी	५	१०	१९५४	३०-३२
अज्ञात प्राचीन जैनतीर्थ: कसरावद	श्री लक्ष्मीचंद जैन	२९	६	१९७८	२५-२७
अड्डालिजीयगच्छ	डॉ० शिवप्रसाद	४८	१०-१२	१९९७	८१-८२
अतिशय क्षेत्र पपौरा	पं० अमृतलाल शास्त्री	१६	६	१९६५	१८-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अष्टालक्षी में उल्लेखित जयसुन्दरसूरि की -					
शातार्थी की खोज आवश्यक	श्री अगरचंद नाहटा	१८	१२	१९६७	२७-२८
अहमदाबाद के भामाशाह	श्री जयभिक्खु	४	१०	१९५३	२१-२४
अहिंसा का क्रमिक विकास	पं० सुखलाल जी	११	४	१९६०	९-१५
आचार्य अमितगति: व्यक्तित्व और कृतित्व	डॉ० कुसुम जैन	३९	९	१९८८	१७-२३
आचार्य : एक मधुर शास्ता	उपाध्याय अमरमुनि	८	१२	१९५७	१२-१६
आचार्य चण्डरुद्र	मुनिश्री लक्ष्मीचन्द्र जी	११	३	१९६०	१८-१९
आचार्य शाकटायन (पाल्यकीर्ति) और पाणिनि	श्री रामकृष्ण पुरोहित	३२	५	१९८१	५२-६१
आचार्य सोमदेवसूरि	श्री गोकुलचन्द जैन	१२	१	१९६०	३१-३३
आचार्य हेमचन्द्र	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	२	८	१९५१	१६-२४
आचार्य हेमचन्द्र और उनकी साहित्यिक मान्यताएं	डॉ० देवेन्द्रकुमार	१२	३	१९६१	२२-२६
आचार्य हेमचन्द्र : एक महान् वैयाकरण	श्री अभयकुमार जैन	२७	१०	१९७६	८-१३
आचार्य हेमचन्द्र : एक युगपुरुष	प्रो० सागरमल जैन	४०	१२	१९८९	३-१५
,,	,,	४८	४-६	१९९७	६०-७०
आचार्य हेमचन्द्र : जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व	श्री अभयकुमार जैन	२६	१०	१९७५	१३-१८
आनन्दघन जी खरतरगच्छ में दीक्षित थे	श्री भँवरलाल नाहटा	४०	४	१९८९	२-१२
आर्यरक्षित	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	८	२	१९५६	१९-२२
आर्यों से पहले की संस्कृति	डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी	१	८	१९५०	१३-१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आष्टा की परमारकालीन अप्रकाशित जैन प्रतिमाएँ	डॉ० मायारानी आर्य	२९	९	१९७८	२३-२४
आषुतोष म्यूजियम में नागौर का एक सचित्र-विज्ञप्तिपत्र	श्री अगरचन्द भँवरलाल नाहटा	२४	४	१९७३	१५-१९
इतिहास की पुनरावृत्ति : एक भ्रामक धारणा	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	२	१०	१९५१	३१-३२
इतिहास की पुनरावृत्तिःयथार्थ दर्शन	प्रो० देवेन्द्रकुमार जैन	३	२	१९५१	३४-३६
इतिहास बोलता है	श्री सत्यदेव विद्यालंकार	१०	१२	१९५९	११-१६
इन्द्रभूति गौतम	श्री विजयमुनि शास्त्री	८	६	१९५७	४३-४८
उच्चैर्नागर शाखा की उत्पत्ति स्थान एवं उमास्वाति - के जन्मस्थल की पहचान	डॉ० सागरमल जैन	४२	७-१२	१९९१	१७-२४
उज्जयिनी	श्री अमरचन्द्र	३	१०	१९५२	२७-३३
उड़ीसा में जैन कला एवं प्रतिमा-विज्ञान की - राजनैतिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि	डॉ० मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी	२५	१-२	१९७३	१४-२१
उड़ीसी नृत्य और जैन सम्राट खारवेल	श्री सुबोधकुमार जैन	२२	५	१९७१	२१-२२
उत्तर प्रदेश में मध्ययुगीन जैन शिल्पकला का-विकास	डॉ० शिवकुमार नामदेव	२८	७	१९७७	१६-२०
उत्तर भारतीय शिल्प में महावीर	श्री मारुतिनंदन तिवारी	२१	१२	१९७०	१८-२३
उपकेशगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४२	७-१२	१९९१	६१-१८२
उपासक प्रतिमायें	डॉ० मोहनलाल मेहता	१७	१-२	१९६५	८९-९२
उपरियाली का विख्यात जैन तीर्थ	श्री भूरचन्द जैन	३२	८	१९८१	२६-२८

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
उपरियाली का विख्यात जैन तीर्थ	श्री भूरचन्द जैन	३२	८	१९८१	२६-२८
ऐतिहासिक अध्ययन के जैन स्रोत और उनकी प्रामाणिकता: एक अध्ययन	डॉ० असीमकुमार मिश्र	४६	१०-१२	१९९५	४४-५१
ऐतिहासिक जैन तीर्थ नांदिया	श्री भूरचन्द जैन	२८	४	१९७६	२७-२९
ओसवंश-स्थापना के समय संबन्धी महत्त्वपूर्ण - उल्लेख	श्री अगरचंद नाहटा	३	१०	१९५२	२७-३३
ओसवाल और पार्श्वापत्य सम्बन्धों पर टिप्पणी	श्री भँवरलाल नाहटा	४०	१०	१९८९	८-१३
ऋषभपुत्र भरत और भारत	श्री गणेशप्रसाद जैन	२१	१२	१९७०	२४-३२
कर्म की मर्यादा	डॉ० मोहनलाल मेहता	२३	२	१९७१	३-५
कर्णाटक में जैन शिल्पकला का विकास	श्री शिवकुमार नामदेव	२७	१०	१९७६	१४-१८
कलचुरि-कला में जैन शासन देवियों की मूर्तियाँ	,,	२५	१०	१९७४	२४-२६
कलचुरिकालीन जैन शिल्प-संपदा	,,	३०	१	१९७८	२३-३२
कल्पप्रदीप में उल्लिखित 'खेड़ा' गुजरात का नही राजस्थान का है	श्री भँवरलाल नाहटा	४०	११	१९८९	२५-२८
कल्पप्रदीप में उल्लिखित भगवान् महावीर के कतिपय तीर्थक्षेत्र	डॉ० शिवप्रसाद	४०	६	१९८९	२०-२९
कारीतलाई की जैन द्विमूर्तिका प्रतिमाएं	श्री शिवकुमार नामदेव	२६	११	१९७५	१५-१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कालकाचार्य	श्री इलाचन्द जोशी	५	१०	१९५४	२३-२९
काशी के कतिपय ऐतिहासिक तथ्य	पं० अमृतलाल शास्त्री	३९	१२	१९८८	१६-१८
कुम्भारिया का महावीर मन्दिर	डॉ० हरिहर सिंह	२६	१-२	१९७४	४७-५२
कुम्भारिया जैनतीर्थ	श्री भूरचन्द जैन	२८	१०	१९७७	२५-२८
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	श्री अगरचन्द नाहटा	२५	६	१९७४	२८-३१
कुषाणकालीन मथुरा की जैन सभ्यता	डॉ० एस० सी० उपाध्याय	७	२	१९५५	१७-१८
केशी ने पूछा	श्री गोकुलचन्द जैन	१२	२	१९६०	११-१३
कोरंटगच्छ	डॉ० शिवप्रसाद	४०	५	१९८९	१५-४३
क्या लोंकाशाह विद्वान् नहीं थे ?	श्री नन्दलाल मारु	१८	१-२	१९६६	७८-८०
क्रान्तिदर्शी महावीर	उपाध्याय अमरमुनि	३३	६	१९८२	२८-३८
क्रोध आदि वृत्तियों पर विजय कैसे ?	अरविंद	४	४	१९५३	८-१०
क्या कृष्ण गच्छ की स्थापना सम्वत् १३९१ - में हुई थी ?	श्री अगरचन्द नाहटा	२४	२	१९७२	२८-२९
कोटिशिला तीर्थ का भौगोलिक अभिज्ञान	डॉ० कस्तूरचन्द जैन	४२	७-१२	१९९१	५१-६०
खजुराहो की कला और जैनाचार्यों की समन्वयात्मक - एवं सहिष्णु दृष्टि	डॉ० सागरमल जैन	४५	४-६	१९९४	१७३-१७८
गीता के राजस्थानी अनुवादक जैन कवि थिरपाल	श्री अगरचन्द नाहटा	२६	१०	१९७४	१९-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
ग्यारह गणधर सम्बंधी ज्ञातव्य बातें	श्री अगरचन्द नाहटा	२४	५	१९७३	२२-२६
ग्वालियर के तोमरकालीन दानवीर	श्री चम्पालाल सिंघई	२३	१०	१९७२	१०-१३
ग्वालियर के तोमरवंशीय राजा	डॉ० राजाराम जैन	२०	१	१९६८	६-१३
गुप्तकाल में जैन-धर्म	डॉ० अमरचन्द मित्तल	१०	६	१९५९	१६-२२
गुप्त सम्राटों का धर्म समभाव	श्री चम्पालाल सिंघई	२३	६	१९७२	१८-२०
गोम्मट आइडोल्स ऑफ कर्णाटक	पं० के० भुजबली शास्त्री	२४	३	१९७३	३६-३८
चंदनबाला और मृगावती	श्री जयचन्द्र बाफणा	३	७	१९५२	३१-३२
चण्डकौशिक का उपसर्ग स्थान योगी पहाड़ी	श्री भँवरलाल नाहटा	२२	१२	१९७१	५-८
चन्द्रावती की जैन प्रतिमाएँ ; एक परिचयात्मक सर्वेक्षण	श्री विनोद राय	२९	११	१९७७	३६-३८
चित्तौड़ का जैन कीर्तिस्तम्भ	श्री भूरचन्द जैन	२९	१	१९७७	३४-३५
२४ तीर्थंकरों के नामों में नाथ शब्द का प्रयोग कब से	श्री अगरचंद नाहटा	२२	१	१९७०	१८-२२
जंगम आगम संशोधन मंदिर	पं० दलसुख मालवणिया	२	४	१९५१	२८-३२
जैन इतिहास की एक झलक	पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य	७	४	१९५६	३-८
आचार्य हेमचन्द्र : एक युगपुरुष	प्रो० सागरमल जैन	४०	१२	१९८९	३-१५
जैनधर्म की प्राचीनता और विशेषता	कुमारी मंजुला मेहता	२४	५	१९७३	८-१५
जमाली का मतभेद	श्री मनोहर मुनि	९	६-७	१९५८	६६-६८
जालिहरगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४३	४-६	१९९२	४१-४६

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जालौर में महावीर-मन्दिर की शिल्प सामाग्री - का मूर्ति-वैज्ञानिक अध्ययन	डॉ० मारुति नन्दन प्र० तिवारी	२७	२	१९७५	९-१७
जिनचन्द्रसूरिरचित श्रावकसामाचारी की पूरी - प्रति की खोज	श्री अगरचंद नाहटा	१९	४	१९६८	३२-३५
जीरापल्लीगच्छ का इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४७	७-९	१९९६	२३-३३
जैन इतिहास लेखकों का आवाहान	श्री कस्तूरमल बांठिया	१२	३	१९६१	३१-३३
जैनकला एवं स्थापत्य	डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	३	१९७९	३-९
जैन कलातीर्थ : खजुराहो	श्री शिवकुमार नामदेव	२५	१२	१९७४	२२-२७
जैन कला प्रदर्शनी	श्री अगरचंद नाहटा	८	५	१९५७	३६-३८
जैन तीर्थ रातामहावीरजी	श्री भूरचन्द जैन	२७	८	१९७६	२६-२८
जैन तीर्थ शंखेश्वरपार्श्वनाथ	,,	२९	९	१९७८	२५-२९
जैन तीर्थंकर और भिल्ल प्रजाति	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२३	५	१९७२	२५-२७
जैन धर्म एवं गुरु मन्दिर	जसवन्तलाल मेहता	३६	७	१९८५	१९-२६
जैनधर्म का एक विलुप्त सम्प्रदाय यापनीय क्रमश:	प्रो० सागरमल जैन	३९	९	१९८८	१-१६
,,	,,	३९	११	१९८८	१-१८
जैनधर्म की प्राचीनता	श्री शांतिलाल मांडलिक	१९	१२	१९६८	१८-२४
जैनधर्म की प्राचीनता -क्रमश:	डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा	२०	६	१९६९	२२-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	,,	२०	७	१९६९	२७-३२
,,	,,	२०	८	१९६९	१९-२७
,,	,,	२०	९	१९६९	२३-२७
जैनधर्म की प्राचीनता तथा इतिहास	डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	२	१९७८	३-१६
जैनधर्म के धार्मिक अनुष्ठान एवं कला तत्त्व	डॉ० सागरमल जैन	४२	१-३	१९९१	१-३९
जैनधर्म में सरस्वती	श्रीमती सुधा जैन	२६	७	१९७५	१३-१४
जैन परम्परा	डॉ० मोहनलाल मेहता	३	११	१९५२	१३-१७
जैन परम्परा	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१०	३	१९५९	९-११
जैन परम्परा का आदिकाल -क्रमशः	,,	१४	४	१९६३	९-१७
,,	,,	१४	५	१९६३	९-१७
,,	,,	१४	६-७	१९६३	१२-१८
जैन परम्परा का ऐतिहासिक विश्लेषण	प्रो० सागरमल जैन	४१	७-९	१९९०	१-१६
जैन मूर्तिकला	श्री अवधकिशोर नारायण	१	१०	१९५०	१९-२१
जैन मूर्तिकला	डॉ० विनयतोष भट्टाचार्य	४	१०	१९५३	१३-१९
जैनमूर्तियों का क्रमिक विकास	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२३	४	१९७२	१८-२१
जैन मंदिर व स्तूप	कु० सुधा जैन	२४	१२	१९७३	१६-१९
जैन यक्ष गोमुख का प्रतिमा निरूपण	श्री मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी	२७	९	१९७६	२९-३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन लेखों का सांस्कृतिक अध्ययन	श्री नारायण दुबे	४०	४	१९८९	१८-२६
जैन वास्तुकला : संक्षिप्त विवेचन	डॉ० शिवकुमार नामदेव	२८	२	१९७६	१६-२१
जैन शिल्पकला और मथुरा	कु० सुधा जैन	२३	१२	१९७२	१६-१९
जैनशिल्प का एक विशिष्ट प्रकार : सहस्रकूट	श्री अगरचंद नाहटा	२५	१२	१९७४	१६-२१
जैन सरस्वती हंसवाहना या मयूरवाहना	श्री शिवकुमार नामदेव	२६	१२	१९७५	१८-२०
जैन साहित्य और शिल्प में वाग्देवी सरस्वती	डॉ० मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी	२८	२	१९७६	३०-३४
जैन साहित्य के इतिहास की पूर्व पीठिका	श्री कस्तूरमल बांठिया	२०	४	१९६९	१८-२४
जैन साहित्य के इतिहास-निर्माण सूत्र	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	५	१	१९५३	११-१६
जैन साहित्य में कलिङ्ग	श्री अमरचन्द्र	७	९	१९५६	३-६
जैन साहित्य में गोम्मटेश्वर बाहुबलि	डॉ० सागरमल जैन	३२	३	१९८१	१-९
जैन साहित्य में स्तूपनिर्माण की प्रथा	डॉ० हरिहर सिंह	२१	११	१९७०	१६-२२
जैन संस्कृति के प्रतीक मौर्यकालीन अभिलेख	डॉ० पुष्पमित्र जैन	२४	८	१९७३	१७-२५
जैनागम वर्णित तीर्थंकरों की भिक्षुणी	डॉ० अशोककुमार सिंह	४०	९	१९८९	१७-३०
जैनाचार्य श्री कांशीराम जी	श्री सुमन मुनि	११	९	१९६०	३०-३३
जैनों में मूर्ति और उसकी पूजा पद्धतियों में - विकास और विकार	श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	७	१९६८	६-१७
जौनपुर की बड़ी मस्जिद क्या जैन मंदिर है?	श्री अगरचंद नाहटा	३०	६	१९७९	३३-३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
झारडा की जैन देवियों की अप्रकाशित प्रतिमाएं	डॉ० सुरेन्द्रकुमार आर्य	२७	११	१९७६	१३-१४
तर्कप्रधान संस्कृत वाङ्मय के आदि प्रेरक : सिद्धसेन दिवाकर	श्री मोहन रत्नेश	२९	१	१९७७	१५-२६
तारंगा का अजितनाथ-मंदिर	डॉ० हरिहर सिंह	२९	६	१९७८	३-१३
तीर्थक्षेत्र शत्रुंजय	,,	२२	७	१९७१	१९-२५
तीर्थंकर-प्रतिमाओं की विशेषताएँ	श्री शिवकुमार नामदेव	२५	४	१९७४	२४-२६
तीर्थंकर महावीर की जन्म भूमि : विदेह का-कुण्डपुर	श्री गणेशप्रसाद जैन	३६	७	१९८५	२-११
तीर्थंकर महावीर की निर्वाण भूमि 'पावा'	,,	३८	१	१९८६	५-११
तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ	,,	३५	२	१९८३	२-५
तीर्थंकर पार्श्वनाथ: प्रामाणिकता और ऐतिहासिकता	डॉ० विनोदकुमार तिवारी	३८	२	१९८६	२-७
दक्षिण भारत में जैनधर्म और संस्कृति	श्री गणेशप्रसाद जैन	२१	१	१९६९	१५-२५
दक्षिण भारत में जैनधर्म, साहित्य और तीर्थक्षेत्र	,,	२४	११	१९७३	१४-१८
दक्षिण भारतीय शिल्प में महावीर	श्री मारुतिनंदन तिवारी	२२	१	१९७०	१२-१७
दर्शाण में जैनधर्म	श्री मोहनलाल दलाल	२४	१२	१९७३	२०-२४
दानवीरता का कीर्तिमान-वस्तुपाल	श्री चम्पालाल सिंघई	२३	२	१९७१	१७-२०
दिगम्बर आर्या जिनमती की मूर्ति	श्री अगरचन्द नाहटा	१०	१२	१९५९	३१-३२
धार्मिक एवं पर्यटन स्थल गिरनार	श्री भूरचन्द जैन	३०	५	१९७९	२६-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
धर्मघोषगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४१	१-३	१९९०	४५-१०४
धर्मबन्धु हर्बर्ट वारन	अनु० कृष्णचन्द्राचार्य	५	११	१९५४	१६-२२
धुबेला संग्रहालय की अद्वितीय जैन प्रतिमाएं	श्री शिवकुमार नामदेव	२५	८	१९७४	२४-२७
नागेन्द्रगच्छ का इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४६	७-९	१९९५	२०-६५
नन्दीसेन	मुनि महेन्द्रकुमार 'प्रथम'	३४	४	१९८३	१२-१६
नाणकीय गच्छ	डॉ० शिवप्रसाद	४०	७	१९८९	२-३४
नालन्दा या नागलन्दा	पं० बेचरदास दोशी	२५	१०	१९७४	११-१३
नेपाल का शाहवंश और उनके पूर्वज	मुनि कनकविजय	२	४	१९५१	३४-३८
परम्परागत पावा ही भगवान् महावीर की निर्वाण भूमि	श्री बलवन्तसिंह मेहता	२३	६	१९७२	२१-३०
पल्लीवालगच्छीय शांतिसूरि का समय एवं प्रतिष्ठा	श्री अगरचन्द नाहटा	३	११	१९५२	३१-३३
पश्चिमी भारत के जैन तीर्थ	डॉ० शिवप्रसाद	४१	७-९	१९९०	४५-७८
पहले महावीर निर्वाण या बुद्धनिर्वाण	श्री कस्तूरमल बांठिया	१०	७-८	१९५९	१०-२१
पारसनाथ	श्रीरंजन सूरिदेव	६	५	१९५५	३-५
पालनपुर का प्राचीन प्रहलविया जैन मन्दिर	श्री भूरचंद जैन	२९	१२	१९७८	२४-२७
पावा: कसौटी पर	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२५	४	१९७४	१६-२३
पावा कहाँ ? गंगा के उत्तर या दक्षिण में	मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी 'प्रथम'	२१	११	१९७०	२३-२४
पावापुर	श्री जिनवरप्रसाद जैन	२३	५	१९७२	११-१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पार्श्वनाथ के दो पट्टधर	श्री अमिताभ	१२	२	१९६०	२०-२१
पार्श्वनाथ जन्मभूमि मंदिर, वाराणसी की पुरातत्त्वीय-वैभव	प्रो० सागरमल जैन	४१	४-६	१९९०	७७-८८
पिप्पलगच्छ का इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४७	१०-१२	१९९६	६५-८२
,,	,,	४८	१-३	१९९७	८३-११७
पुष्कर के सम्बन्ध में शोध	श्री अजित मुनि	१७	९	१९६६	१७
पुष्पदंत क्या पुष्पभाट थे ?	प्रो० देवेन्द्र कुमार	७	१०	१९५६	३-५
पूर्णिमागच्छ का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४३	७-९	१९९२	२९-५१
पूर्णिमागच्छ-प्रधान शाखा अपरनाम ढंढेरिया - शाखा का संक्षिप्त इतिहास	,,	४३	१०-१२	१९९२	४९-६६
पूर्णिमापक्ष-भीमपल्लीयाशाखा का इतिहास	,,	४४	४-६	१९९३	२२-३५
पेथड़रास के कर्ता कौन	श्री सनत्कुमार रंगाटिया	१९	३	१९६८	१६-२०
प्रबन्धकोश में उपलब्ध आर्थिक विवरण	श्री अशोककुमार सिंह	३८	९	१९८६	१७-२६
प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलाल संघवी	श्री धनपति टुंकलिया	८	२	१९५६	३७-३९
प्रयाग-एक महान् जैन क्षेत्र	श्री सुबोधकुमार जैन	२२	११	१९७१	१७-१९
प्राचीन ऐतिहासिक नगरी : जूना (बाड़मेर)	श्री भूरचंद जैन	२५	११	१९७४	१७-२१
प्राचीन जैन तीर्थ ओसियाँ	,,	२९	२	१९७७	३०-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्राचीन जैन तीर्थ : करेड़ा पार्श्वनाथ	,,	२८	६	१९७७	२६-२९
प्राचीन जैन तीर्थ : करेड़ा पार्श्वनाथ	श्री भूरचंद जैन	३०	१०	१९७९	३०-३४
प्राचीन जैनतीर्थ श्री गंगाणी	,,	२८	८	१९७७	२१-२३
प्राचीन भारत में जैन चित्रकला	कु० सुधा जैन	२५	५	१९७४	३१-३४
प्राचीन भारत में संस्कृतियों का संघर्ष	आ० चन्द्रशेखर शास्त्री	१	३	१९५०	३३-३४
प्राचीन भारतीय सैन्य विज्ञान एवं युद्ध नीति-जैन स्रोतों के आधार पर	श्री इन्द्रेशचन्द्र सिंह	३९	८	१९८८	९-१७
फलवर्द्धिका पार्श्वनाथ तीर्थ : एक ऐतिहासिक दृष्टि	श्री शिवप्रसाद	३२	१२	१९८१	२७-३१
बनारस से जैनों का सम्बन्ध	पं० दलसुख मालवणिया	२	७	१९५१	१५-१८
१२वीं शताब्दी की एक तीर्थमाला	श्री अगरचन्द नाहटा	२७	१०	१९७६	१९-२३
ब्रह्माणगच्छ का इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४८	७-९	१९९७	१४-५०
बाहुबलि : चक्रवर्ती का विजेता	उपाध्याय श्री अमरमुनि	३२	३	१९८१	२१-२६
बीकानेरी चित्र-शैली का सर्वाधिक चित्रों वाला - कल्पसूत्र	श्री अगरचन्द नाहटा	२८	१०	१९७७	२०-२४
बैंगलोर का आदिनाथ जैन मन्दिर	श्री भूरचन्द जैन	३४	९	१९८३	२२-२३
भगवान् श्री अजितनाथ	,,	३३	४	१९८२	१७-२०
भगवान् अरिष्टनेमि की ऐतिहासिकता	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२२	७	१९७१	१३-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् नेमिनाथ का समय-एक विचारणीय-समस्या	श्री अगरचन्द नाहटा	२३	३	१९७२	१५-१९
भगवान् नेमिनाथ के समय सम्बन्धी संशोधन	श्री अगरचन्द नाहटा	२१	२	१९६९	१२-१३
भगवान् बाहुबलि के प्रति	श्री दिलीप सुराणा	३५	३	१९८४	८-१०
भगवान् महावीर और हरिकेशी	श्री समीरमुनि 'सुधाकर'	१४	६-७	१९६२	२९-३१
भगवान् महावीर का जन्म और निर्वाणभूमि	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	२	६	१९५१	९-१२
भगवान् महावीर का जन्म स्थान	श्री नरेशचन्द्र मिश्र	१९	३	१९६८	३-१५
भगवान् महावीर का निर्वाण	श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री	१४	१	१९६२	९-१३
भगवान् महावीरकालीन वैशाली में जैन धर्म	श्री शांतिलाल मांडलिक	१९	४	१९६८	६-८
भगवान् महावीर की जन्मभूमि	श्री भगवानदास केसरी	४	२	१९५२	२८-३५
भगवान् महावीर की निर्वाण तिथि पर पुनर्विचार	डॉ० सागरमल जैन	४५	४-६	१९९४	२५४-२६८
भगवान् महावीर की निर्वाण तिथि : एक पुनर्विचार	डॉ० अरुणप्रताप सिंह	४६	१०-१२	१९९५	१-४
भगवान् महावीर की निर्वाण-भूमि : कौन सी-पावा	श्री रतिलाल म० शाह	२६	८	१९७५	१४-१८
भगवान् महावीर की निर्वाण-स्थली	श्री अनन्तप्रसाद जैन	३६	३	१९८५	१४-१६
भगवान् महावीर की प्रमुख आर्यिकाएं	डॉ० अशोककुमार सिंह	४०	६	१९८९	३०-३३
भगवान् महावीर के गणधर	पं० दलसुख मालवणिया	५	५	१९५४	१-१०
भगवान् महावीर के बाद	श्री समीर मुनि 'सुधाकर'	१५	५-६	१९६४	७२-७५
भगवान् महावीर के समसामयिक आचार्य	श्री भागचन्द जैन	१४	९	१९६३	९-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर के युग का जैन सम्राट महाराज चेटक	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२५	३	१९७४	२०-२४
भांडवा जैन तीर्थ	श्री भूरचन्द जैन	२८	९	१९७७	२९-३२
भारत का प्राचीन जैन केन्द्र : कसरावद	डॉ० मनोहरलाल दलाल	२४	१०	१९७३	२८-३१
भारत का सर्वप्राचीन संवत्	पं० भुजबली शास्त्री	३१	१	१९७९	३५
भारत में प्राचीन जैन गुफाएँ	डॉ० शिवकुमार नामदेव	२७	१२	१९७६	१५-२२
भारतवर्ष के मूल निवासी श्रमण	श्री गणेशप्रसाद जैन	२१	१०	१९७०	३२-३७
भारतीय पुरातत्त्व तथा कला में भगवान् महावीर	श्री शिवकुमार नामदेव	२६	१-२	१९७४	३८-४६
भारतीय विचार प्रवाह की दो धाराएँ	डॉ० मोहनलाल मेहता	११	५	१९६०	१३-१९
भारतीय विद्याविद् डॉ० जॉन ज्यार्ज बुहलर	श्री कस्तूरमल बांठिया	१८	१-२	१९६६	१३-२०
भावडारगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४०	३	१९८९	१५-३३
मगध साम्राज्य का प्रथम सम्राट श्रेणिक	श्री गणेशप्रसाद जैन	१९	३	१९६८	२५-३४
मध्यप्रदेश के गुना जिले का जैन पुरातत्त्व	डॉ० शिवप्रसाद	३३	९	१९८२	१९-२३
मडाहडागच्छ का इतिहास : एक अध्ययन	,,	४५	७-९	१९९४	३१-५१
मरुधरा का ऐतिहासिक जैनतीर्थ : नाकोड़ा	श्री भूरचन्द जैन	२६	५	१९७५	१०-१५
महाकवि पुष्पदंत : एक परिचय	श्री गणेशप्रसाद जैन	२१	६	१९७०	१५-१९
मलधारी अभयदेव और हेमचन्द्राचार्य	पं० दलसुख मालवणिया	४	१२	१९५३	१-१०
महाकवि पुष्पदन्त और गोम्मटेश्वर बाहुबलि	डॉ० देवेन्द्रकुमार	३२	४	१९८१	१३-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महाकवि माघ ओसवाल थे?	श्री मांगीलाल भूतोड़िया	४०	५	१९८९	१०-१४
महाकवि हस्तिमल्ल	श्री भागचन्द जैन	११	७-८	१९६०	४७-४९
महात्मा हुसेन बसराई	डॉ० इन्द्र	५	५	१९५४	२१-२५
महावीरकालीन वैशाली	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	३३	१	१९८१	२०-२५
महावीर की निर्वाण भूमि पावा की स्थिति	पं० कपिलदेव गिरि	२२	१	१९७०	२७-३३
महावीर की निर्वाण-भूमि पावा की वर्तमान स्थिति	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२३	१	१९७१	३०-३१
महावीर की विहार भूमि-मगध और उसकी संस्कृति	श्री गणेशप्रसाद जैन	३३	११	१९८२	२३-२७
'महावीरचर्या' ग्रंथ सम्बन्धी महापंडित राहुल जी के-दो पत्र	श्री अगरचंद नाहटा	१७	१२	१९६६	९-१०
महावीर निर्वाण भूमि पावा- एक विमर्श	श्री भगवतीप्रसाद खेतान	४२	४-६	१९९१	९३-९८
महावीर निर्वाण भूमि पावा : एक समीक्षा	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	४५	१०-१२	१९९४	२३-२५
महावीर निर्वाण सम्वत् में शताब्दियों की भूल	श्री धन्यकुमार राजेश	२१	२	१९६९	१४-२१
महावीर के समकालीन आचार्य	श्री गोकुलचन्द जैन	१२	६-७	१९६१	६५-६९
महावैयाकरण आचार्य हेमचन्द्र	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२२	१०	१९७१	८-१३
मांडव : एक प्राचीन जैन तीर्थ -क्रमशः	श्री शांतिलाल मांडलिक	२१	९	१९७०	५-१४
,,	,,	२१	७	१९७०	२४-३०
मांडव : एक प्राचीन तीर्थ	श्री तेजसिंह गौड़	२२	८	१९७१	८-१२
मालपुरा की विख्यात जैन दादावाड़ी	श्री भूरचन्द जैन	२९	५	१९७८	२२-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मांडली का गुरुमन्दिर	,,	३०	२	१९७८	३२-३६
मिथिलापति नमिराज	श्री सुशील	६	९	१९५५	३६-३७
मेड़ता-फलौदी पार्श्वनाथ तीर्थ	श्री भूरचंद जैन	२६	९	१९७५	२९-३३
यह नई परम्परा करवट ले रही है	आचार्य सर्वे	९	११-१२	१९५८	३०-३२
राजस्थान में महावीर के दो उपसर्ग स्थल	श्री अगरचन्द नाहटा	२६	६	१९७५	१७-२०
राजस्थान में महावीर मंदिर	,,	२७	६	१९७६	२६-२८
राजस्थान में मध्ययुगीन जैन प्रतिमाएँ	डॉ० शिवकुमार नामदेव	२८	९	१९७७	२०-२४
राजा डूंगर सिंह तोमर	डॉ० राजाराम जैन	२०	१०	१९६९	३०-३६
राणकपुर के जैन मन्दिर	श्री भूरचन्द जैन	२७	७	१९७६	१३-१५
राष्ट्रीय एकता और साहित्य	डॉ० नगेन्द्र	३६	५	१९८५	२०-२५
लंका में जैनधर्म	श्री डी० जी० महाजन	१९	६	१९६८	५-११
लोद्रवा का कलात्मक कल्पवृक्ष	श्री भूरचन्द जैन	३३	३	१९८२	१०-१३
लोद्रवा-जैसलमेर तीर्थ पर श्री घण्टाकर्ण महावीर मन्दिर	,,	३२	९	१९८१	२४-२६
वज्रस्वामी	डॉ० इन्द्रचंद्र शास्त्री	८	१	१९५६	८-११
वडगच्छ के युगप्रधान दादा मुनिशेखरसूरि	श्री अगरचंद नाहटा	२४	११	१९७३	३६-३९
वर्धमान जैन आगम-मन्दिर	श्री भूरचन्द जैन	२८	१	१९७६	२१-२३
वहावी विद्रोह	श्री महेन्द्रराजा	८	७-८	१९५७	३१-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
विख्यात जैन तीर्थ: प्रभास पाटन	श्री भूरचन्द जैन	२७	३	१९७६	२३-२६
विगत हजार वर्ष के जैन इतिहास का सिंहावलोकन-क्रमश:	श्री कस्तूरमलबांठिया	१६	१०	१९६५	३-११
,,	,,	१६	११	१९६५	३-१४
,,	,,	१६	१२	१९६५	३-१९
विद्वद्वर विनयसागर आद्यपक्षीय नहीं, पिप्पलक-शाखा के थे -	श्री अगरचन्द नाहटा	७	३	१९५६	१७-१८
विश्व-व्यवस्था और सिद्धान्तत्रयी	श्री अजितमुनि 'निर्मल'	१७	७	१९६६	२५-३१
विदिशा से प्राप्त जैन प्रतिमाएँ और रामगुप्त की ऐतिहासिकता	श्री शिवकुमार नामदेव	२५	६	१९७४	१८-२३
वीरावतार	श्री समन्तभद्र	३७	६	१९८६	१-६
वैदिक परम्परा का प्रभाव	पं० बेचरदास दोशी	१२	४	१९६१	९-१४
वैदिक वाङ्मय और पुरातत्त्व में तीर्थंकर ऋषभदेव	डॉ० राजदेव दुबे	३८	८	१९८७	२-६
वैशाली और दीर्घप्रज्ञ महावीर	प्रो० वासुदेवशरण अग्रवाल	७	१०	१९५६	२६-३५
वैशाली का सन्त राजकुमार	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२७	७	१९७६	३-७
शाजापुर का पुरातात्त्विक महत्त्व	प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी	४१	१०-१२	१९९०	१११-११२
शिल्प कला एवं प्राकृतिक वैभव का प्रतीक - जैसलमेर का अमरसागर	श्री भूरचन्द जैन	२६	११	१९७५	२४-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
शिल्प में गोम्मटेश्वर बाहुबलि	डॉ० मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी	३२	३	१९८१	१०-२०
शुंग-कुषाणकालीन जैन शिल्पकला	श्री शिवकुमार नामदेव	२७	८	१९७६	२२-२५
श्वेताम्बर जैनों के पूजाविधियों का इतिहास	श्री कस्तूरमल बांठिया	१७	१०	१९६६	४-१५
,,	,,	१७	११	१९६६	२-१४
श्रमण जीवन का बदलता हुआ इतिहास	मुनिश्री आईदान जी	७	८	१९५६	३०-३५
श्रमण परम्परा : एक विवेचन	श्री रमेशमुनि शास्त्री	३०	१	१९७८	३-१०
श्रमण संस्कृति की प्राचीनता	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२१	१२	१९७०	३-१२
श्रमण भगवान् महावीर का दीक्षा दर्शन	पं० श्री मल्लजी	१४	६-७	१९६३	४४-४८
श्रवणबेलगोला के शिलालेख, दक्षिण भारत - में जैनधर्म और गोम्मटेश्वर	श्री गणेशप्रसाद जैन	१९	९	१९६८	१३-२१
श्रावस्ती का जैन राजा सुहलदेव	,,	२८	५	१९७७	१४-१८
श्रीमद्भागवत में ऋषभदेव	श्री रमाकान्त झा	१२	६-७	१९६१	७३-७५
श्रीमालपुराण में भगवान् महावीर और गणधर - गौतम का विकृत वर्णन	श्री अगरचन्द नाहटा	२६	९	१९७५	२६-२८
संप्रतिकालीन आहाड़ के मंदिर का जीर्णोद्धार स्तवन	श्री भँवरलाल नाहटा	२९	४	१९७८	२३-३०
संसार का इतिहास-तीन शब्दों में	श्री महेन्द्र राजा	३	९	१९५२	२२-२४
सम्राट और साम्राज्य	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'	३२	८	१९८१	१७-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सारनाथ-काशी की तपोभूमि	प्रो० चन्द्रिकासिंह 'उपासक'	१	४	१९५०	२५-२८
सारनाथ के भग्नावशेष	"	१	९	१९५०	२६-३१
सरस्वती का मंदिर	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	११	१	१९५९	५-९
सार्धपूर्णिमागच्छ का इतिहास	डॉ० शिव प्रसाद	४४	१-३	१९९३	४२-५९
सिद्धक्षेत्र बावनगजा जी	श्री नेमिचन्द जैन	३७	३	१९८६	२-४
सिद्धसेन दिवाकर	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री 'इन्दु'	४	१०	१९५३	२५-३१
,,	,,	४	११	१९५३	२९-३५
सिरोही के प्राचीन जैन मन्दिर	श्री भूरचन्द जैन	२६	७	१९७५	९-१२
सोमनाथ	श्री किशोरीलाल मशरूवाला	२	९	१९५१	१८-२३
सौराष्ट्र का प्राचीन जैनतीर्थ तालध्वजगिरि	श्री भूरचन्द जैन	२७	१०	१९७६	२४-२८
सोलंकी-काल के जैन मन्दिरों में जैनेतर चित्रण	डॉ० हरिहर सिंह	२८	६	१९७७	३०-३२
स्थूलभद्र	डॉ० इन्द्रचन्द्र जैन	८	७-८	१९५६	९-११
स्था० जैन साध्वीसंघ का पारम्परिक इतिहास	श्री अजित मुनि	२४	१२	१९७३	३१-३२
स्वयंभू की गणधर परम्परा	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२४	७	१९७३	३१
स्वामी समन्तभद्र जी	प्रो० पद्मनाभ जैनी	३	३	१९५२	१७-२३
हरिभद्रसूरि का समय-निर्णय	स्व० मुनि श्री जिनविजय जी	४०	१	१९८८	१-३२
,,		४०	२	१९८८	१-३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
हर्षपुरीयगच्छ अपरनाम मलधारीगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४७	४-६	१९९६	३६-६७
हुबली का अचलगच्छ जैन देरासर	श्री भूरचन्द जैन	३६	५	१९८५	२६-२८
हुबली का श्री शान्तिनाथ मंदिर	,,	३४	३	१९८३	४३-४५
हारीजगच्छ	डॉ० शिवप्रसाद	४६	१०-१२	१९९५	२८-३३
Origin and Development of Tirthankara Images	Dr. Harihar Singh	२९	३	१९७८	२२-३०
Panis and Jainas	Dr. S.P. Naranga	४६	१०-१२	१९९५	८७-८९

५. समाज एवं संस्कृति

अक्षय तृतीया	श्रीमती कलादेवी जैन	८	७-८	१९५७	४०-४३
अद्‌भुत	श्री विद्याभिक्षु	१६	११	१९६५	१५-१६
अद्‌भुत भिखारी एवं महान् दाता	श्री राजदेव त्रिपाठी	१३	३	१९६२	२९-३१
अधूरा समाजवाद	श्री सतीश कुमार	१०	७-८	१९५९	५९-६१
अनन्य साथी का वियोग	पं० बेचरदास दोशी	३२	५	१९८१	५४
अनमोल वाणी-संकलन	महात्मा चेतनदास जी	३२	२	१९८०	१९
अर्न्तद्रष्टा महावीर	श्री मनोहर मुनि जी	१२	६-७	१९६१	३८-४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अपना और पराया	मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी (प्रथम)	३५	८	१९८४	१०-१४
अपने को पहचानिये	महात्मा भगवानदीन जी	३२	१२	१९८१	१-६
अपराध की औषधि : क्षमा	श्रीकृष्ण 'जुगनू'	३६	८	१९८५	७-९
अपरिग्रहवाद -क्रमशः	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	२	७	१९५१	९-१४
"	"	२	१०	१९५१	१२-१४
,,	,,	३	२	१९५१	१८-२०
,,	,,	३	४	१९५२	३४-३६
,,	,,	३	७-८	१९५२	२५-२९
,,	,,	४	२	१९५२	३-८
,,	,,	४	३	१९५३	८-१२
,,	,,	४	४	१९५३	११-१५
अपरिग्रह अथवा अकर्मण्यता	श्री गोपीचन्द धारीवाल	१२	४	१९६१	२३-२५
अपरिग्रह और आज का जैन समाज	मुनिश्री समदर्शी	११	६	१९६०	४१-४३
अपरिग्रह के तीन उपदेष्टा	डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी	१०	१	१९५८	२२-२५
अपनी परमात्म शक्ति को पहचानो	श्री सौभाग्यमल जैन	३३	२	१९८१	२-६
अपने व्यक्तित्व की परख कीजिये	श्री जे० एन० भारती	६	१०	१९५५	३५-३६
अपरिग्रह की नई दशा	श्री जमनालाल जैन	९	६-७	१९५८	४७-५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अपरिग्रह ही क्यों	कुमारी पुष्पा	१०	९	१९५९	१०-११
अपरिग्रहवाद	मुनिश्री रामकृष्णजी म०सा०	७	१२	१९५६	२१-२२
अपरिग्रहवाद का यह उपहास क्यों	पं० श्री मृगेन्द्रमुनि जी "वैनतेय"	१०	१२	१९५९	८-१०
अपरिग्रही महावीर	श्री जमनालाल जैन	१३	६	१९६२	४-७
अब साधु समाज सँभले	श्री शादीलाल जैन	९	११-१२	१९५८	२१-२२
अभी तो सबेरा ही है ?	मुनि महेन्द्रकुमार जी 'प्रथम'	३४	६	१९८३	१०-१३
अमरवाणी	श्री अमरचंद जी महाराज	५	८	१९५४	१-४
अमृत जीता, विष हारा	उपाध्याय अमरमुनि	३३	१०	१९८२	२५-२९
असमता मिटाने का उपाय	श्री उमेश मुनि	११	११	१९६०	२२-२३
असली दुकान/नकली दुकान	डॉ० सागरमल जैन	३३	१०	१९८२	२०-२१
अस्पृश्यता और जैनधर्म	श्री बेचरदास दोशी	६	११	१९५५	३४-३८
अस्पृश्यता का पाप	श्री रामकृष्ण जैन	८	६	१९५७	५४-५५
अहिंसक भारत हिंसा की ओर	श्रीमती राजलक्ष्मी	१०	७-८	१९५९	५१-५५
अहिंसक महावीर	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	७	६-७	१९५६	४८-५०
आगम प्रकाशन में सहयोग कौन और कैसे करे ?	श्री कस्तूरमल बांठिया	१८	६	१९६७	१६-२५
आगम-साहित्य में क्षेत्र प्रमाण प्रणाली	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२९	५	१९७८	१८-२१
आगमिक साहित्य में महावीर चरित्र	डॉ० कोमलचन्द जैन	२६	१-२	१९७४	२८-३३

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आगमों में राजा एवं राजनीति पर स्त्रियों का - प्रभाव	डॉ० प्रमोदमोहन पाण्डेय	२४	९	१९७३	३-८
आचार्यश्री आत्माराम जी की आगम सेवा	श्री अगरचंद नाहटा	१३	५	१९६२	४०
आचार्य कालक और 'हंसमयूर'	पृथ्वीराज जैन	२	१	१९५०	३९-४०
आचार्य विद्यानन्द	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	१	१०	१९५०	२४-२७
आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज- एक अंशुमाली	श्री हीरालाल जैन	४५	१०-१२	१९९४	२६-३२
आचार्य सोमदेव : व्यक्तित्व तथा कर्तृत्व	कु० मीनाक्षी शर्मा	३७	४	१९८६	३-८
आचार्य : स्वरूप और दर्शन	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२८	१२	१९७७	११-१६
आचार्य हरिभद्रसूरि : प्राकृत के एक सशक्त रचनाकार	श्री प्रेमसुमन जैन	१८	१२	१९६७	१९-२६
आचार्य हेमचन्द्र और जैन संस्कृति	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१९	४	१९६८	३-६
आचार्य हेमचन्द्र : एक महान् काव्यकार	श्री अभयकुमार जैन	२८	९	१९७७	३-१३
आचारांग में समाज और संस्कृति	स्व० डॉ० परमेष्ठीदास जैन	३८	११	१९८७	२०-३२
आज का युग महावीर का युग है	डॉ० ओमप्रकाश	९	४	१९५७	३०-३४
आज का युवक धर्म से विमुख क्यों ?	श्री माणकचंद पींचा "भारती"	३४	१	१९८२	२६-२८
आज के सन्दर्भ में जैन पंचव्रतों की उपयोगिता	डॉ० विनोदकुमार तिवारी	३८	३	१९८७	८-१२
,,	,,	३८	७	१९८७	२-६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आडम्बर प्रिय नहीं धर्म प्रिय बनो	श्री सौभाग्यमुनि जी 'कुमुद'	३६	३	१९८५	२-४
आत्म सुख सभी सुखों का राजा	आचार्य आनन्दऋषि जी	३३	११	१९८२	३-५
आत्मन्ति बनाम परहित	पं० दलसुख मालवणिया	२	३	१९५१	९-११
आदिपुराण में राजनीति	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२७	८	१९७६	३-१३
आदीश जिन	डॉ० प्रकाशचन्द्र जैन	२८	४	१९७७	३-८
अधूरी जोड़ी	उपाध्याय श्री अमरमुनि	३१	८	१९८०	१४-१८
आनन्द	मुनि महेन्द्रकुमार	३४	७	१९८३	१२-१७
आभूषण भार स्वरूप है	श्री सौभाग्यमुनि जी	३६	८	१९८५	२-४
आरोग्य	पं० सुन्दरलाल जैन वैद्यरत्न	४	४	१९५३	२३-२५
आर्यारत्न श्री विचक्षण श्रीजी म० सा०	श्री गुलाबचंद जैन	३१	७	१९८०	१६-२३
आलोचक	श्री विजय मुनि	४	४	१९५३	६-७
आत्म निरीक्षण	सुश्री शरबतीदेवी जैन	६	९	१९५५	२०-२३
ईसाइयों का महापर्व-क्रिसमस	सुश्री निर्मला प्रीतिप्रेम	६	३	१९५५	१२-१६
उत्तरभारत की सामाजिक-आर्थिक संरचना : जैन आगम साहित्य के सन्दर्भ में	उमेशचन्द्र सिंह	३८	१२	१९८७	१२-२४
उपजीवी समाज	श्री भ्रमरजी सोनी	११	११	१९६०	३३-३५
एकता ? एकता ? एकता ?	श्री राजेन्द्रकुमार श्रीमाल	३६	८	१९८५	२२-२६

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
एकता की ओर एक कदम	श्री ऋषभदास रांका	१०	११	१९५९	२२-२४
एक नया पुरोहितवाद	मुनि सुरेशचन्द्र शास्त्री	७	६-७	१९५६	२७-३१
एक महान् विरासत की सहमति में उठा हाथ	श्रीमहेन्द्रकुमार फुसकुले	३६	८	१९८५	११-१४
एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्द जी का सामाजिक दर्शन	श्री रत्नेश कुसुमाकर	३१	२	१९७९	२३-२७
उपाध्याय श्री अमरमुनि जी : एक ज्योर्तिमय-व्यक्तित्व	मुनि समदर्शी	३४	१	१९८२	२१-२५
ओसवाल और पार्श्वापत्य सम्बन्ध	श्री मांगीलाल भूतोड़िया	४०	८	१९८९	२४-२५
कन्नड़ संस्कृति को जैनों की देन	प्रो० के० एस० धरणेन्द्रैया	४	७-८	१९५३	३९-४६
कर्मों का फल	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया	३२	२	१९८१	२०-२१
कला का कौल	श्री मनुभाई पंचोली	५	४	१९५४	१-३
कल्पना का स्वर्ग या स्वर्ग की कल्पना	श्री सौभाग्यमल जैन	३२	४	१९८१	१७-२१
कवि पुष्पदन्त की रामकथा	श्री गणेशप्रसाद जैन	२१	९	१९७०	२४-२७
कविरत्न श्री अमरमुनि जी	मुनिश्री कांतिसागर जी	८	५	१९५७	८-१०
कविवर देवीदास : जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व	श्री अभयकुमार जैन	२८	१०	१९७७	१२-१९
कवि-स्वरूप : जैन आलंकारिकों की दृष्टि में	डॉ० कमलेशकुमार जैन	२७	७	१९७६	८-१२
कर्मशास्त्रविद् रामदेवगणि और उनकी रचनाएँ	श्री अगरचंद नाहटा	२९	९	१९७८	११-१९
क्या अणुव्रत आन्दोलन असाम्प्रदायिक है ?	मुनि समदर्शी	१०	९	१९५९	२३-२४
क्या जातिस्मरण भी नहीं रहा	श्री कस्तूरमल बांठिया	११	३	१९६०	२९-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
क्या जैनधर्म जीवित रह सकता है?	श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल	१६	४	१९६५	२२-२५
क्या थे? क्या हैं? क्या होना है ?	श्री कस्तूरमल बांठिया	११	९	१९६०	१७-२१
क्या भगवान् महावीर के विचारों से विश्वशांति-संभव है?	डॉ० (कु०) मंजुला मेहता	३१	१०	१९८०	१७-२२
क्या महावीर सामाजिक पुरुष थे ?	डॉ० मोहनलाल मेहता	११	६	१९६०	१५-१६
क्या मैं जैन हूँ ?	प्रो० दलसुख मालवणिया	३	१०	१९५२	९-१२
क्या यही शिक्षा है?	श्री राजाराम जैन	४	१	१९५२	३०-३२
क्या राम कथा का वर्तमान रूप कल्पित है	श्री धन्यकुमार राजेश	२१	७	१९७०	१०-१९
,,	,,	२१	८	१९७०	१८-२७
क्या स्त्रियाँ तीर्थंकर के सामने बैठती नहीं ?	श्री नंदलाल मारु	२४	५	१९७३	२७-३०
क्या हम अपराधी नहीं	श्री जिनेन्द्र कुमार	३५	१	१९८३	७-८
कानों सुनी सो झूठ सब	डॉ० रतनकुमार जैन	३३	२	१९८१	१२-१५
क्रांतिकारी महावीर	पं० बेचरदास दोशी	१२	६-७	१९६१	४१-४४
,,	श्री रत्नचंद जैन शास्त्री	१५	११	१९६४	१३-१६
क्रांतिदर्शी महावीर	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	१६	६	१९६५	९-११
क्रोध और क्षमा	श्री समीर मुनि	१५	१०	१९६४	१८-२१
क्षमा-वाणी	मुनिश्री चन्द्रप्रभसागर	३४	११	१९८३	१-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
गर्भापहरण-एक समस्या	श्री रतिलाल म० शाह	२३	९	१९७२	२१-२५
गर्भापहरण सम्बन्धी कुछ बातें	श्री अगरचंद नाहटा	२३	१०	१९७२	२७-२८
गर्भापहरण-सम्बन्धी स्पष्टीकरण	श्री रतिलाल म० शाह	२३	१२	१९७२	२४-२७
गॉधी जी के मित्र और मार्गदर्शक : श्रीमद्राजचन्द्र	प्रो० सुरेन्द्र वर्मा	४६	१०-१२	१९९५	१-४
ग्रामदान से ग्राम-स्वराज्य	श्री नेमिशरण मित्तल	१०	५	१९५९	२०-२४
ग्रीष्म ऋतु का आहार-विहार	वैद्यराज पं० सुन्दरलाल जैन	५	८	१९५४	३४-३६
गुरु नानक	डॉ० इन्द्र	५	७	१९५४	१२-२५
गुणों के आगार	श्री यशपाल जैन	३२	५	१९८१	४१-४३
गृहस्थ के अष्टमूल गुण-तुलनात्मक अध्ययन	श्री अशोक पराशर	३१	१	१९७९	२०-२४
चक्षुष्मान पं० सुखलाल जी	उपाध्याय श्री महेन्द्रकुमार जी	३२	५	१९८१	१४-१५
चक्रवर्तियों के चक्रवर्ती श्रमण महावीर	श्री वेदप्रकाश सी० त्रिपाठी	३२	६	१९८१	३१
चमत्कार को नमस्कार	डॉ० रतनकुमार जैन	३२	७	१९८१	११-१४
चारित्र की दृढ़ता	श्री केवलमुनि जी	३७	८-९	१९८६	२६-३३
चिन्तन : सम्यक् जीवन दृष्टि	डॉ० हुकुमचंद संगवे	३३	११	१९८२	२८-३१
चौबीसवें जैन तीर्थंकर भगवान् महावीर का जन्म स्थान	डॉ० सीताराम राय	४०	१०	१९८९	१-७
जनजागरण और जैन महिलायें	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१२	४	१९६१	२७-३१
जनतंत्र के महान् उपासक भगवान् महावीर	डॉ० इन्द्रचंद्र शास्त्री	८	६	१९५७	३-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जर्मन जैन श्राविका डॉ० शार्लोटे क्राउझे	श्री हजारीमल बांठिया	४८	१०-१२	१९९७	८३-९२
जिनवल्लभसूरि की प्राकृत साहित्य सेवा	श्री अगरचंद नाहटा	१४	४	१९६३	३२-३५
जीवन और विवेक	श्री डोंगरे महाराज	३१	७	१९८०	१
जीवन का सत्य	डॉ० रतनकुमार जैन	३२	११	१९८१	२१-२५
जीवन की कला	उपाध्याय अमरमुनि	७	११	१९५६	३-६
जीवन के दो रूप-धन और धर्म	पं० मुनिश्री आईदान जी	८	२	१९५६	१६-१८
जीवनदर्शन	उपाध्याय अमरमुनि	३१	६	१९८०	७-९
जीवन रहस्य	श्री भगवानलाल मांकड	५	६	१९५४	३१-३४
जीवन दृष्टि	पं० बेचरदास दोशी	११	१२	१९६०	१८-२०
जीवन दृष्टि	उपाध्याय अमरमुनि	३३	८	१९८२	८-१०
जीवन में अनेकान्त	श्री मनोहरमुनि जी	१०	१२	१९५९	२६-२८
जीवन संग्राम	श्री भागचन्द जैन	९	३	१९५८	२६-२७
जीवन विकास की प्रेरणा: सहयोग	श्री प्रकाश मुनि जी	१२	५	१९६१	३६-३८
जैन अनुसंधान का दृष्टिकोण	डॉ० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य	४	७-८	१९५३	१५-१६
जैन आगम साहित्य में जनपद	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२९	९	१९७८	२०-२२
जैन आगम साहित्य में वर्णित दास-प्रथा	डॉ० इन्द्रेशचन्द्र सिंह	४१	१०-१२	१९९०	८५-९२
जैन आगमों में जननी एवं दीक्षा	डॉ० कोमलचन्द जैन	२७	३	१९७६	१९-२२

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन आगमों में मूल्यात्मक शिक्षा और वर्तमान सन्दर्भ	डॉ० सागरमल जैन	४५	४-६	१९९४	१६२-१७२
जैन आगमों में वर्णित जातिगत समता	डॉ० इन्द्रेशचन्द्र सिंह	४२	४-६	१९९१	६३-७२
जैन और बौद्ध दर्शन : एक तुलनात्मक अध्ययन	श्री सुभाषमुनि 'सुमन'	३८	१०	१९८७	६-१७
जैन उपाश्रय व्यवस्था और कर्मचारी तंत्र	श्री कृष्णलाल शर्मा	१७	८	१९६६	२७-३३
जैन एकता	श्री भँवरमल सिंघी	१०	११	१९५९	३५-३७
जैन एकता का प्रश्न	डॉ० सागरमल जैन	३४	३	१९८३	१-२७
जैन एकता का स्वरूप व उसके उपाय	स्व० श्री अगरचन्द नाहटा	३४	१२	१९८३	१-२१
जैन एकता संभव कैसे ?	मुनि रूपचन्द	३४	३	१९८३	२८-३२
जैन एकता : सूत्र व सुझाव	श्री जसकरण डागा	३४	१२	१९८३	२२-४१
जैन एवं बौद्ध धर्म में भिक्षुणी संघ की स्थापना	डॉ० अरुणप्रताप सिंह	३५	९	१९८४	१-१६
जैन ज्ञान भण्डारों पर एक दृष्टिपात	मुनि पुण्यविजय जी	५	२	१९५३	१-७
जैन और बौद्ध आगमों में विवाह पद्धति	श्री कोमलचन्द जैन	१४	४	१९६३	१८-२२
जैन तीर्थंकरों का जन्म क्षत्रियकुल में ही क्यों ?	श्री गणेशप्रसाद जैन	२९	८	१९७८	२१-२५
,,	,,	३१	६	१९८०	१५-१८
जैनत्व का गौरव और हम	श्री हर्षचन्द	३४	७	१९८३	२-५
जैनत्व या जैन चेतना	प्रो० विमलदास जैन	२	५	१९५१	२१-२६
जैन दर्शन में नारी मुक्ति	कु० चन्द्रलेखा पंत	२६	३	१९७५	१४-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन दर्शन में समता	श्री अभयकुमार जैन	२९	१	१९७७	२३-३३
जैन दिवाकर मुनिश्री चौथमल जी म०	श्री विपिन जारोली	३७	२	१९८५	६-९
जैन दृष्टि में नारी की अवधारणा	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	४३	७-९	१९९२	२५-२८
जैन धर्म और आज की दुनियाँ	श्री ऋषभचन्द्र	१५	१०	१९६४	३५-३६
जैनधर्म और उसका सामाजिक दृष्टिकोण	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१५	१	१९६३	९-१८
जैनधर्म और दर्शन की प्रासंगिकता-वर्तमान परिपेक्ष्य में	डॉ० इन्द्र	४३	७-९	१९९२	१-८
जैनधर्म और नारी	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१८	३	१९६७	३-९
जैनधर्म और युवावर्ग	श्री प्यारेलाल श्रीमाल 'सरस पंडित'	३४	३	१९८३	३५-३९
जैनधर्म और वर्ण व्यवस्था	पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री	२	६	१९५१	१५-२३
,,	,,	२	७	१९५१	२०-२६
जैनधर्म और सामाजिक समता	डॉ० सागरमल जैन	४५	४-६	१९९४	१४४-१६१
जैनधर्म भौगोलिक सीमा में आबद्ध क्यों ?	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२३	५	१९७२	३४-३८
जैनधर्म में नारी की भूमिका	डॉ० सागरमल जैन	४१	१०-१२	१९९०	१-४८
जैनधर्म में सामाजिक प्रवृत्ति की प्रेरणा	मुनिश्री नथमल	१८	८	१९६७	२०-२३
जैनधर्म में सामाजिक चिन्तन	डॉ० सागरमल जैन	४८	४-६	१९९७	१-१९
जैन पदों में रागों का प्रयोग	श्री प्यारेलाल श्रीमाल	२३	७	१९७२	११-१४
जैन पर्व दीपावली : उत्पत्ति एवं महत्त्व	डॉ० विनोदकुमार तिवारी	३७	२	१९८५	२-५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन परम्परा के विकास में स्त्रियों का योगदान	डॉ० अरुणप्रताप सिंह	४४	१०-१२	१९९३	१-७
जैन परम्परा में महाभारत कथा	डॉ० कल्याणीदेवी जायसवाल	४०	१०	१९८९	१४-१९
जैन पुराणों में राम कथा	श्री गणेशप्रसाद जैन	२०	५	१९६८	२३-२५
जैन पुराणों में समता	श्री देवीप्रसाद मिश्र	२९	१२	१९७८	१२-१७
जैन पौराणिक साहित्य में युद्ध	श्री धन्यकुमार राजेश	२१	४	१९७०	५-१७
जैन भिक्षुणी-संघ और उसमें नारियों के प्रवेश के कारण	श्री अरुणप्रताप सिंह	३३	४	१९८२	१२-१६
जैन भौगोलिक स्थानों की पहचान	डॉ० प्रेमसुमन जैन	३४	७	१९८३	६-११
जैन मन्दिर और हरिजन	प्रो० महेन्द्रकुमार जैन 'न्यायाचार्य'	२	१२	१९५१	२५-३०
जैन मुनि और माँसाहार परिहार	श्री कस्तूरमल बांठिया	१८	७	१९६७	१४-२५
जैन मुनि क्या कुछ कर सकता है ?	श्री मन्नूलाल जैन	३३	९	१९८२	१५-१८
जैन रक्षापर्व : वात्सल्य पूर्णिमा	श्री भूरचंद जैन	२९	१०	१९७८	१९-२२
जैन राजनीति में दूतों और गुप्तचरों का स्वरूप	डॉ० एमेशचन्द्र जैन	२७	४	१९७६	१६-२४
जैन रासरासक-परिभाषा, विकास और काव्यरूप	डॉ० प्रेमचंद जैन	२१	८	१९७०	३-९
जैन वाङ्मय का संगीत पक्ष	श्री प्यारेलाल श्रीमाल सरस पंडित '	३१	१	१९७९	२५-२७
जैन विद्या के निष्काम सेवक : लाला हरजसराय जैन	डॉ० सागरमल जैन	३७	८-९	१९८६	२१-२४
जैन शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा	श्री धनदेव कुमार	४	५	१९५३	१३-१६
जैन शिक्षा : उद्देश्य एवं पद्धतियाँ	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१९	५	१९६८	१९-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन संस्कृति	पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य	५	१२	१९५४	३-१३
जैन संस्कृति और परिवार व्यवस्था	श्री प्रेमसुमन जैन	१७	१-२	१९६५	३८-५१
जैन संस्कृति और प्रचार : एक चिन्तन	श्री गजेन्द्र मुनि	१८	९	१९६७	३०-३६
जैन संस्कृति और महावीर	श्री विजयमुनि शास्त्री	१३	६	१९६२	३३-४२
जैन संस्कृति और राजनीति	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१९	५	१९६८	२४-३१
जैन संस्कृति और विवाह	श्री गोकुलचंद जैन	१३	४	१९६२	८-२१
जैन संस्कृति का विस्तार	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१८	४	१९६७	३१-३७
जैन समाज और वैशाली	पं० पन्नालाल धर्मालंकार	३	७-८	१९५२	३६-३८
जैन समाज और सर्वोदय	सन्त विनोबा	१०	५	१९५९	३८-३९
जैन समाज का धर्म प्रचार	श्री समीर मुनि 'सुधाकर'	१७	१२	१९६६	१२-१४
जैन समाज के लिये नई दिशा	साहू शांतिप्रसाद जी	३	५	१९५२	३-७
जैन समाज द्वारा काव्य सेवा	श्री रूपचंद जैन	१७	६	१९६६	२०-२२
जैन समाज व्यवस्था	श्री बशिष्ठनारायण सिन्हा	१७	७	१९६६	३२-३६
जैन साधु और हरिजन	श्री माईदयाल जैन	३	१२	१९५२	१४-१६
जैन साधुओं का संस्थारूपी परिग्रह	,,	१२	८	१९६१	९-१०
जैन साहित्य और संस्कृति का जनजीवन पर प्रभाव	कु० सुधा जैन	२५	९	१९७४	१५-१८
जैन साहित्य में जनपद	डॉ० अच्छेलाल	२७	१	१९७५	१५-२४

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन साहित्य में शिशु	श्री उदयचंद जैन	२२	६	१९७१	२२-२९
जैन सिद्धान्तों का समाजव्यापी प्रयोग	मुनि नेमिचन्द्र	१८	४	१९६७	२६-३०
जैनागमों में महावीर के जीवनवृत्त की सामग्री	श्री अगरचंद नाहटा	७	६-७	१९५५	३४-३८
जैनाचार्य राजशेखरसूरि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ० अशोककुमार सिंह	४१	१०-१२	१९९०	९३-११०
जैसलमेर भण्डार का उद्धार	मुनि पुण्यविजय जी	४	७-८	१९५३	६३-७०
जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'	३३	४	१९८२	१०-११
ज्योतिर्धर महावीर	देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१७	१-२	१९६५	२६-३२
ज्ञान तपस्वी मुनिश्री पुण्यविजय जी	श्री रतिलाल दीपचंद देसाई	१८	६	१९६७	३४-३८
ज्ञानद्वीप की शिखा	श्री राजमल पवैया	३३	१	१९८१	१९
ढंढ़ण ऋषि की तितिक्षा	उपाध्याय श्री अमरमुनि	३३	९	१९८२	११-१४
णायकुमारचरिउ की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२३	१	१९७१	१४-१८
तमिलक्षेत्रीय जैन योगदान	श्री डी० जी० महाजन	२०	८	१९६९	५-१०
तीर्थंकर महावीर	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	३०	१०	१९७९	१४-१६
तीर्थंकर और उनकी शिक्षायें	श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री	१५	५-६	१९६४	७-१०
तीर्थंकर महावीर जन्मना ब्राह्मण या क्षत्रिय	श्रीसौभाग्यमल जैन	४२	१-३	१९९१	५१-५५
तीर्थंकर महावीर का निर्वाणदिवस 'दीपावली'	श्री गणेशप्रसाद जैन	३२	१	१९८१	२०-२३
तीर्थंकर महावीर का निर्वाण पर्व 'दीपावली' - एक समीक्षा	,,	३४	१	१९८२	१५-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
तीर्थंकरों की निश्चित संख्या क्यों ?	श्री रतिलाल म० शाह	२८	७	१९७७	२१-२६
तीर्थंकर महावीर की शिक्षाओं का सामाजिक महत्त्व	डॉ० विनोदकुमार तिवारी	३६	१०	१९८५	१२-१४
त्याग का मूल्य	उपाध्याय अमरमुनि	३१	४	१९८०	९-११
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में प्रतिपादित सांस्कृतिक - जीवन	डॉ० उमेशचन्द्र श्रीवास्तव	४३	४-६	१९९२	६९-८४
दक्षिण हिन्दुस्तान और जैनधर्म	पं० दलसुख मालवणिया	१	५	१९५०	१७-१९
दया-दान की मान्यता	श्री सतीशकुमार 'भैरव'	८	२	१९५६	३३-३६
दान की आत्मकथा	श्री भग्न हृदय	९	११-१२	१९५८	३३-३६
दान सम्बन्धी मान्यता पर विचार	श्री अगरचंद नाहटा	६	३	१९५५	३-१०
दार्शनिक पुरुष	मुनिश्री रामकृष्ण	३२	५	१९८१	३४
दार्शनिक क्षितिज का दीप्तिमान नक्षत्र	उपाध्याय श्री अमरमुनि	३२	५	१९८१	११-१३
दिगम्बर रहना क्या महावीर का आचार था ?	श्री रतिलाल म० शाह	२७	५	१९७६	२६-३०
द्विसन्धानमहाकाव्य में राज्य और राजा का स्वरूप	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२५	८	१९७४	३-१२
दीपमाला : एक अध्यात्मिक पर्व	पं० श्री ज्ञानमुनि जी महाराज	७	१	१९५५	२५-२८
दीपावली : एक साधना पर्व	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	८	१	१९५६	३३-३५
दुःख का जनक लोभ	आचार्य श्री आनन्दऋषि	३२	२	१९८०	५-१२
दुर्दान्त दस्यु दया का देवता बना	श्री वीरेन्द्रकुमार जैन	३३	६	१९८२	३९-४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
दुर्बल को सताना क्षत्रिय धर्म नहीं	,,	३६	४	१९८५	२-४
दृढ़ प्रतिज्ञ केशव	मुनिश्री महेन्द्रकुमार 'प्रथम'	३६	८	१९८५	१५-२१
देवचन्द्रकृत यंत्रप्रकृति का वस्त्र टिप्पणक	श्री अगरचन्द नाहटा	३१	१	१९७९	२८-२९
धर्ममय समाज रचना की आधारशिला-क्षमापना	मुनिश्री नेमिचन्दजी	१३	११	१९६२	३२-३६
धर्म और युवा पीढ़ी	श्रीमती बीना निर्मल	३३	१२	१९८२	७-८
धर्म एक आधार : स्वस्थ समाज रचना	साध्वी श्री मंजुला	१७	१२	१९६६	२८-३०
धर्म का पुनरुद्धार और संस्कृति का नवनिर्माण	पं० दलसुख मालवणिया	१	३	१९५०	९-१३
धर्म का मान	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया	३५	९	१९८४	१७-१८
धर्म का सर्वोदय स्वरूप	पं० चैनसुखदास जैन	१४	८	१९६३	१-२
धर्म के स्थान पर संस्कृति	काका कालेलकर	२	८	१९५१	३६
धर्म को समाज सेवा से जोड़ा जाय	श्री जिनेन्द्र कुमार	३६	४	१९८५	६-८
धर्म पुरुष और कर्म पुरुष	पं० फूलचंदजी 'श्रमण'	६	१०	१९५५	२१-२२
ध्यान योगी महावीर	मुनिश्री नथमल जी	१२	६-७	१९६१	२८-३०
नई समाज व्यवस्था	कुमार प्रियदर्शी	९	११-१२	१९५८	४२-५६
नमस्कारमंत्र का मौलिक परम अर्थ	पं० सूरजचंद्र 'सत्यप्रेमी'	६	१२	१९५५	१८-२०
नया विहान-नया समाज	श्री बद्रीप्रसाद स्वामी	१०	१०	१९५९	३२-३५
नर्क का प्रश्न	श्री सौभाग्यमल जैन	३३	१	१९८१	२६-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
नागदत्त	मुनि महेन्द्रकुमार	३६	१	१९८४	२-७
नाथ कौन ?	उपाध्याय श्री अमरमुनि	३१	९	१९८०	१२-१६
नारी और त्याग मार्ग	श्री पृथ्वीराज जैन	२	३	१९५१	१४-२०
नारी उत्क्रान्ति के मसीहा भगवान् महावीर	दर्शनाचार्य मुनि योगेशकुमार	३५	६	१९८४	२४-२६
नारी का महत्त्व	श्री आईदान जी महाराज	५	३	१९५४	३०-३६
नारी का स्थान घर है या बाहर?	सत्यवती जैन	५	६	१९५४	३५
नारी की प्रतिष्ठा	श्री किशोरीलाल मशरूवाला	२	९	१९५१	४-८
नारी के अतीत की झांकी-सतीप्रथा	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	२	२	१९५०	११-१८
नारी जागरण	सुश्री प्रेमकुमारी दिवाकर	३	२	१९५१	२६-३१
नारी जीवन का आदर्श	डॉ० सन्तोषकुमार 'चन्द्र'	३	१२	१९५२	३१-३४
निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी संघ	मुनिश्री पुण्यविजय जी	१७	१०	१९६६	३२-३७
नैतिक उत्थान और शिक्षण संस्थायें	प्रो० पृथ्वीराज जैन	३	११	१९५२	२७-३०
पंजाब में स्त्री शिक्षा	श्री रामस्वरूप जैन	१	१२	१९५०	३८-४०
पंडित कौन ?	महात्मा भगवानदीन	३२	१	१९८०	१-४
पंडितरत्न सुखलाल जी : एक सुखद संस्मरण	पं० के० भुजबलि शास्त्री	३२	५	१९८१	४७
पं० सुखलाल जी -एक संस्मरण	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	३२	५	१९८१	२८-३२
पं० सुखलाल जी के तीन व्याख्यान - मालाओं के पठनीय ग्रंथ	श्री अगरचन्द नाहटा	३२	५	१९८०	५७

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पउमचरिउ की अवान्तर कथाओं में भौगोलिक सामाग्री	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१८	१२	१९६७	३-१६
पउमचरियं के कुछ भौगोलिक स्थल	,,	१६	११	१९६५	१७-२१
पउमचरियं में अनार्य जातियाँ	,,	१८	५	१९६७	२-५
पउमचरिउ में नारी	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२५	६	१९७४	२४-२७
पउमचरियं में वर्णित राम की वनयात्रा	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१६	८	१९६५	३-८
,,	,,	१६	९	१९६५	१३-१८
पद्मचरित में वस्त्र और आभूषण	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२५	९	१९७४	३-१०
पद्मचरित में शकुनविद्या	,,	२४	११	१९७३	२९-३५
पर्यावरण एवं अहिंसा	डॉ० डी०आर० भण्डारी	४३	१-३	१९९२	८१-९०
पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या और जैनधर्म	डॉ० सागरमल जैन	४५	४-६	१९९४	१३५-१४३
पर्युषण पर्व और आज की नारी	सुश्री शरबतीदेवी जैन	७	११	१९५६	३४-३५
पर्युषण का सामाजिक महत्त्व	श्री जयन्त मुनि	७	११	१९५६	१०-१५
पर्युषण पर्व पर एक ऐतिहासिक दृष्टिपात	पं० मुनिश्री रामकृष्ण जी महाराज	७	११	१९५६	१७-२१
पर्युषण पर्व की आराधना	पं० मुनिश्री फूलचन्द्र जी 'श्रमण'	६	११	१९५५	१४-१६
पर्युषण पर्व पर दो महत्त्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान	श्री अगरचंद नाहटा	७	११	१९५६	३७-३९
पर्युषण मीमांसा	मुनिश्री कन्हैयालाल जी 'कमल'	६	११	१९५५	१७-२१
पर्व और धर्म चर्या	श्री जयभगवान जैन	७	१२	१९५६	३-९
पल्लवनरेश महेन्द्रवर्मन "प्रथम" कृत मत्तविलास-प्रहसन में वर्णित धर्म और समाज	श्री दिनेशचन्द्र चौबीसा	४४	१-३	१९९३	३५-४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पारिवारिक जीवन सुखी कैसे हो?	श्रीमती यमुनादेवी पाठक	१	७	१९५०	२९-३३
पाण्डवपुराण में राजनैतिक स्थिति	सुश्री रीता विश्नोई	४२	१-३	१९९१	७५-८६
पाप का घट	मुनि महेन्द्रकुमार	३६	३	१९८५	११-१३
पार्श्वनाथचरित में प्रतिपादित समाज	श्री जयकुमार जैन	२८	११	१९७७	३-९
पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान के मार्गदर्शक	श्री गुलाबचन्द जैन	२९	९	१९७८	३-५
पं०सुखलाल जी पितृहीन	डॉ० इन्द्र	५	३	१९५४	२५-२९
पुरुषार्थ के प्रतीक पं० सुखलाल जी	साहू श्रेयांसप्रसाद जैन	३२	५	१९८२	४८-४९
पौराणिक साहित्य में राजनीति	श्री धन्यकुमार राजेश	२३	१	१९७१	३-१३
प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलाल जी : एक परिचय	श्री गुलाबचन्द जैन	३२	५	१९८१	५५
प्रज्ञापुरुष पं० जगन्नाथ जी उपाध्याय की दृष्टि में - बुद्ध व्यक्ति नहीं प्रक्रिया	डॉ० सागरमल जैन	४६	४-६	१९९५	१६६-१६९
प्रतिक्रिया है दु:ख	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३३	९	१९८२	२-६
प्रज्ञापुरुष	साध्वीरत्न श्री विचक्षण श्री जी	३२	५	१९८१	३५
प्रज्ञामूर्ति	श्री रमेशमुनि शास्त्री	३२	५	१९८१	३३
प्रभावशाली व्यक्तित्व (मनोवैज्ञानिक लेख)	श्री कोमल जैन	८	५	१९५७	१२-१४
प्राकृत हिन्दी कोश के महान् प्रणेता : पं० हरगोविन्ददास	श्री अगरचन्द नाहटा	२८	५	१९७७	१९-२२
प्रागैतिहासिक भारत में सामाजिक मूल्य एवं परम्पराएँ	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	४३	१०-१२	१९९२	१३-१९
प्राचीन जैन आगमों में राजस्व व्यवस्था	डॉ० अनिलकुमार सिंह	४७	१-३	१९९६	११-१९
प्राचीन जैन ग्रंथों में कृषि	डॉ० अच्छेलाल यादव	२४	४	१९७३	२४-२७

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पर्व और धर्म चर्या	श्री जयभगवान जैन	७	१२	१९५५	३-९
पल्लवनरेश महेन्द्रवर्मन ''प्रथम'' कृत मत्तविलास-प्रहसन में वर्णित धर्म और समाज	श्री दिनेशचन्द्र चौबीसा	४४	१-३	१९९३	३५-४१
पारिवारिक जीवन सुखी कैसे हो?	श्रीमती यमुनादेवी पाठक	१	७	१९५०	२९-३३
पाण्डवपुराण में राजनैतिक स्थिति	रीता बिश्नोई	४२	१-३	१९९१	७५-८६
पाप का घट	मुनि महेन्द्रकुमार	३६	३	१९८५	११-१३
पार्श्वनाथचरित में प्रतिपादित समाज	श्री जयकुमार जैन	२८	११	१९७७	३-९
पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान के मार्गदर्शक पं०सुखलाल जी	श्री गुलाबचन्द्र जैन	२९	९	१९७८	३-५
पितृहीन	डॉ० इन्द्र	५	३	१९५४	२५-२९
पुरुषार्थ के प्रतीक पं० सुखलाल जी	साहू श्रेयांसप्रसाद जैन	३२	५	१९८१	४८-४९
पौराणिक साहित्य में राजनीति	श्री धन्यकुमार राजेश	२३	१	१९७१	३-१३
प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलाल जी : एक परिचय	श्री गुलाबचन्द्र जैन	३२	५	१९८१	५५
प्रज्ञापुरुष पं० जगन्नाथ जी उपाध्याय की दृष्टि में-बुद्ध व्यक्ति नहीं प्रक्रिया	डॉ० सागरमल जैन	४६	४-६	१९९५	१६६-१६९
प्रतिक्रिया है दुःख	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३३	९	१९८२	२-६
प्रज्ञा पुरुष	साध्वी रत्न श्री विचक्षण श्री जी	३२	५	१९८१	३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्रज्ञामूर्ति	श्री रमेशमुनि जी शास्त्री	३२	५	१९८१	३३
प्रभावशाली व्यक्तित्व (मनोवैज्ञानिक लेख)	श्री कोमल जैन	८	५	१९५७	१२-१४
प्राकृत हिन्दी कोश के महान् प्रणेता : पं०हरगोविन्ददास	श्री अगरचन्द नाहटा	२८	५	१९७७	१९-२२
प्रागैतिहासिक भारत में सामाजिक मूल्य एवं परम्पराएँ	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	४३	१०-१२	१९९२	१३-१९
प्राचीन जैन आगमों में राजस्व व्यवस्था	डॉ० अनिलकुमार सिंह	४७	१-३	१९९६	११-१९
प्राचीन जैन ग्रंथों में कृषि	डॉ० अच्छेलाल यादव	२४	४	१९७३	२४-२७
प्राचीन जैन साहित्य में उत्सव-महोत्सव	डॉ० झिनकू यादव	२३	११	१९७२	२९-३३
प्राचीन जैन साहित्य में वर्णित आर्थिक जीवन : एक अध्ययन	श्रीमती कमलप्रभा जैन	३७	८-९	१९८६	१०-१९
प्राचीन जैन साहित्य में शिक्षा का स्वरूप	डॉ० राजदेव दुबे	३६	१२	१९८५	१६-२४
प्राचीन प्राकृत ग्रंथों में उपलब्ध भगवान् महावीर का जीवन चरित	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	२८	६	१९७७	३-१०
प्राचीन भारत में अपराध और दंड	डॉ० प्रमोदमोहन पाण्डेय	२४	६	१९७३	१७-२१
प्राचीन भारतवर्ष में गणतंत्र का आदर्श	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२४	९	१९७३	९-१२
प्राणप्रिय काव्य के रचयिता व रचनाकाल	श्री अगरचंद नाहटा	२३	९	१९७२	१७-२०
प्राणीमात्र के विकास का आधार जैनधर्म	डॉ० महेन्द्रसागर प्रचंडिया	३२	२	१९८०	१६-१८
बलभद्र और हरिण	उपाध्याय अमरमुनि	३३	१२	१९८२	९-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
बत्तीस प्रकार की नाट्यविधि	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	५	१०	१९५४	३-९
बन्दर का रोना	मुनि महेन्द्रकुमार	३६	२	१९८४	८-१०
बलिदान की अमर गाथा	उपाध्याय श्री अमरमुनि	३२	९	१९८१	१७-२३
वसन्तविलासकार बालचन्द्र सूरिः व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ० यदुनाथप्रसाद दुबे	४२	४-६	१९९१	२१-३२
बालकों के संस्कार निर्माण में अभिभावक, शिक्षक एवं समाज की भूमिका	डॉ० सागरमल जैन	३१	३	१९८०	२६-३८
बिना विचारे जो करै	उपाध्याय अमरमुनि	३३	७	१९८१	१२-१४
बुद्ध और महावीर	डॉ० देवसहाय त्रिवेद	३१	१	१९७९	३०-३४
बह्मदत्त	मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी 'प्रथम'	३४	३	१९८३	४०-४२
भक्तामरस्तोत्र : एक अध्ययन	डॉ० हरिशंकर पाण्डेय	४६	७-९	१९९५	७-९
भरतेशवैभव में प्रतिपादित सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था	श्री सुपार्श्वकुमार जैन	२६	१०	१९७५	३-८
भगवान् महावीर	श्री मदनलाल जैन	७	६-७	१९५६	५५-५६
भगवान् महावीर	श्री महेन्द्रराजा जैन	१३	६	१९६२	४७-५३
भगवान् महावीर और उनका शांति संदेश	पं० श्री ज्ञानमुनि जी	६	६-७	१९५५	५-१७
भगवान् महावीर और जातिभेद	श्री पृथ्वीराज जैन	१	६	१९५०	११-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर और नारी जाति	श्री विमल जैन	१५	१२	१९६४	३५-३८
भगवान् महावीर और उनका उपदेश	डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी	१४	८	१९६३	१५-१७
भगवान् महावीर और युवा अध्यात्म	श्री जमनालाल जैन	३३	६	१९८२	५१-५५
भगवान् महावीर और विश्वशांति	डॉ० निजामुद्दीन	३५	१	१९८३	१०-१३
भगवान् महावीर और समता का आचरण	मुनि नेमिचंद	१५	१०	१९६४	३०-३४
भगवान् महावीर	उपाध्याय अमरमुनि	३४	१	१९८२	५-१४
भगवान् महावीर-उनके जीवन की विविध भूमिकाएं	पं० सुखलाल संघवी	३	६	१९५२	९-१६
भगवान् महावीर का आदर्श और हम	श्रीमती कांता जैन	२	६	१९५१	३३-३६
भगवान् महावीर का आदर्श जीवन	श्री पूनमचन्द मुणोत जैन	३६	७	१९८५	२२-२३
भगवान् महावीर का उपदेश और आधुनिक समाज	पं० दलसुखभाई मालवणिया	३२	६	१९८१	१७-२२
भगवान् महावीर का जीवन और दर्शन	डॉ० सागरमल जैन	४५	१-३	१९९४	१४-१७
भगवान् महावीर का निर्वाण कल्याणक	उपाध्याय अमरमुनि	३५	१	१९८३	२-६
भगवान् महावीर का विचार तथा कृतित्व समस्त विश्व के लिए अनुपम धरोहर	डॉ० रामकुमार वर्मा	३१	१	१९७९	३६-३७
भगवान् महावीर का व्यक्तित्व	डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी	६	६-७	१९५५	४१-४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर का व्यक्तित्व	मुनि कन्हैयालाल जी 'कमल'	८	६	१९५७	१७-२३
भगवान् महावीर का समन्यवाद	श्री वशिष्ठनारायण सिन्हा	१०	७-८	१९५९	४६-५०
भगवान् महावीर की जन्मकालीन परिस्थितियाँ	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१३	६	१९६२	२२-२६
भगवान् महावीर की तलस्पर्शिनी अहिंसा दृष्टि	मुनिश्री नगराज जी	३८	१	१९८६	२-४
भगवान् महावीर की दिव्य देशना	पं० अमृतलाल शास्त्री	८	६	१९५७	३३-३४
भगवान् महावीर की देन	मुनि वसन्तविजय	१५	१०	१९६४	३७-४०
भगवान् महावीर की मंगल विरासत	पं० सुखलाल जी	२६	१-२	१९७४	३-९
भगवान् महावीर की महामानवता	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	१४	६-७	१९६३	९-११
भगवान् महावीर की व्यापक दृष्टि	श्यामवृक्ष मौर्य	३५	६	१९८४	२९-३१
भगवान् महावीर के आठ संदेश	श्री ज्ञानमुनि	१५	९	१९६४	२८-३२
भगवान् महावीर के आदर्श और यथार्थ की पृष्ठभूमि	मुनिश्री नगराज जी	३५	६	१९८४	२०-२२
भगवान् महावीर के जीवन का एक भ्रान्त दृश्य	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	१५	७-८	१९६४	३३-४६
भगवान् महावीर के निर्वाण का २५००वां वर्ष	श्री गोपीचंद धारीवाल	२३	९	१९७२	२६-३१
भगवान् महावीर-जीवन और सिद्धान्त	श्री धर्मचन्द्र 'मुखर'	६	६-७	१९५५	३६-४०
भगवान् महावीर : जीवन सम्बन्धी प्रमुख घटनाएं	डॉ० मंगलप्रकाश मेहता	३६	७	१९८५	१२-१५
भगवान् महावीर : समताधर्म के प्ररूपक	पं० दलसुख मालवणिया	२६	१-२	१९७४	१८-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् या सामाजिक क्रांतिकारी	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	११	६	१९६०	२५-२७
भगवान् महावीर के जीवन चरित्र	श्री कस्तूरमल बांठिया	१५	५-६	१९६४	४९-६३
"	,,	२०	३	१९६९	५-२२
भरतेशवैभव में प्रतिपादित सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था	श्री सुपार्श्वकुमार जैन	२६	११	१९७५	३-८
भाग्यवान अन्धा पुरुष	मुनि महेन्द्र कुमार	३५	१	१९८३	१४-१६
भाग्य बनाम पुरुषार्थ	डॉ० सागरमल जैन	३६	९	१९८५	२-६
भारत की अहिंसक संस्कृति	मुनिश्री रामकृष्णजी म० सा०	७	९	१९५६	२०-२३
भारतीय चिकित्सा शास्त्र	श्री अत्रिदेव विद्यालंकार	४	३	१९५३	२९-३४
भारत की अहिंसक संस्कृति	मुनिश्री रामकृष्णजी म० सा०	७	८	१९५६	२१-२५
भारतीय दर्शनों का समन्वयवादी स्थितप्रज्ञ पुरुष	पं० श्री विजयमुनि जी	३२	५	१९८१	१७-२७
भारतीय मनीषा के उज्ज्वलतम प्रतीक पं० सुखलाल जी	डॉ० रामजी सिंह	३२	५	१९८१	४४-४६
भारतीय संस्कृति	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	६	३	१९५५	१८-३१
भारतीय संस्कृति का दृष्टिकोण	,,	६	९	१९५५	३-१६
भारतीय संस्कृति का प्रहरी	कविरत्न श्री अमरमुनिजी	६	१२	१९५५	२६-२८
भारतीय संस्कृति में दान का महत्व	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२०	६	१९६९	८-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भारतीय राजनीति में जैन संस्कृति का योगदान	श्री इन्द्रेशचन्द्र सिंह	४१	७-९	१९९०	२७-३४
भारतीय संस्कृति का समन्वित रूप	डॉ० सागरमल जैन	४-५	४-६	१९९४	१२९-१३४
भारतीय संस्कृति के विकास में श्रमण धारा का महत्व	डॉ० कोमलचन्द जैन	३५	१२	१९८४	१५-२४
भिगमंगा मन	डॉ० रतनकुमार जैन	३३	४	१९८२	२१-२८
भिक्षुणी संघ की उत्पत्ति एवं विकास	डॉ० अरुणप्रताप सिंह	३१	९	१९८०	१७-२०
भिक्षु संघ और समाजसेवा	भिक्षु जगदीश काश्यप	१	४	१९५०	१३-१६
मंगलमय महावीर	प्रो० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य	३	६	१९५२	२३-२४
मंदिरों के झगड़े और जैन समाज	श्री ऋषभदास रांका	२	६	१९५१	२८-३२
मन की लड़ाई	उपाध्याय अमरमुनि	३१	१०	१९८०	१३-१६
मनुष्य प्रकृति से शाकहारी	डॉ० महेन्द्रसागर प्रचण्डिया	३२	६	१९८१	३२-३४
ममता	महात्मा भगवानदीन	३२	२	१९८०	३-४
मनुष्य की परिभाषा	श्री महावीरप्रसाद गैरोला	३१	१२	१९८०	१४-१६
मनुष्य की प्रगति के प्रति भयंकर विद्रोह	मुनिश्री आईदान जी महाराज	५	६	१९५४	१८-१९
महत्वपूर्ण जैन कला के प्रति जैन समाज की उपेक्षा वृत्ति	श्री अगरचंद नाहटा	३१	७	१९८०	१३-१४
महाकवि स्वयंभू और नारी	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२५	४	१९७४	३-७
महाकवि रत्नाकर के कतिपय अध्यात्म गीत	पं० के० भुजबली शास्त्री	२०	२	१९६८	२३-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महात्मा कन्फ्यूशियस	श्री महेशशरण सक्सेना	६	४	१९५५	१४-१७
महात्मा गॉधी का मानवतावादी राजनीतिक चिन्तन और जैनदर्शन एक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ० ऊषा सिंह	४७	७-९	१९९६	५५-५९
महामानव महावीर का जीवन प्रदेय	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया	३६	७	१९८५	७-९
महावीर और उनकी देशना	श्री जमनालाल जैन	२५	५	१९७४	२१-२४
महावीर और उनके सिद्धान्त	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२४	६	१९७३	३-८
महावीर और क्षमा	श्री भूपराज जैन	४	५	१९५३	३०-३४
महावीर और बुद्ध	श्री सुभाषमुनि सुमन	३७	७	१९८६	१२-१६
महावीर का अखण्ड व्यक्तित्त्व	उपाध्यायश्री अमरमुनि जी	३२	६	१९८१	११-१६
महावीर का जीवन दर्शन	,,	३५	६	१९८४	३-१४
महावीर का जीवन दर्शन	डॉ० सागरमल जैन	३७	६	१९८६	७-९
महावीर का दर्शन, सामाजिक परिपेक्ष्य में	,,	३२	६	१९८१	२-९
महावीर का मंगल उपदेश	डॉ० हरिशंकर वर्मा	१३	७-८	१९६२	४९-५०
महावीर का वीरत्व	डॉ० भानीराम वर्मा	१९	९	१९६८	२२-२७
महावीर का संदेश	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	६	६-७	१९५५	२४-३४
महावीर का साम्यवाद	श्री सुन्दरलाल जैन	५	९	१९५४	२८-३१
महावीर की जय	डॉ० इन्द्र	५	८	१९५४	३१-३३

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महावीर की वाणी	श्री कपूरचन्द जैन	३२	६	१९८१	२३-२६
महावीर क्षत्रिय पुत्र थे या ब्राह्मणपुत्र ?	डॉ० मोहनलाल मेहता	२६	१-२	१९७४	३४-३८
महावीर के ये उत्तराधिकारी	मुनि सुरेशचन्द्र शास्त्री	६	६-७	१९५५	५७-६०
महावीर के जीवन पर नया प्रकाश	श्री कस्तूरमल बांठिया	१२	९	१९६१	३१-३३
महावीर के सिद्धान्त-युगीन संदर्भ में	डॉ० सागरमल जैन	३३	६	१९८२	३-२७
महावीर जयन्ती	स्व० श्री जिनेन्द्रवर्णी	३५	६	१९८४	१५-१९
महावीर भूले ?	श्री कस्तूरमल बांठिया	७	३	१९५६	२२-२९
,,	,,	८	२	१९५६	४-१५
महावीर भूले !	प्रो० दलसुखभाई मालवणिया	७	६-७	१९५६	५१-५४
महावीर महान् थे	प्रो० विमलदास कोंदिया	८	६	१९५७	५०-५२
महावीर विवाहित थे या अविवाहित	श्री रतिलाल म० शाह	२६	६	१९७५	१२-१६
महिलाओं की मर्यादा	श्रीमती शकुन्तला मोहन	१२	४	१९६१	३२-३३
मानव जाति के अभ्युदय का पर्व 'दीपावली'	दर्शनाचार्य मुनि योगेशकुमार	३५	१२	१९८४	११-१४
मानव जीवन का आधार	श्री पृथ्वीराज जैन	१	३	१९५०	२५-२७
मानव धर्म का सार	श्री जगदीशसहाय	३२	११	१९८१	६-१५
मानव संस्कृति और महावीर	प्रो० देवेन्द्रकुमार जैन	७	७	१९५६	२२-२५
,,	,,	११	७-८	१९६०	२१-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मानव संस्कृति का विकास	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२८	२	१९७६	३-१५
मॉन्तेसरि आन्दोलन	श्री ए० एम० योस्तन	८	३-४	१९५७	६७-७९
मॉन्तेसरि शिक्षा के ५० वर्ष	,,	८	३-४	१९५७	६१-६६
मॉन्तेसरि शिक्षा-पद्धति	कु० ऊषा मेहरा	८	३-४	१९५७	३८-४८
माँस का मूल्य	उपाध्याय अमरमुनि जी	३१	३	१९८०	२२-२५
मुनिश्री चौथमल जी की जन्म शताब्दी	श्री गुलाबचन्द जी	३०	३	१९७९	२४-२७
मुनिश्री देशपाल : जीवन और कृतित्व	डॉ० सनत्कुमार रंगाटिया	३२	५	१९८१	६२-६९
मुलाकात महावीर से	श्री शरदकुमार साधक	३६	६	१९८५	२-६
मूर्त-अंकनों में तीर्थंकर महावीर के जीवन-दृश्य	डॉ० मारुतिनन्दनप्रसाद तिवारी	२७	६	१९७६	२१-२५
मेघकुमार का आध्यात्मिक जागरण	श्री विजय मुनि	८	९	१९५७	२५-२७
मेरी कुछ अनुभूतियाँ	श्री शादीलाल जैन	१४	११-१२	१९६३	८८-९१
मोक्ष	,,	९	९	१९५८	१८
मौलिक चिन्तन की आवश्यकता	श्री अगरचंद नाहटा	१४	९	१९६३	२०-२३
यह धर्म प्राण देश है	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	२	९	१९५१	२८-३०
युगपुरुष आचार्यसम्राट आत्रदऋषि जी म०	उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी महाराज	४३	१-३	१९९२	१०३-१०५
युगपुरुष भगवान् महावीर	श्री पृथ्वीराज जैन	२	६	१९५१	२४-२७
युगीनपरिवेश में महावीर स्वामी के सिद्धान्त	डॉ० सागरमल जैन	४६	७-९	१९९५	१-६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
युद्ध और युद्धनीति	श्री इन्द्रेशचन्द्र सिंह	४०	१२	१९८९	२६-३६
राक्षस : एक मानव वंश	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१८	१-२	१९६६	८-१२
रामकथा के वानर : एक मानव जाति	,,	१८	१०	१९६७	९-१२
रामकथाविषयक कतिपय भ्रांत धारणायें	,,	१६	१२	१९६५	३२-३४
राजगृह	श्री गणेशप्रसाद जैन	२४	२	१९७२	१६-२७
राज्य का त्याग : त्यागी से भय	श्री गणेश ललवानी	३४	९	१९८३	१४-१९
राजा मेघरथ का बलिदान	उपाध्यायश्री अमरमुनि	३२	२	१९८०	१३-१५
रामसनेही सम्प्रदाय के रेणशाखा के दो सरावगी आचार्य	श्री अगरचंद नाहटा	२९	७	१९७८	१२-१६
राष्ट्रनिर्माण और जैन	श्री माईदयाल जैन	११	६	१९६०	४९-५६
राष्ट्रभाषा के आद्यजनक भगवान् महावीर	डॉ० रतिलाल म० शाह	२४	४	१९७३	२८-३१
राष्ट्रीय विकास यात्रा में जैन धर्म एवं जैन पत्रकारों का योगदान	श्री जिनेन्द्र कुमार	३६	३	१९८५	६-१०
रूढ़िच्छेदक महावीर	पं० बेचरदास दोशी	३	६	१९५२	३२-३७
लवण एवं अंकुश की देवविजय का भौगोलिक परिचय	डॉ० के० ऋषभचंद्र	१६	३	१९६५	३-१५
लोक कल्याण के लिए श्रमण संस्कृति	भिक्षु जगदीश काश्यप	१	१	१९४९	१९-२१
वर्ण और जातिवाद : जैन दृष्टि	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२९	७	१९७८	१७-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वर्ण विचार	श्री रमेशचंद्र जैन	२४	१	१९७२	७-११
वर्तमान अशान्ति का एकमात्र समाधान अहिंसा	श्री कस्तूरीनाथ गोस्वामी	३४	५	१९८३	१३-१६
वर्तमान युग के सन्दर्भ में भगवान् महावीर के उपदेश	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२५	८	१९७४	२८-३४
वर्तमान सन्दर्भ और भगवान् महावीर की अहिंसा	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया	३५	६	१९८४	२७-२८
वर्धमान : चिन्तन खण्ड	श्री नरेशचन्द्र मिश्र	१९	६	१९६८	१-४
वर्धमान से महावीर कैसे बने ?	श्री जिनविजयसेनसूरि	१५	५-६	१९६४	६९-७५
वरांङ्गचरित में अठारह श्रेणियों के प्रधान : एक विश्लेषण	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२६	७	१९७५	३-८
वराङ्गचरित में राजनीति	"	२५	११	१९७४	८-१६
वसुराजा	मुनि महेन्द्रकुमार	३५	४	१९८४	९
वादिराज सूरि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	श्री उदयचन्द 'प्रभाकर'	२८	७	१९७७	३-८
विद्वत् रत्नमाला का एक अमूल्य रत्न	विद्यानन्द मुनि	३२	५	१९८१	५३
विद्याधर : एक मानव जाति	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१८	४	१९६७	१८-२०
विद्यामूर्ति पं० सुखलाल जी	पं० दलसुख मालवणिया	३	४	१९५२	१५-१८
विद्यावारिधि एवं प्रज्ञापुत्र	मुनिश्री नगराज जी	३२	५	१९८१	१६
विमलसूरि के पउमचरिउ का भौगोलिक अध्ययन	डॉ० कामताप्रसाद मिश्र	३२	१२	१९८१	१२-२०
विवाह और कन्या का अधिकार	सुश्री प्रेमकुमारी दिवाकर	२	१२	१९५१	२५-३०
विवाह-भारतीयेतर परम्परायें	डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा	१६	८	१९६५	२४-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	,,	१६	९	१९६५	१९-२८
विश्वशांति का आधार-गाँधीवाद	श्री नरेन्द्रकुमार जैन	५	३	१९५४	३७-४०
विश्व अहिंसा संघ और प्रवृत्तियाँ	डॉ० बूलचन्द जैन	१४	८	१९६३	६-८
वीतराग महावीर की दृष्टि	श्री ज्ञान मुनि	१०	६	१९५९	११-१३
वीरसंघ और गणधर	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	८	६	१९५७	३५-३८
वैदिक साहित्य में जैन परम्परा	प्रो० दयानन्द भार्गव	४३	७-९	१९९२	९-१३
वैशाली के गणतंत्र की एक झाँकी	डॉ० इन्द्र	५	४	१९५४	२८-३०
व्यक्ति और समाज	श्री रतन पहाड़ी	१	८	१९५०	२०-२४
व्यक्ति और समाज	डॉ० सागरमल जैन	३४	२	१९८२	३-४
व्यक्ति पहले या समाज	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२५	१२	१९७४	२८-३१
शान्ति की खोज में	श्री प्रवीणऋषि जी	३१	१२	१९८०	१७-१९
शांति के अग्रदूत-भगवान् महावीर	सुश्री शशिप्रभा जैन	१४	६-७	१९६३	४९-५२
शासनप्रभावक आचार्य जिनप्रभसूरि	श्री अगरचन्द नाहटा	२८	१	१९७६	१३-२०
शास्त्र और सामाजिक क्रान्ति	पं० सुखलाल जी	१२	५	१९६१	९-१२
शिक्षा और उसका उद्देश्य	श्री एस० आर० शास्त्री	८	७-८	१९५७	४-७
शिक्षा का जहर	श्री उमाशंकर त्रिपाठी	७	३	१९५६	३०
शिक्षा के दो रूप	,,	७	२	१९५५	२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
शिक्षा के साधन	,,	३	२	१९५१	१३-१७
शिशु और संस्कृति	श्री एस० आर० स्वामी	८	३-४	१९५७	१०-१४
शुभकामना	प्रो० देवेन्द्रकुमार जैन	६	१	१९५४	३१-३३
श्रमण	कुमारी सत्य जैन	३	५	१९५२	२३
श्रमण और श्रमणोपासक	श्री कस्तूरमल बांठिया	१८	९	१९६७	२५-२९
श्रमण जीवन में अधिकरण का उपशमन	पं० मुनि कन्हैयालालजी म०'कमल'	७	११	१९५६	२३-२७
श्रमण भगवान् महावीर	पं० बेचरदास दोशी	२६	१-२	१९७४	१०-१७
श्रमण भगवान् महावीर की शिष्य संपदा	मुनि फूलचन्दजी 'श्रमण'	७	१	१९५५	३०
श्रमण भगवान् महावीर के चारित्रिक अलंकरण-क्रमशः	रविशंकर मिश्र	३३	६	१९८२	१-२
,,	,,	३५	६	१९८४	१-२
श्रमण-संघ	डॉ० मोहनलाल मेहता	२८	११	१९७७	१८-२९
श्रमण संघ की शिक्षा-दीक्षा का प्रश्न	पं० मुनिश्री सुरेशचन्द्र जी महाराज	७	१२	१९५६	१६-१७
श्रमण संस्कृति और नया संविधान	श्री पृथ्वीराज जैन	१	५	१९५०	९-१५
श्रमण संस्कृति और नारी	डॉ० कोमलचंद जैन	२३	७	१९७२	६-१०
श्रमण संस्कृति का भावी विकास	पं० कृष्णचन्द्राचार्य	९	११-१२	१९५८	७३-७४
श्रमण संस्कृति का केन्द्र-विपुलाचल और उसका पड़ोस	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	२	१	१९५०	१५-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्रमण संस्कृति का सार	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२०	५	१९६९	८-१७
श्रमण सस्कृति का हार्द	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१६	५	१९६५	२-११
श्रमण संस्कृति की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि	श्री मनोहर मुनिजी	८	७-८	१९५७	३५-३८
श्रमण संस्कृति की मूल संवेदना	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२३	१०	१९७२	१६-१७
श्रमण संस्कृति की पृष्ठभूमि	श्रीमती उर्मिला जैन	३३	१२	१९८२	३-५
श्रमण संस्कृति के मौलिक उपादान	श्री वसन्तकुमार चट्टोपाध्याय	९	४	१९५८	९-२१
श्रमण संस्कृति में क्षमा	श्री कानजी भाई पटेल	१३	११	१९६२	९-१३
श्रमरस का स्रोत : श्रावक	श्री जमनालाल जैन	२९	४	१९७८	१३-२२
श्रावक किसे कहा जाय	श्री कस्तूरमल बांठिया	१८	३	१९६७	१०-२३
श्रावक के मूलगुण	श्री सनत्कुमार जैन	२९	११	१९७८	३-१८
श्रावक गंगदत्त	मुनिश्री महेन्द्रकुमार 'प्रथम'	३६	९	१९८५	१४-१५
श्रीकृष्ण : एक समीक्षात्मक अध्ययन	श्री धन्यकुमार राजेश	२०	११	१९६९	२७-३४
,,	,,	२०	१२	१९६९	२६-३१
श्री तारण स्वामी	श्री देवेन्द्र कुमार	२	१	१९५०	२९-३२
संवेदनहीनता से सुलगती सभ्यता	मुनि राजेन्द्रकुमार 'रत्नेश'	३६	४	१९८५	१४-१९
संवत्सरी और आचार्य श्री सोहनलाल जी म०	श्री विज्ञ	६	११	१९५५	३०-३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
संस्कृति-एक विश्लेषण	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	१	१२	१९५०	१३-१६
संस्कृति का अर्थ	पं० फूलचन्दजी सिद्धान्तशास्त्री	१	८	१९५०	३३-३४
संस्कृति का आधार-व्यक्ति स्वातंत्र्य	प्रो० महेन्द्रकुमार जी 'न्यायाचार्य'	१	९	१९५०	३३-३६
संस्कृति का प्रश्न	प्रो० विमलदास जैन	१	७	१९५०	२३-२७
संस्कृति का स्वरूप	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१५	१२	१९६४	३३-३४
संस्कृति क्या है?	डॉ० नामवर सिंह	१२	१२	१९६१	३४-३९
संस्कृति की दुहाई	श्री ऋषभदास रांका	८	९	१९५७	१५-१८
सच्ची क्षमा	साध्वीश्री कानकुमारी जी	३२	११	१९८१	३१-३२
सच्ची सनाथता	डॉ० रविशंकर मिश्र	३६	५	१९८५	१०-१२
सत्ता का दर्प	उपाध्याय अमरमुनि जी	३३	५	१९८२	१३-१६
सद्विचार हेतु मौलिक प्रक्रिया	श्री सौभाग्यमुनि 'कुमुद'	३५	४	१९८४	१०-११
सदा जाग्रत नरवीर	साध्वीश्री मृगावती एवं साध्वी सुव्रता श्रीजी	३२	५	१९८१	३६
सनत्कुमार का सौन्दर्य	उपाध्याय अमरमुनि जी	३३	११	१९८२	१०-१४
सन्त एकनाथ के जीवन प्रसंग	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	५	३	१९५४	११-१९
सन्मति महावीर और 'सर्वोदय'	श्री महावीरप्रसाद प्रेमी	६	६-७	१९५५	५१-५३
सफल हुआ सम्यकत्त्व पराक्रम	श्री राजमल पवैया	३२	११	१९८१	१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
समकालीन जैन समाज में नारी	डॉ० प्रतिभा जैन	४६	१०-१२	१९९५	३४-४१
समता और समन्वय की भावना	डॉ० मोहनलाल मेहता	१०	६	१९५९	३९-४४
समता के प्रतीक महावीर	श्री ऋषभदास रांका	९	६-७	१९५८	६९-७२
समता के संदेशदाता : भगवान् महावीर	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१५	७-८	१९६४	२५-२८
समताशील भगवान् महावीर	मुनि महेन्द्रकुमार 'प्रथम'	३०	९	१९७९	२७-३०
समदर्शी दार्शनिक	श्री चिमनलाल चकुभाई शाह	३२	५	१९८१	५२
समन्वय या सफाई	प्रो० देवेन्द्रकुमार जैन	३	१२	१९५२	७-१०
समाज का धर्म	,,	१३	२	१९६१	२१-२३
समाज में महिलाओं की उपेक्षा-एक विचारणीय विषय	डॉ० प्रेमचन्द्र जैन	३१	१	१९७९	८-१९
समाजशास्त्र की पृष्ठभूमि में जैनों के सम्प्रदाय	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१७	३	१९६६	११-१९
सरस्वती पुत्र	श्रेष्ठी श्री अचलसिंह जी	३२	५	१९८१	५०
सर्वधर्म समभाव और स्याद्वाद	श्री सुभाषमुनि 'सुमन'	३७	१०	१९८६	१०-१५
सर्वधर्मसमानत्व की कुंजी	श्री अमरमुनि जी	११	४	१९६०	१८
सर्वोदय और राजनीति	श्री सतीशकुमार	१०	५	१९५८	२९-३१
सर्वोदय और हृदय परिवर्तन	श्री बशिष्ठनारायण सिन्हा	१०	५	१९५८	३२-३४
साधु संस्था और लोकशिक्षण	मुनिश्री नेमिचन्द जी	१२	९	१९६१	३५-४०

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
साधु समाज की प्रतिष्ठा	पं० कृष्णचन्द्राचार्य	३	७-८	१९५२	६१-६३
साध्वी समाज से	मुनिश्री आईदानजी	४	४	१९५३	२१-२२
सामायिक और ध्यान	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया	३५	४	१९८४	४-८
साम्प्रदायिक कदाग्रह	श्री पृथ्वीराज जैन	१	२	१९४९	२७-३०
सांस्कृतिक पर्व की सामाजिक उपयोगिता	साध्वीश्री अर्णिमा श्रीजी	३२	११	१९८१	१६-२०
सिर्फ फैशन की खातिर	श्री प्रकाश मेहता	३३	२	१९८१	२३-२४
सुबुद्धि और दुर्बुद्धि	मुनि महेन्द्रकुमार 'प्रथम'	३६	४	१९८५	७-१३
सुख का सागर	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'	३३	१०	१९८२	२२-२४
सुख- दुःख	श्री कन्हैयालाल सरावगी	३१	५	१९८०	९-१३
सुमन रख भरोसा महावीर का	श्री उत्सवलाल तिवारी	३६	७	१९८५	१०-११
सूडा-सहेली की प्रेमकथा	श्री भँवरलाल नाहटा	४२	७-१२	१९९१	२५-३४
सेवा : एक विश्लेषण	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१८	१-२	१९६६	२६-४२
सेवाव्रती नंदीषेण	उपाध्याय अमर मुनि	३२	१	१९८०	१४-१७
सोने की चमक	उपाध्यायश्री अमर मुनि	३१	७	१९८०	८-९
सोमदेवसूरि और जैनाभिमत वर्ण व्यवस्था	श्री गोकुलचंद जैन	१३	१	१९६१	९-१४
सोमदेवसूरि की अर्थनीति-एक समाजवादी दृष्टिकोण	श्री कृष्णमुरारी पाण्डेय	३२	८	१९८१	२४-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
स्नेह के धागे	श्री अमरमुनि जी	३३	३	१९८२	२-७
स्मृति नन्दन	श्री जिनेन्द्र कुमार	३२	५	१९८१	३९-४०
स्वभाव परिवर्तन	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३६	७	१९८५	१२-१८
स्वामी केशवानन्द	स्वामी सत्यस्वरूपजी	२	८	१९५१	२६-३१
स्वामी विवेकानन्द	श्री शीतलचन्द्र चटर्जी	६	१२	१९५५	३४-३५
स्वप्न और विचार	मुनि सुखलाल	३४	९	१९८३	२०-२१
स्व० पण्डित जी एक चलते फिरते विश्वकोश	श्री शादीलाल जैन	३२	५	१९८१	५१
स्त्रीमुक्ति, अन्यतैर्थिक मुक्ति एवं सवस्त्रमुक्ति का प्रश्न	डॉ० सागरमल जैन	४८	४-६	१९९७	११३-१३२
स्त्रीशिक्षा	सुश्री कांता जैन	१	६	१९५०	२३-२६
हमारी प्रवृत्तियाँ और उनका मूल्यांकन	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१६	६	१९६५	३२-३६
हमारे पतन का मुख्य कारण : हिंसा	श्री नारायण सक्सेना	१६	८	१९६५	१६-१९
हमारे समाज की भावी पीढ़ी	श्री उदय जैन	३	५	१९५२	१६-१८
हमें सामाजिक मूल्यों को बदलना है	श्री जमनालाल जैन	८	७-८	१९५७	१३-१७
हरिजन मंदिर प्रवेश	श्री भगतराम जैन	७	६-७	१९५६	५८-६१
हरिवंशपुराणकालीन समाज और संस्कृति	श्री धन्यकुमार राजेश	२२	२	१९७०	३-१३
हिन्दी जैन कवि छत्रपति : व्यक्तित्व तथा कृतित्व	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'	३५	८	१९८४	१-५
हिन्दी जैन साहित्य का विस्मृत बुन्देली कवि : देवीदास	डॉ० (श्रीमती) विद्यावती जैन	४३	१०-१२	१९९२	२९-३९
हेमचन्द्राचार्य की साहित्य साधना	डॉ० मोहनलाल मेहता	२८	७	१९७७	२७-३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
६. तुलनात्मक					
अध्यात्म और विज्ञान -क्रमशः	प्रो० सागरमल जैन	४०	६	१९८९	९-१९
,,	,,	४८	४-६	१९९७	२०-२९
अन्य प्रमुख भारतीय दर्शनों एवं जैन दर्शन में - कर्मबन्ध का तुलनात्मक स्वरूप	कु० कमला जोशी	४२	४-६	१९९१	३३-४३
आत्मा : बौद्ध एवं जैन दृष्टि	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२४	११	१९७३	३-९
आधुनिक विज्ञान और अहिंसा	श्री ज्ञानमुनि जी महाराज	८	६	१९५७	१०-१४
आधुनिक विज्ञान, ध्यान एवं सामायिक	डॉ० पारसमल अग्रवाल	४७	७-९	१९९६	३४-४३
इषुकारीय अध्ययन (उत्तराध्ययन) एवं शांतिपर्व- (महाभारत) का पिता-पुत्र संवाद	डॉ० अरुणप्रताप सिंह	४२	१-३	१९९१	८७-९२
उज्जयिनी और जैनधर्म	श्री तेजसिंह गौड़	२३	४	१९७२	३-१२
कर्मप्राभृत अथवा षट्खंडागम : एक परिचय-क्रमशः	डॉ० मोहनलाल मेहता	१६	२	१९६४	२९-३२
,,	,,	१६	३	१९६५	२३-२८
,,	,,	१६	४	१९६५	३२-३७
,,	,,	१६	५	१९६५	१९-२२
,,	,,	१६	६	१९६५	२३-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जिनदत्तसूरि का शकुनशास्त्र एवं हरिभद्रसूरि का व्यवहारकल्प	श्री अगरचन्द नाहटा	३०	९	१९७९	३१-३३
जैन और वैष्णव काव्य परम्परा में राम	श्री रामदयाल जैन	२३	११	१९७२	१९-२२
जैन और बौद्ध आगमों में गणिका	श्री कोमलचन्द जैन	१७	१-२	१९६५	७३-८४
बौद्ध और जैन आगमों में जननी	,,	१८	६	१९६७	२६-३३
जैन और बौद्ध आगमों में जननी : एक पहलू	सौ० सुधा राखे	१८	८	१९६७	१४-१७
बौद्ध और जैन आगमों में जननी : एक स्पष्टीकरण	डॉ० कोमलचन्द जैन	१८	१०	१९६७	१५-१९
बौद्ध और जैन आगमों में नारी जीवन : एक और स्पष्टीकरण	,,	१९	३	१९६८	२३-२४
जैन और हिन्दू	पं० दलसुख मालवणिया	१	११	१९५०	१६-१७
जैन ग्रन्थों और पुराणों के भौगोलिक वर्णन का-तुलनात्मक अध्ययन	श्री अगरचंद नाहटा	२३	७	१९७२	१५-२०
जैन, बौद्ध और हिन्दू धर्म का पारस्परिक प्रभाव	डॉ० सागरमल जैन	४८	४-६	१९९७	३०-५९
जैन एवं बौद्ध दर्शन में प्रमाण विवेचन	डॉ० धर्मचन्द्र जैन	४३	१०-१२	१९९२	२१-४०
जैन एवं बौद्ध पारिभाषिक शब्दों के अर्थ निर्धारण और अनुवाद की समस्यायें	डॉ० सागरमल जैन	४५	४-६	१९९४	२३४-२३८
जैन तत्वों पर शूब्रिंग के विचार	श्री कस्तूरमल बांठिया	२१	५	१९७०	१६-२३
जैन तथा अन्य भारतीय दर्शनों में सर्वज्ञता विचार (क्रमशः)	श्री नरेन्द्रकुमार जैन	३०	८	१९७९	३-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	,,	३०	९	१९७९	३-१०
जैनधर्म और आधुनिक विज्ञान	डॉ० सागरमल जैन	४३	१०-१२	१९९२	१-१२
जैनधर्म और बौद्धधर्म	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२८	१०	१९७७	३-११
जैनधर्म और व्यावसायिक पूँजीवाद: वेबर की अनुदृष्टि	श्री कृष्णलाल शर्मा	१८	१-२	१९६६	६५-७२
जैनधर्म और हिन्दू धर्म (सनातन धर्म) का - पारस्परिक सम्बन्ध	डॉ० सागरमल जैन	४७	१-३	१९९६	३-१०
जैनधर्म : वैदिक धर्म के संदर्भ में	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२३	८	१९७२	८-१२
जैन-बौद्ध सम्मत कर्म सिद्धांत	श्री रामप्रसाद त्रिपाठी	२२	१	१९७०	२३-३६
जैन संस्कृति और श्रमण परम्परा	डॉ० शान्ताराम भालचन्द्र देव	४१	४-६	१९९०	२९-४०
जैन सम्मत आत्मस्वरूप का अन्य भारतीय दर्शनों से तुलनात्मक विवेचन	डॉ० (श्रीमती) कमला पंत	४२	७-१२	१९९१	३५-४३
तर्क और भावना	काका कालेलकर	१	२	१९४९	३१-३२
तीर्थंकर और ईश्वर के सम्प्रत्ययों का तुलनात्मक-विवेचन	डॉ० सागरमल जैन	४६	१-३	१९९५	८७-९२
तुलनात्मक दर्शन पर दो दृष्टियाँ	श्री श्रीप्रकाश दूबे	१५	७-८	१९६४	१७-२१
त्रिरत्न, सर्वोदय और सम्पूर्ण क्रान्ति	डॉ० धूपनाथ प्रसाद	४७	७-९	१९९६	४४-४८
द्रौपदी कथानक का जैन और हिन्दू स्रोतों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन	श्रीमती शीला सिंह	४६	७-९	१९९५	७६-८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पउमचरिउ और रामचरितमानस : एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२४	४	१९७३	११-१४
पद्मचरित और पउमचरिउ	श्री रमेशचन्द्र जैन	२४	५	१९७३	३-७
पद्मचरित और हरिवंशपुराण	,,	२३	८	१९७२	३-७
पातंजल तथा जैन योग : स्वरूप एवं प्रकार	कु० मंगला सांड	३०	७	१९७९	३-१५
पुराण बनाम कथा साहित्य : एक प्रश्न चिन्ह	डॉ० प्रेमचंद जैन	२१	१०	१९७०	१३-९
प्रवृत्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग	श्री सुबोधकुमार जैन	२२	१	१९७०	३४-३६
प्रसाद और तीर्थंकर	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२३	७	१९७२	२१-२४
प्राकृत के प्रबन्ध काव्य : संस्कृति प्रबन्ध काव्यों के सन्दर्भ में	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२५	३	१९७४	३-१०
बुद्ध और महावीर का परिनिर्वाण	श्री कस्तूरमल बांठिया	१३	६	१९६२	८-१६
,,	,,	१३	७-८	१९६२	२५-३६
बौद्ध और जैन आगमों में जननी	सौ० सुधा राखे	१९	१-२	१९६७	२०-२६
बौद्ध और जैन आगमों में पुत्रवधू	डॉ० कोमलचन्द जैन	१८	८	१९६७	२४-३३
भगवान् अरिष्टनेमि और कर्मयोगी कृष्ण	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२४	१	१९७२	३-६
भगवान् बुद्ध और भगवान् महावीर	पं० दलसुख मालवणिया	१६	४	१९६५	९-२१
भागवद्गीता और जैनधर्म	श्री अगरचंद नाहटा	१५	१२	१९६४	११-१२
भारतीय साहित्य और आयुर्वेद	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१८	१०	१९६७	२०-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भौतिकवाद व अध्यात्मवाद	श्री गोपीचंद धारीवाल	१६	१०	१९६५	२२-२९
भौतिकता और अध्यात्म का समन्वय	पं० दलसुख मालवणिया	४	६	१९५३	३-४
महर्षि अरविन्द : जैन दर्शन की दृष्टि में	श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन	१७	१०	१९६६	२८-३१
महायान सम्प्रदाय की समन्वयात्मक दृष्टि : भगवद् गीता और जैनधर्म के परिपेक्ष्य में	डॉ० सागरमल जैन	४४	७-९	१९९३	१-१०
महाकवि स्वयंभू और तुलसीदास	श्री प्रेमसुमन जैन	१८	९	१९६७	३-१४
महावीर और गाँधी का अहिंसा दर्शन जनजीवन के संदर्भ में	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२०	१२	१९६९	५-१२
महावीर और बुद्ध : कैवल्य और बोधि	मुनिश्री नगराज जी	१८	७	१९६७	३-६
मिथ्यात्व इन जैनिज्म एण्ड शंकर : ए कम्परेटिव स्टडी	डॉ० ललितकिशोर लाल श्रीवास्तव	२४	२	१९७२	३५-४१
वर्धमान और हनुमान	श्री सूरजचंद्र 'सत्यप्रेमी'	६	६-७	१९५५	२३
वेदोत्तरकालीन आत्मविद्या और जैनधर्म	डॉ० अजित शुकदेव	२३	९	१९७२	१०-१६
वैदिक एवं श्रमण परम्परा में ध्यान	डॉ० रज्जन कुमार	४७	१-३	१९९६	४७-५९
शास्त्र और शस्त्र	पं० सुखलाल जी	१	२	१९४९	१३-१५
श्वेताम्बर मूलसंघ एवं माथुरसंघ-एक विमर्श	डॉ० सागरमल जैन	४३	७-९	१९९२	१५-२३
श्रमण और ब्राह्मण	प्रो० इन्द्र	१	४	१९५०	२९-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्रमण और वैदिक साहित्य में स्वर्ग और नरक	श्री धन्यकुमार राजेश	२३	१०	१९७२	३-९
श्रमण एवं ब्राह्मण परम्परा में परमेष्ठी पद	साध्वी (डॉ०) सुरेखा जी	४३	१-३	१९९२	५५-६७
संस्कृत और प्राकृत का समानान्तर अध्ययन	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	२७	२	१९७५	३-८
संस्कृत शब्द और प्राकृत अपभ्रंश	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२८	८	१९७७	१८-२०
सम्राट अकबर और जैनधर्म	डॉ० सागरमल जैन	४८	४-६	१९९७	७१-७६
सर्वोदय और जैन दृष्टिकोण	श्री महावीरचंद धारीवाल	१५	९	१९६४	३३-३६
सांख्य और जैन दर्शन	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२८	९	१९७७	१४-१९
साम्यवाद और श्रमण विचारधारा	श्री पृथ्वीराज जैन	१	१	१९४९	२२-२७
स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग - क्रमशः	पं० बेचरदास दोशी	१५	९	१९६४	२-६
,,	,,	१५	१०	१९६४	२-८
स्थानाङ्ग एवं समवायाङ्ग में पुनरावृत्ति की समस्या	डॉ० अशोककुमार सिंह	४७	१०-१२	१९९६	३६-५२
स्याद्वाद एवं शून्यवाद की समन्वयात्मक दृष्टि	डॉ० (कु०) रत्ना श्रीवास्तव	४३	१-३	१९९२	९१-१०२
हिन्दू एवं जैन परम्परा में समाधिमरण : एक समीक्षा	डॉ० अरुणप्रताप सिंह	४४	१०-१२	१९९३	१४-१८
हिन्दू-बनाम-जैन	प्रो० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य	६	४	१९५५	३८-४०
हेल्मुथफोन ग्लासनप और जैनधर्म	श्री सुबोधकुमार जैन	२१	१२	१९७०	१३-१७

७- विविध

अध्ययन : एक सुझाव	श्री महेन्द्र राजा	८	१	१९५६	१२-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अन्तरायकर्म	डॉ० मोहनलाल मेहता	२३	७	१९७२	३-५
अपने व्यक्तित्व की परख कीजिये	श्री महेन्द्र राजा	६	२	१९५४	२७-२९
अपभ्रंश की पूर्व स्वयंभू युगीनकविता	डॉ० देवेन्द्रकुमार	१८	५	१९६७	५-९
अपूर्वरक्षा	श्री विद्या भिक्षु	१७	६	१९६६	१२-१३
अब कहाँ तक	पं० बेचरदास दोशी	७	१	१९५५	८-१४
अभय का आराधक	डॉ० इन्द्र	५	६	१९५४	१-८
अविद पद शतार्थी	महो० विनयसागर	५	६	१९५४	२६-३०
असुर	श्री गणेशप्रसाद जैन	२२	९	१९७१	३०-३३
आगम झूठे हैं क्या ?	पं० दलसुख मालवणिया	८	६	१९५७	५६-५९
आगरा में श्री रत्नमुनि शताब्दी समारोह	श्रीकृष्णचन्द्राचार्य	१५	७-८	१९६४	१२-१६
आत्म निरीक्षण	श्री पारसमल 'प्रसून'	१८	५	१९६७	९-१०
आत्मबली साधक और दैवीतत्त्व	मुनिश्री संतबाल	१५	११	१९६४	९-१२
आधुनिक पुस्तकालय	श्री महेन्द्र राजा	६	१०	१९५५	३७-४०
आधुनिक पुस्तकालयों में पुस्तकसूची	,,	७	२	१९५५	३७-३८
उद्भट विद्वान् पं० बेचरदास दोशी	श्री गुलाबचन्द्र जैन	१५	९	१९६४	३७-३८
उत्सर्ग और अपवाद	मुनिश्री पुण्यविजय जी	१७	६	१९६६	३०-३३
उपवास से लाभ	श्री अत्रिदेव गुप्त	५	१२	१९५४	२७-३०

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
एक दुनियाँ और एक धर्म	श्री एस० एस० गुप्त	८	९	१९५७	४-७
एक पत्र	श्री कैलाशचन्द्र जैन	२०	४	१९६९	२५
एक प्रतिक्रिया	डॉ० देवेन्द्रकुमार	१९	३	१९६८	३५
एक समस्या	पं० कैलाशचन्द्र जी	१	९	१९५०	२१-२५
ऐसा क्यों ?	श्री धनदेवकुमार 'सुमन'	६	२	१९५४	२१-२६
कलकत्ता विश्वविद्यालय में संस्कृत का उच्च-शिक्षण क्रमश:	म० म० विधुशेखर भट्टाचार्य	३	५	१९५२	२४-३२
,,	,,	३	६	१९५२	२७-३१
कल्चुरीकालीन भगवान् शांतिनाथ की प्रतिमाएँ	श्री शिवकुमार नामदेव	२३	१०	१९७२	१४-१५
कश्मीर की सैर	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	५	१०	१९५४	३३-३६
,,	,,	५	११	१९५४	२९-३०
,,	,,	५	१२	१९५४	२५-२७
कर्मों का फल देनेवाला कम्प्यूटर	प्रो० जी० आर० जैन	२२	६	१९७१	३०-३२
काव्य का प्रयोजन : एक विमर्श	श्री गंगासागर राय	१३	१२	१९६२	२५-२७
काव्य में लोक मंगल	,,	१३	७-८	१९६२	४२-४४
काव्यशास्त्रियों की दृष्टि में श्लेष	श्री श्रेयांसकुमार जैन	२९	८	१९७८	२६-३१
काश ! मैं अध्यापिका होती !	सुश्री शरबती जैन	४	४	१९५३	२९-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
किसकी जय	प्रो० इन्द्रचंद्र शास्त्री	३	५	१९५२	३३-३७
कौन भूखे मरेंगे	श्री पीटर फ्रीमैन	६	२	१९५४	१४-१७
क्या आप असुन्दर हैं?	कुमारी रेणुका चक्रवर्ती	६	१	१९५४	३४-३८
क्या रावण के दस मुख थे ?	डॉ० के० ऋषभ चन्द्र	१८	९	१९६७	२२-२४
खोज सम्बन्धी कुछ अनुभव और समस्यायें	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	२	८	१९५१	९-१२
गंगा का जल लेय अरघ गंगा को दीना	पं० जमनालाल जैन	८	५	१९५७	२३-२८
गजेटियर ऑफ इंडिया में जैनी और जैनधर्म	श्री सुबोधकुमार जैन	२१	६	१९७०	२८-३५
घरों में बच्चे	श्रीमती ब्रजेशकुमारी याज्ञिक	८	३-४	१९५७	५४-६०
चलिए और खूब चलिए	वैद्यराज पं० सुन्दरलाल जैन	६	१०	१९५५	२७-२९
चातुर्मास व्यवस्था में सुधार कीजिये	श्री अन्नराज जैन	१५	२	१९६३	२१-२३
जब आप घर से अकेली निकलें	कु० रूपलेखा वर्मा	७	१०	१९५६	१९-२०
जिन्दगी किसे कहते हैं?	प्रिंस क्रोपाटकिन	६	१२	१९५५	१७
'जी' की आत्मकथा	प्रो० देवेन्द्रकुमार जैन	८	१	१९५६	१५-१७
जीवन चरित्र ग्रन्थ	श्री अगरचंद नाहटा	१०	६	१९५९	३५-३८
जीवन की सच्ची क्रान्ति	मुनिश्री पद्मविजय जी	१३	४	१९६२	२५-२७
जीवन धर्म	श्री बशिष्ठनारायण सिन्हा	११	३	१९६०	२३-२६
जीवित धर्म	डॉ० राधाकृष्णन्	८	१०	१९५७	३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन गीतों की परम्परा	श्री प्यारेलाल श्रीमाल	१०	४	१९५९	९-११
जैन ज्योतिष तिथि पत्रिका	श्री विज्ञ	७	१२	१९५६	११-१५
जैन ज्ञान भण्डारों के प्रकाशित सूची ग्रन्थ	श्री अगरचन्द नाहटा	४	७-८	१९५३	७३-७९
जैनत्व की कसौटी	श्री कृष्णचन्द्राचार्य	१	१२	१९५०	३१-३२
जैनों ने भी युग का आह्वान सुना	श्री कस्तूरमल बांठिया	१४	९	१९६३	३३-३७
ज्योर्तिधर दो जैन विद्वान्	श्री अगरचंद नाहटा	७	५	१९५६	१६-१९
टमाटर	आयुर्वेदाचार्य श्री सुन्दरलाल जैन	८	२	१९५६	२९-३१
डॉक्टर अलबर्ट स्वीट्रजर	श्री माईदलाल जैन	८	९	१९५७	८-११
डॉ० भयांणी के व्याख्यान	श्री श्रीप्रकांश दुबे	१५	२	१९६३	१९-२०
डॉ० मारीआ मॉन्तेसरि	श्री महेन्द्र राजा	८	३-४	१९५७	१८-२१
तलाक	श्री पृथ्वीराज जैन	२	२	१९५०	२९-३४
दास, दस्यु और पणि	श्री गणेशप्रसाद जैन	२२	७	१९७१	२६-३०
द्राविण	,,	२२	४	१९७१	२०-२४
दीपावली की जैन परम्परा	पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य	६	१	१९५४	९-११
दुर्बलता का पाप	श्री विनोदराय जैन	७	४	१९५६	३०-३४
दो क्रान्तिकारी जैन विद्वान्	श्री रतिलाल दीपचंद देसाई	६	५	१९५५	७-१३
दो प्रेमियों की यह दीक्षा	डॉ० मोहनलाल मेहता	२	७	१९५१	२७-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
दौरे के संस्मरण	श्री हरजसराय जैन	४	५	१९५३	२३-२६
नया और पुराना	मुनि सुरेशचन्द्र शास्त्री	७	२	१९५५	२०-२२
धर्म और विद्या का विकास मार्ग	पं० सुखलाल जी	१४	३	१९६३	९-१७
निगंठनातपुत्त	श्री भरतसिंह उपाध्याय	११	१०	१९६०	२१-२३
निरामिष भोजन : एक समस्या	डॉ० सम्पूर्णानन्द	९	३	१९५८	२८-३३
नई पीढ़ी और धर्म	श्री नंदलाल मारु	१९	७	१९६८	३५-३८
नरसिंह मेहता	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	५	८	१९५४	१७-२०
न्यायोचित विचारों का अभिनन्दन	पं० श्री जुगलकिशोर मुख्तार	१७	१०	१९६६	१६-२१
पथ-भ्रष्ट	श्री अभयमुनि जी महाराज	७	२	१९५५	३३-३६
पार्श्वनाथ विद्याश्रम	प्रो० विमलदास जैन	३	७-८	१९५२	१३-२३
पार्श्वनाथ विद्याश्रम - एक सांस्कृतिक अनुष्ठान	पं० दलसुख मालवणिया	१	१	१९४९	३३-३४
पुलिस	पं० बेचरदास दोशी	१८	७	१९६७	७-८
पुस्तक सूची	श्री महेन्द्र राजा	७	४	१९५६	२७-२९
,,	,,	७	९	१९५६	२५-२६
पुनीत स्मरण	श्री देवेन्द्रकुमार शास्त्री	७	६	१९५६	७-९
पूज्य श्री जिनविजयेन्द्र सूरि जी	श्री शंकर मुनि	१५	२	१९६३	२८-३०
प्रतिज्ञा	श्री हुकुमचन्द सिंघई	३	२	१९५१	२१-२५

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्राच्यभारती का अधिवेशन	डॉ० नवरत्न कपूर	१५	१	१९६३	२६-३०
प्रेम का अभ्यास	आचार्य विनोबा भावे	१	३	१९४९	२२-२३
बच्चों की मूलभूत आवश्यकताएं	कु० इला खासनवीस	८	५	१९५७	१५-२०
बालक की व्यवस्थाप्रियता	डॉ० मारीआ मॉन्तेसरि	८	३-४	१९५७	४९-५३
बुनियादी सुधार	श्री उमाशंकर त्रिपाठी	१	६	१९४९	१७-२०
बैलून में	श्री मैक्स एडालोर	६	४	१९५५	२१-२८
भगवान् महावीर और दीवाली	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	१४	१	१९६२	८
भगवान् महावीर : एक श्रद्धांजलि	डॉ० मङ्गलदेव शास्त्री	७	६-७	१९५६	३-८
भगवान् महावीर के जीवन की एक झलक	पं० कैलाशंचन्द्र शास्त्री	९	१०	१९५८	३०-३२
भारतीय त्यौहार	सुश्री मोहिनी शर्मा	३	१२	१९५२	२७-३०
भारतीय विश्वविद्यालयों में जैन शोध कार्य	डॉ० गोकुलचंद जैन	१९	११	१९६८	२९-२८
भावनाओं का जीवन पर प्रभाव	प्रो० धर्मेन्द्रकुमार कांकरिया	९	१	१९५७	२५-२६
भोग तृष्णा	श्री गोपीचंद धारीवाल	२०	५	१९६९	१८-१९
भोजन और उसका समय	श्री अमृतलाल शास्त्री	७	१२	१९५६	१८-२०
मगध में दीपमालिका	मुनि कांतिसागर	१	१	१९४९	३७-४०
महामानव की मानसिक भूमिका	प्रो० राजबली पाण्डेय	४	५	१९५३	३-६
महावीर जयन्ती का अर्थ	भाई श्री बंशीधर जी	१३	६	१९६२	१९-२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
बुझती हुई चिनगारियाँ	मुनिश्री सुशीलकुमार शास्त्री	३	११	१९५२	३५-३७
मातृभाषा और उसका गौरव	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	१३	७-८	१९६२	९-१३
मानव कुछ तो विचार कर	मुनिश्री महाप्रभविजय जी महाराज	७	२	१९५५	२३-२४
मानवमात्र का तीर्थ	पं० सुखलाल जी	४	६	१९५३	१-२
मानवता के दो अखंड प्रहरी	श्री भरतसिंह उपाध्याय	११	७-८	१९६०	१४-२०
मेरी बम्बई यात्रा	डॉ० इन्द्र	४	१२	१९५३	११-१५
मूक सेविका : विजया बहन	श्री शरदकुमार साधक	४३	१०-१२	१९९२	४०-४१
मृत्युञ्जय	श्री मोहनलाल मेहता	१	७	१९५०	१४-१८
यह अगस्त का महीना	श्री एम० के० भारिल्ल	७	१०	१९५६	७-९
यह मनमानी कब तक	श्री राकेश	३	७-८	१९५२	३१-३३
युद्ध और श्रमण	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	१	२	१९४९	९-११
युवकों के प्रति	श्री चन्दनमल चांद	२१	१	१९६९	१३-१४
रवीन्द्रनाथ के शिक्षा सिद्धान्त और विश्वभारती	श्री शिवनाथ	६	१०	१९५५	३-७
'रोटी' शब्द की चर्चा	पं० बेचरदास दोशी	१८	९	१९६७	१५-१९
लखनऊ अभिभाषण	पं० श्री सुखलाल जी संघवी	३	१	१९५१	३-२८
लेखक और विश्वशांति	डॉ० एस० राधाकृष्णन्	६	१०	१९५५	३०-३२
लिखाई का सस्तापन	श्री अगरचन्द नाहटा	९	३	१९५८	३-५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वर्मा में होली का त्यौहार	सुश्री निर्मला प्रीतिप्रेम	६	५	१९५५	३०-३२
वहित और अहित	श्री गणेशप्रसाद जैन	२२	११	१९७१	२०-२३
विचारों पर नियन्त्रण के उपाय	प्रो० लालजी राम शुक्ल	१	१०	१९५०	३१-३५
विजय	कु० सत्यवती जैन	२	२	१९५०	३५-३८
विद्यालय से माता-पिता का सम्बन्ध	श्रीमती सुशीला	८	३-४	१९५७	२९-३२
विश्व कलेण्डर	श्री महेन्द्रकुमार जैन	६	४	१९५५	३३-३७
विश्वकलेण्डर क्यों नहीं अपनाया जाय ?	प्रो० वेंकटाचलम्	६	८	१९५५	१४-१८
विस्मृत परम्पराएँ	मुनिश्री दुलहराज जी	१६	५	१९६५	१८
वैराग्य के पथ पर	श्री हजारीमल बांठिया	१	१२	१९५०	१७-२५
विकास का मुख्य साधन (क्रमशः)	पं० सुखलाल जी	१	१०	१९५०	१३-१८
,,	,,	१	११	१९५०	११-१३
व्यावहारिक क्रियाएँ	कुमारी आरती पात्रा	८	३-४	१९५७	२३-२८
शतावधानी रत्नचन्द्र पुस्तकालय	डॉ० मोहनलाल मेहता	२	१२	१९५१	३१-३६
शब्दों की शवपूजा न हो	मुनिश्री नथमल जी	१२	४	१९६१	१५-१९
शाक विचार	श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार	२	१०	१९५१	३३-३६
शास्त्रोद्धार की आवश्यकता	आचार्य आत्मारामजी	१३	५	१९६२	४१
शिशु की निद्रा	श्रीमती कमला देवी	५	९	१९५४	३२-३४
शैतान	खलील जिब्रान	३	४	१९५२	२३-३३
श्रमण संघ के दस वर्ष	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१३	९	१९६२	१७-१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्री कृष्ण की जीवन झाँकी	श्री विजयमुनि शास्त्री	९	३	१९५८	६-९
श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूला	प्रो० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	२	१०	१९५१	१५-२०
श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम	श्री हरजसराय जैन	७	६-७	१९५६	६३-८०
श्री रंजनसूरिदेव की कुछ मोटी भूलें	श्री जुगलकिशोर मुख्तार	१८	१२	१९६७	३०-३०
श्री रत्नमुनि : जीवन परिचय	श्री विजय मुनि	१५	७-८	१९६४	१९-२८
श्री लालाभाई वीरचन्द देसाई 'जयभिक्खु'	श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	९	१९६८	२८-३७
संघर्ष और आलिंगन	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१७	३	१९६६	२५-३२
संघर्ष करना होगा	श्री निर्मल कुमार जैन	५	९	१९५४	१९-२३
संसार की चार उपमाएँ	श्री प्रेमीजी	७	५	१९५६	१३-१४
संसार के धर्मों का उदय	डॉ० इन्द्र	५	६	१९५४	२०-२५
संस्कृत कवियों के उपनाम	श्री जगन्नाथ पाठक	११	३	१९६०	१३-१७
सच्चा जैन	श्री यशोविजय उपाध्याय	७	२	१९५५	२५-२६
सच्चा वैभव	श्री एस० कान्त	६	८	१९५५	१९-३५
सत् का स्वरूप : अनेकान्तवाद और व्यवहारवाद-की दृष्टि में	डॉ० राजेन्द्रकुमार सिंह	४१	७-९	१९९०	१७-२५
सदाचार ही जीवन है	मुनिश्री रंगविजय जी	१	१२	१९५०	३५-३७
सन्त श्री गणेशप्रसाद वर्णी	श्री कैलाशचन्द्र शास्त्री	१२	१२	१९६१	१६-१८
सफलता के तीन तत्त्व	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१२	३	१९६१	२८-३०

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सफेद धोती	प्रो० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य	२	१०	१९५१	२१-२४
सबसे पहला पाठ	श्री कृष्णचन्द्राचार्य	१	१	१९४९	२८-३०
समस्त जैन संघ को नम्र विज्ञप्ति	मुनिश्री न्याय विजयजी	१७	८	१९६६	३४--३९
सांपू सरोवर	श्री जय भिक्खु	५	७	१९५४	३४-३९
सामुद्रिक विज्ञान	श्री विजय राज	६	५	१९५४	२७-२९
,,	,,	६	८	१९५५	३८-४०
सुधार का मूलमंत्र	श्री जुगलकिशोर मुख्तार	१३	१२	१९६२	९-१६
सुहृदय श्री मुनिलाल जी	श्री हरसजराय जैन	१५	७-८	१९६४	६६-६८
सेवक	प्रो० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१	४	१९५०	१७-२३
सेवा का अर्थ	मुनिश्री विद्याविजय जी	१	३	१९५०	३५-३८
सेवाग्राम कुटीर का संदेश	डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	१	४	१९५०	३६-३८
हम किधर बह रहे हैं ?	डॉ० इन्द्र	४	६	१९५२	५-१३
हम सौ वर्ष जी सकते हैं?	श्री देवेन्द्रकुमार जैन शास्त्री	६	१२	१९५५	३१-३३
हमारा आज का जीवन	श्री रतनसागर जैन	१	५	१९५०	२७-३०
हमारा क्रान्तिवारसा	पं० बेचरदास दोशी	५	७	१९५४	१-८
,,	,,	५	८	१९५४	६-१५
हमारी यात्रा के कुछ संस्मरण	लाला हरजसराय जैन	४	६	१९५३	२८-३३
हमारे जागरण का शीर्षासन	मुनि सुरेशचन्द्र	३	६	१९५२	१७-२२
हृदय का माधुर्य-करुणा	मुनिश्री विनयचन्दजी	१६	११	१९६५	२७-३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्य सत्कार

निर्ग्रन्थ (अंग्रेजी, गुजराती और हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने वाली वार्षिक शोध पत्रिका, सम्पादक - प्रा० एम० ए० ढांकी; डॉ० जीतेन्द्र बी० शाह; प्रवेशांक वर्ष १९९६; पृष्ठ ९+१०८+११०+६२; द्वितीयांक पृष्ठ १४+१००+१०६+५०; प्रकाशक- शारदाबेन चिमनभाई एज्युकेशनल रिसर्च सेन्टर, शाहीबाग, अहमदाबाद; आकार-डबल डिमाई; मूल्य - एक सौ रूपया प्रत्येक।

प्रस्तुत अंक अहमदाबाद में हाल के वर्षों में स्थापित एक नूतन शोधसंस्थान शारदाबेन चिमनभाई एज्युकेशनल रिसर्च सेन्टर की शोध पत्रिका है। जैनधर्म-दर्शन, साहित्य और भारतीय स्थापत्य कला के विश्वविख्यात मर्मज्ञ प्राध्यापक श्री मधुसूदन ढांकी तथा प्राकृत भाषा एवं साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान्, युवा मनीषी डॉ० जीतेन्द्र बी० शाह के सम्पादकत्त्व में प्रकाशित यह शोध पत्रिका अब तक प्रकाशित जैन पत्र-पत्रिकाओं में सर्वश्रेष्ठ है। तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाली यह दूसरी शोध पत्रिका है। डबल डिमाई आकार में मुद्रित इस शोध पत्रिका में जैन दर्शन,भाषा, साहित्य, कला, इतिहास और पुरातत्त्व आदि विषयों पर चुने हुए श्रेष्ठ लेखों का संकलन है। इस पत्रिका की यह विशेषता है कि इसमें जहाँ एक ओर जैनविद्या के मूर्धन्य विद्वानों के लेखों को स्थान दिया गया है वहीं दूसरी ओर युवा लेखकों के शोध लेखों को भी आवश्यक महत्त्व प्रदान किया गया है। इस पत्रिका की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक और मुद्रण त्रुटिरहित है। पत्रिका में लेखों से सम्बन्धित चित्रों को सर्वश्रेष्ठ आर्टपेपर पर मुद्रित किया गया है, जिससे इसका महत्त्व और भी ज्यादा बढ़ गया है। ऐसे सुन्दर प्रकाशन के लिए सम्पादक और प्रकाशक दोनों ही बधाई के पात्र हैं।

मानतुंगाचार्य और उनके स्तोत्र : लेखक-प्राध्यापक श्री मधुसूदन ढांकी और जीतेन्द्र शाह : प्रकाशक -शारदाबेन चिमनभाई एज्युकेशनल रिसर्च सेन्टर, अहमदाबाद ३८०००४; प्रथम संस्करण १९९७ ई०, पृष्ठ १२+१३४; आकार-रायल आक्टो; मूल्य-सदुपयोग।

युगादीश्वर जिन ऋषभ के गुणस्तवस्वरूप भक्तामरस्तोत्र का जैन परम्परा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों ही सम्प्रदायों में इसे प्राय: समान प्रतिष्ठा प्राप्त है। इस अति महिम्न स्तोत्र के कर्ता श्वेताम्बर हैं या दिगम्बर, उनका समय क्या है; इस स्तोत्र की श्लोक संख्या ४४ है या ४८; इन सभी प्रश्नों का उत्तर ढूंढने का प्रयास अब तक अनेक जैन और अजैन विद्वानों ने किया है, परन्तु वे कोई निष्पक्ष और सर्वांगीण निर्णय प्रस्तुत नहीं कर सके हैं। इस पुस्तक में प्राध्यापक श्री

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मधुसूदन ढांकी ने इस स्तोत्र और उसके रचनाकार से सम्बन्धित सभी प्रश्नों का अकाट्य साक्ष्यों द्वारा सटीक उत्तर प्रस्तुत किया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में प्रो० जगदीश चन्द्र जैन द्वारा लिखित पूर्वावलोक, पं० दलसुख मालवणिया द्वारा लिखित पुरोवचन एवं लेखकद्वय द्वारा लिखित प्रास्ताविक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वस्तुत: यह पुस्तक उच्च स्तर के शोधार्थियों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगी। आज की भीषण मंहगाई के युग में भी इस अनमोल ग्रन्थ को अमूल्य ही वितरित करना प्रकाशक की उदारता का परिचायक है। सही अर्थों में यह ग्रन्थ अमूल्य ही है। ऐसे ग्रन्थरत्न के लेखन और प्रकाशन तथा उसके नि:शुल्क वितरण के लिए लेखक, प्रकाशक और प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले ट्रस्टीगण सभी अभिनन्दनीय हैं।

हिन्दी के महावीर प्रबन्ध काव्यों का आलोचनात्मक अध्ययन- लेखिका- डॉ० दिव्य गुणाश्री, प्रकाशक-विचक्षण स्मृति प्रकाशन, श्री मुनिसुव्रत स्वामी जैनमंदिर, दादासाहेबना पगलां, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९; प्रथम संस्करण मई १९९८ ई०, आकार-डिमाई, पृष्ठ- १०+२७५; हार्डबोर्ड वांइडिंग, मूल्य-सदुपयोग।

जिस प्रकार पूर्वकाल में प्राकृत-संस्कृत और अपभ्रंश भाषाओं में अनेक रचनाकारों ने भगवान् महावीर के चरित्र का गुणगान किया है उसी प्रकार इस युग में राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी विभिन्न रचनाकारों ने प्रबन्धकाव्यों के रूप में उनके जीवन चरित्र का वर्णन किया है जिसे साध्वीरत्न दिव्यगुणाश्री जी ने अपने शोध प्रबन्ध का आधार बनाया है।

शोध प्रबन्ध चार अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में ४ खंड हैं। इनमें पूर्व भूमिका, जैनधर्म की प्राचीनता, तीर्थंकरों की परम्परा में भगवान् महावीर और आधारभूत प्रबन्ध काव्यों का साहित्यिक परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में भगवान् का विस्तृत जीवन परिचय देते हुए उनके पारिवारिकजनों का वर्णन है। तृतीय अध्याय में प्रबन्धग्रन्थों के भावपक्ष का विवेचन है जिसके अन्तर्गत उनमें वर्णित जैनधर्म, राष्ट्रीय भावना, युगीन परिस्थितियों आदि का एक सौ पृष्ठों में विस्तृत विवेचन है। चतुर्थ अध्याय में विवेच्य प्रबन्ध ग्रन्थों के कलापक्ष पर ७० पृष्ठों में प्रकाश डाला गया है। जैन विद्या के विशिष्ट अभ्यासी डॉ० शेखरचन्द जैन के निर्देशन में तैयार किया गया यह शोध प्रबन्ध वस्तुत: साध्वी जी द्वारा विद्वत् समाज को दिया गया एक अनुपम भेंट है। पुस्तक की साज-सज्जा आकर्षक और मुद्रण त्रुटिरहित है। ग्रन्थ को नि:शुल्क वितरित करना प्रकाशक की उदारता का परिचायक है।

श्री लावण्य जीवनदर्शन : काव्यप्रणेता-आचार्य श्रीमद् विजयसुशील सूरि प्रकाशक-श्री सुशील साहित्य प्रकाशन समिति, राइका बाग, जोधपुर, राजस्थान- ३४२००१; प्रकाशन वर्ष- मई १९९७ ई०; पृष्ठ ८+१२०; आकार-रायल आठपेजी; मूल्य- २५ रूपया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुत पुस्तक तपागच्छ के प्रसिद्ध आचार्य स्व० श्री विजयलावण्य सूरीश्वर जी महाराज का सरल हिन्दी भाषा में छन्दोबद्ध जीवन चरित्र है जो उनके प्रशिष्य आचार्य विजयसुशील सूरि द्वारा प्रणीत है। मंगलाचरण से प्रारम्भ इस ग्रन्थ में आचार्यश्री के जीवन से सम्बन्धित घटनायें बड़े ही सुन्दर रूप में वर्णित हैं। सौराष्ट्रदर्शन नामक खंड में उक्त प्रान्त के विभिन्न तीर्थों का और अनुपम साहित्यसाधना के अन्तर्गत आचार्यश्री की साहित्यिक कृतियों का सुन्दर विवेचन है। कृति के अन्त में रचनाकार की प्रशस्ति और संदर्भ ग्रन्थसूची भी दी गयी है। ग्रन्थ का मुद्रण अत्यन्त कलात्मक और त्रुटिरहित है।

श्रीलावण्यसूरिमहाकाव्यम् : प्रेणता- आचार्य श्रीमद् विजयसुशील सूरि जी म०; प्रकाशक-पूर्वोक्त, प्रकाशन वर्ष-मई १९९७; पृष्ठ १६+१५२; आकार-रायल आठपेजी; मूल्य-स्वाध्याय।

प्रस्तुत महाकाव्य आचार्यश्री लावण्यसूरि जी महाराज के जीवन पर आधारित एक उत्कृष्ट रचना है। संस्कृत भाषा में रचित इस महाकाव्य में रचनाकार ने शक्य सभी तत्त्वों समावेश किया है और इस प्रकार उन्होंने संस्कृत साहित्य को वर्तमान काल में अपनी लेखनी से समृद्ध किया है। इस महाकाव्य में मूलगाथा के साथ उसका संस्कृत और हिन्दी भाषा में अनुवाद भी दिया गया है, जिससे सामान्यजन भी इससे लाभान्वित हो सकेगें। पुस्तक की साज-सज्जा आकर्षक और मुद्रण कलापूर्ण एवं निर्दोष है।

महाराष्ट्र का जैन समाज : लेखक- श्री महावीर सांगलीकर; प्रकाशक जैन फ्रेण्ड्स, २०१, मुम्बई-पुणे मार्ग, चिंचवड़ पूर्व, पुणे ४११०१९; प्रकाशन वर्ष-अक्टूबर १९९८ ई०; आकार-डिमाई, पृष्ठ- ३२; मूल्य-१५ रूपया।

प्रस्तुत लघु पुस्तिका में विद्वान् लेखक द्वारा गागर में सागर भरने का सफल प्रयास किया गया है। यह पुस्तिका ६ अध्यायों में विभक्त है। इन में प्रस्तावना, महाराष्ट्र के जैन समाज और उसके प्रमुख व्यक्ति, स्थानीय जैन संस्थाओं आदि का बहुत ही सुन्दर विवेचन है। अन्त में परिशिष्ट (एक) के अन्तर्गत महाराष्ट्र की जैन जातियों और परिशिष्ट (दो) में जैन संस्थाओं तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गयी है। यह पुस्तक वस्तुतः एक ऐतिहासिक दस्तावेज है अतः न केवल शोधार्थियों बल्कि जनसामान्य के भी लिये पठनीय और संग्रहणीय है।

ज्ञानार्णव : एक समीक्षात्मक अध्ययन - लेखिका - साध्वी डॉ० दर्शन लता; प्रकाशक - श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी संघ, गुलाबपुरा (राजस्थान); प्रथम संस्करण १९९७ ई; पृष्ठ २०+२५६ आकार-रायल आठपेजी; मूल्य १५० रूपया।

प्रस्तुत पुस्तक साध्वी दर्शनलता जी के शोधप्रबन्ध का मुद्रित रूप है जिस पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डॉ० आर० सी० द्विवेदी के निर्देशन में राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से उन्हें पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई है। शोध प्रबन्ध ५ अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में भारतीय योग परम्परा का विस्तृत परिचय दिया गया है जिसके अन्तर्गत सिंधुकालीन सभ्यता में योग; तापस परंपरा, अवधूत परंपरा; तप का योग के रूप में विकास, पातंजल योग, राजयोग, हठयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, जैन तथा बौद्ध योग आदि की चर्चा है। द्वितीय अध्याय में ग्रन्थकार एवं ग्रन्थ का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में ग्रन्थ के स्वरूप व रचनाशैली पर प्रकाश डाला गया है। चतुर्थ अध्याय योगांगविश्लेषण के रूप में है। इसके अन्तर्गत आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान की पात्रता-अपात्रता, शुद्धोपयोग, बहिरात्मा-अंतरात्मा-परमात्मा, ध्यान के प्रतिकूल स्थान, योग साधना में ध्यान, उपनिषदों में ध्यान संकेत, ध्यान के भेद-प्रभेद आदि की १०० पृष्ठों में चर्चा की गयी है। पांचवां और अंतिम अध्याय उपसंहार स्वरूप है। इसके अन्तर्गत योग के क्षेत्र में आचार्य शुभचन्द्र की देन, रचनाकार पर पूर्ववर्ती ग्रन्थकारों का प्रभाव तथा उत्तरवर्ती लेखकों पर शुभचन्द्र के प्रभाव की चर्चा है और अन्त में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। शोध प्रबन्ध में दो परिशिष्ट भी हैं जिनमें से प्रथम में वर्तमान काल में प्रचलित विभिन्न ध्यान पद्धतियों- विपश्यना, प्रेक्षाध्यान, समीक्षण ध्यान, भावातीत ध्यान तथा रजनीश द्वारा निरूपित ध्यान पद्धतियों आदि की सक्षिप्त चर्चा है। अंतिम परिशिष्ट में संदर्भ ग्रन्थों की सूची दी गयी है जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रो० दयानन्द भार्गव द्वारा लिखित आमुख एवं डॉ० छगनलाल शास्त्री का पर्यवलोकन पुस्तक के महत्त्व को द्विगुणित कर देते हैं। एक श्वेताम्बर साध्वी द्वारा एक दिगम्बर आचार्य के ग्रन्थ को अपने शोध प्रबन्ध का आधार बनाना ही अत्यन्त आह्लादक है। ऐसे प्रामाणिक ग्रन्थ के लेखन व प्रकाशन के लिए लेखिका और प्रकाशक संस्था दोनों ही धन्यवाद के पात्र हैं।

अध्यात्म उपनिषद् भाग १-२ : रचनाकार-महोपाध्याय यशोविजय गणि; संस्कृत व गुजराती भाषा में टीकाकार व संपादक मुनि यशोविजय जी; संशोधक आचार्य जगच्चन्द्रसूरीश्वर जी एवं जयसुन्दरविजय जी गणि; प्रकाशक - श्री अन्धेरी गुजराती जैन संघ, करमचंद जैन पौषधशाला, १०६, एस० बी० रोड, इर्लाब्रिज, अंधेरी (पश्चिम) मुम्बई-५६; प्रकाशन वर्ष - वि० सं० २०५४; प्रथम भाग - पृष्ठ २७+१५३; द्वितीय भाग २१+१५४ से ३६७; दोनों भागों का मूल्य १९० रूपया; आकार-रायल आठ पेजी।

श्वेताम्बर परम्परा के श्रेष्ठ रचनाकारों में तपागच्छीय महोपाध्याय यशोविजय जी का नाम अत्यन्त आदर के साथ लिया जाता है। उनके द्वारा रचित अनेक रचनाओं में **अध्यात्मउपनिषद्** भी एक है। इस कृति पर वर्तमान युग में तपागच्छ के ही विद्वान् मुनि श्री यशोविजय जी ने संस्कृत भाषा में **अध्यात्म वैशारदी टीका** और गुर्जर भाषा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में **अध्यात्म प्रकाश व्याख्या** की रचना की है जिनका संशोधन आचार्य श्री जगच्चन्द्र सूरीश्वर जी महाराज एवं श्री जयसुन्दरविजय जी गणि ने किया है। प्रस्तुत पुस्तक न केवल अध्यात्म प्रेमीजनों बल्कि शोधार्थियों के लिए भी अत्यन्त उपयोगी है। पुस्तक की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक तथा मुद्रण दोषरहित है। यह पुस्तक प्रत्येक पुस्तकालय के लिए संग्रहणीय है।

निर्ग्रन्थ परम्परा में चैतन्य आराधना : आचार्यश्री नानेश; प्रकाशक- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समताभवन, बीकानेर; प्रथम संस्करण १९९७ ई०; आकार-डिमाई; पृष्ठ ८+८७; मूल्य-१० रूपया।

बाह्याडम्बरों से दिग्भ्रान्त अशान्तचित्त मानव को अपना ध्यान चैतन्य की ओर लगाने से ही सच्ची शांति प्राप्त हो सकती है। मानव अपने चारों ओर स्वनिर्मित परिग्रहरूपी जाल में स्वयं फंस जाता है और प्रयास करने पर भी उससे छूट नहीं पाता। यदि मानव आज भी महावीर के उपदेशों पर चले, तो उसकी अनेक समस्यायें स्वत: हल हो जायेंगी। प्रस्तुत पुस्तक समताविभूति आचार्य नानेश के प्रवचनों का संग्रह है। इसमें उन्होंने अत्यन्त सरल किन्तु सारगर्भित भाषा में अपने विचार व्यक्त किये हैं जो न केवल जैन समाज बल्कि सभी मनुष्यों के लिए प्रेरणादायी है।

प्रवचनपर्व : प्रवचनकार - आचार्यश्री विद्यासागर जी; प्रकाशक - मुनिसंघ साहित्य प्रकाशन समिति, कटरा बाजार, सागर, मध्यप्रदेश; प्रथम संस्करण १९९३, पृष्ठ १४४, आकार-डिमाई, मूल्य -१० रूपया।

प्रस्तुत पुस्तक में सन्त शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा पर्युषणपर्व पर दिये गये प्रवचनों का संकलन है। शास्त्रों के गूढ़ रहस्यों को अत्यन्त सरल भाषा में जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत कर उसे बोधगम्य बना देना आचार्यश्री की विशेषता है। इस पुस्तक में उन्होंने पारम्परिक दृष्टान्तों की अपेक्षा मानवजीवन की दैनिक घटनाओं के उदाहरणों से अपने कथन को पुष्ट किया है, जिससे उनका हृदय पर सीधा प्रभाव पड़ता है। पुस्तक सभी के लिए पठनीय है। इसकी साज-सज्जा आकर्षक तथा मुद्रण त्रुटिरहित है।

सागरना स्मरण तीर्थे (गुजराती), लेखक - आचार्य मनोहरकीर्ति सागरसूरि तथा डॉ० कुमारपाल देसाई; संपा० - मुनिश्री अजयकीर्तिसागर एवं मुनिश्री विनय कीर्तिसागर; प्रकाशक - श्री अविचल ग्रन्थ प्रकाशन समिति, प्राप्ति स्थान - श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वर जी जैन समाधि मंदिर, स्टेशन रोड, बीजापुर-३८२ ८७०; पृष्ठ १२+३१०.

श्वेताम्बर मूर्तिपूजक गच्छों में तपागच्छ का आज सर्वोपरि स्थान है। इस गच्छ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की विभिन्न शाखाओं में सागर संविग्न शाखा भी एक है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण एवं बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में हुए अध्यात्मयोगी, प्रखर चिन्तक, शताधिक ग्रन्थों के रचयिता आचार्य बुद्धिसागर सूरि तपागच्छ की इसी शाखा के थे। आचार्य बुद्धिसागर सूरि के पश्चात् उनके पट्टधर कीर्तिसागर सूरि हुए। सागरसंविग्न शाखा के वर्तमान गच्छनायक श्री सुबोधसागर सूरि इन्हीं के पट्टधर हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन आचार्य कीर्तिसागर सूरि की जन्म शताब्दी और वर्तमान गच्छनायक श्री सुबोधसागर जी महाराज की आचार्यपद रजतजयन्ती महोत्सव (सं० २०२३-२०४७) के अवसर पर किया गया है। सर्वश्रेष्ठ आर्टपेपर पर मुद्रित सम्पूर्ण ग्रन्थ में बुद्धिसागर सूरि, आचार्य कीर्तिसागर सूरि और आचार्य सुबोधसागर सूरि के जीवन के विविध पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। पुस्तक में सैकड़ों रंगीन एवं सादे चित्र दिये गये हैं। अन्त में श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि जैन समाधि मंदिर का सचित्र विवरण दिया गया है। अत्यधिक लागत से निर्मित यह ग्रन्थ प्रत्येक श्रद्धालु उपासकों के लिये संग्रहणीय है।

रामायणनो रसास्वाद : प्रवचनकार-पूज्य आचार्यश्री रामचन्द्र सूरि जी म०; संपादक-आचार्यश्री विजयकीर्तियशसूरीश्वर जी महाराज; प्रकाशक- सन्मार्ग प्रकाशन, श्वेताम्बर मूर्तिपूजक तपागच्छ जैन आराधना भवन, पाछीयानी पोल, रिलीफ रोड, अहमदाबाद - ३८० ००१, द्वितीय संस्करण १९९५ ई०, पृष्ठ ४६०; आकार - डिमाई; मूल्य ७५ रूपया।

हिन्दू परम्परा की भांति जैन परम्परा में भी प्राचीन काल से ही राम की कथा अत्यन्त लोकप्रिय रही है और इसका प्रमाण है प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, गुजराती, राजस्थानी आदि विभिन्न भाषाओं में विभिन्न जैन रचनाकारों द्वारा राम के चरित्र का वर्णन। प्रस्तुत पुस्तक तपागच्छीय संघनायक, पूज्य आचार्य विजयरामचन्द्र सूरि द्वारा रामायण पर दिये गये प्रवचन का द्वितीय संस्करण है। इसमें १० अध्यायों में दशरथ, उनकी रानियों, राम के राज्याभिषेक की तैयारी, राम को वन भेजने का निश्चय, भरत का राज्याभिषेक, सीताअपहरण, महासती अंजनासुन्दरी, लंकाविजय, अयोध्या में रामराज्य, सीता पर आक्षेप और अन्त में सीता का दिव्य और राम के निर्वाण का वर्णन किया गया है।

सम्पूर्ण पुस्तक में रामायण के प्रमुख पात्रों - दशरथ, कौशल्या, कैकेयी, राम, लक्ष्मण, सीता, भरत, लवण, अंकुश, रावण, विभीषण, मंदोदरी, पवनंजय, महासती अंजनासुन्दरी, हनुमान, जटायु, नारद आदि के जीवन-सम्बन्धी विविध घटनाओं और आदर्शों को दर्शाते हुए उनसे मानव जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाने की प्रेरणा दी गयी है। गजराती भाषा में होने के कारण हिन्दी भाषी इसके स्वाध्याय के लाभ से वंचित रहेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुस्तक की साज-सज्जा सुन्दर और मुद्रण निर्दोष है। पक्के बाइंडिंग वाली इस पुस्तक का मूल्य लागत मात्र रखा गया है जो प्रकाशक की उदारता का परिचायक है।

अध्यात्म की अनूठी पत्रिका स्वानुभूतिप्रकाश नि:शुल्क प्राप्त करें

श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट, भावनगर द्वारा **स्वानुभूतिप्रकाश** नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। यह पत्रिका जिन मंदिरों, शोध संस्थाओं, पुस्तकालयों, विद्वानों, प्रवचनकारों एवं तत्त्वजिज्ञासुओं को नि:शुल्क प्रतिमाह भेजी जाती है। जो भी संस्थायें या स्वाध्याय प्रेमी उक्त योजना का लाभ लेना चाहते हों वे अपना पूरा पता पिनकोड के साथ साफ-साफ अक्षरों में लिख कर निम्नलिखित पते पर भेजें।

संपादक - **स्वानुभूतिप्रकाश**
श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट,
५८०, जूनी माणेक बाडी,
भावनगर - ३६४००१
(गुजरात राज्य)

डाक टिकट भेजकर सत्-साहित्य नि:शुल्क मंगा लें

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के प्रवचनों की शृंखला में आचार्य कुन्दकुन्द कृत ग्रन्थाधिराज **समयसार** (गाथा २३७ से ३०७) पर हुए प्रवचनों का संकलन **''प्रवचन रत्नाकार भाग-८''** (पृष्ठ ४४६ कीमत २०/- रू.) तथा **''नियमसार''** (गाथा ३, ८, ९, १०, १४, १५) पर हुए प्रवचन **''कारणशुद्धपर्याय''** (पृष्ठ १२४ कीमत ६/-रू०) मगनमल सौभागमल पाटनी फेमिली चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से मुनिराजों, ब्रह्मचारियों, मंदिरों, संस्थाओं, मुमुक्षुओं को स्वाध्यायार्थ नि:शुल्क भेंट स्वरूप भेजी जा रही है।

इच्छुक महानुभाव डाक खर्च के ४/- (चार रूपयें) के साफ-सुथरे (फ्रेश) टिकट भेजकर नि:शुल्क मंगा लेवें। टिकट भेजने की अंतिम तिथि ३१ जनवरी ९९है।

- नि:शुल्क साहित्य वितरण विभाग
श्री टोडरमल स्मारक भवन,
ए-४ बापूनगर, जयपुर ३०२ ०१५ (राज.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साभार प्राप्त

१. जीवन निर्माण - प्रवचनकार - पू० आचार्य श्री राजयशसूरि जी म० सा०, संपा० मुनि विश्रुतयशविजय जी म० सा०; प्रकाशक - लब्धि विक्रम संस्कृति केन्द्र, टी/७ए शांतिनगर, अहमदाबाद ३८० ०१३, पृष्ठ १६५, द्वितीय संस्करण १९९८ ई०, साइज डिमाई।

२. राजचिंतनिका - चिन्तनकार - पू० आचार्य राजयशसूरि जी म० सा०, प्रकाशक - श्री आलंदूर जैन संघ, चेन्नई, प्रथम संस्करण १९९८ ई०, पृष्ठ ४८, पाकेट साइज।

3. An out Line of Jainism- Author - Acharya Rajayash Surishwar Ji Maharaj. Publisher - Shri Labdhi Vikram Sanskruti Kendra. T/7 A. Shanti nagar Society. Ahmedabad - 380 013 Pocket size.

४. श्री तत्त्वसार विधान - श्री राजमल पवैया, संपा० श्री नाथूलाल जी शास्त्री; प्रकाशक - श्री भरत पवैया, संयोजन - तारादेवी पवैया ग्रन्थमाला, ४४ इब्राहिमपुरा- भोपाल - ४६२ ००१; पृष्ठ ४८; प्रथम संस्करण जनवरी १९९८ ई०, मूल्य - ६ रूपये।

५. श्री तत्त्वानुशासन विधान - श्री राजमल पवैया; संपा० डॉ० देवेन्द्रकुमार शास्त्री; प्रकाशक - पूर्वोक्त, पृष्ठ २००; प्रथम संस्करण जुलाई १९९७ ई०; मूल्य २५ रूपये।

६. **श्री तत्त्वज्ञान तरंगिणी विधान** - श्री राजमल पवैया; संपा० डॉ० देवेन्द्रकुमार शास्त्री; प्रकाशक-पूर्वोक्त; पृष्ठ ३८४; प्रथम संस्करण - अगस्त १९९७ ई०; मूल्य ४० रूपये।

७. जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर (आचारांगसूत्र) पुष्प ३-४-प्रश्नोत्तर लेखक - श्री तिलोक मुनि जी महाराज; प्रकाशक - श्री जैनागम नवनीत प्रकाशन समिति, C/ o श्री ललितचन्द्र मणिलाल सेठ, शंखेश्वरनगर, रतनपर, पोस्ट-जोरावर नगर, जिला - सुरेन्द्रनगर - ३६३ ०२०, गुजरात; प्रथम संस्करण - अप्रैल १९८९ ई०; पृष्ठ ३८८; मूल्य २० रूपये।

८. सम्यग्ज्ञान-दीपिका - रचयिता - क्षुल्लक धर्मदास जी; हिन्दी अनुवाद-पं० फूलचन्द जी सिद्धान्तशास्त्री; प्रकाशक - श्रीवीतराग सत् साहित्य प्रसारक ट्रस्ट, भावनगर-३६४ ००१; वीरनिर्वाण सम्वत् २५२३/१९९६ ई०; पृष्ठ ११९; आकार-डिमाई; मूल्य २० रूपया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. विधि विज्ञान - प्रवचनकार - श्री कानजी स्वामी; संपा० श्री शशीकान्त म० सेठ; प्रकाशक - पूर्वोक्त; भावनगर वीरनिर्वाण सम्वत् २५१५/ई० सन् १९८९; पृष्ठ ७६; आकार-डिमाई; मूल्य ३ रूपया।

१०. अनुभव प्रकाश - लेखक- स्व० दीपचन्द जी कासलीवाल; प्रकाशक- पूर्वोक्त, भावनगर, वीरनिर्वाणसम्वत् २५२०/ ई० सन् १९९३; पृष्ठ ८४; आकार- डिमाई; मूल्य १० रूपया।

११. जिण सासणं सत्वं - प्रवचनकार - पूज्य श्री कानजी स्वामी; संपा०- श्री शशिकान्त म० सेठ; प्रकाशक - पूर्वोक्त, भावनगर, वीरनिर्वाण सम्वत् २५१६ / ई० स० १९८९; आकार - डिमाई; पृष्ठ १५२; मूल्य ८ रूपया।

१२. तत्त्वानुशीलन - लेखक- श्री शशीकान्त म० सेठ; प्रकाशक- पूर्वोक्त; भावनगर वीरनिर्वाण सम्वत् २५२४/ ई० स० १९९८ ई०; आकार- डिमाई; पृष्ठ १६१; मूल्य २० रूपये।

१३. दृव्यदृष्टि-प्रकाश (श्री निहालचंद सोगानी के पत्रों का संकलन एवं श्री कानजी स्वामी के प्रवचनों का संग्रह); प्रका०- पूर्वोक्त; प्रकाशन वर्ष- वीर निर्वाण सम्वत् २५१९/ ई० स० १९९२; आकार- डिमाई; पृष्ठ १९६; मूल्य १५ रूपया।

१४. निर्भ्रांत-दर्शन की पगडण्डी पर - लेखक - श्री शशीकान्त म० सेठ; अनुवादक - श्री रमेशचन्द्र सोगानी; प्रकाशक - पूर्वोक्त, प्रकाशन वर्ष - वि० सं० २०५३ ; पृष्ठ ६०; मूल्य-१० रूपया।

१५. धन्य अवतार (श्री चम्पाबहन के सम्बन्ध में श्री कानजी स्वामी के उद्गार); प्रकाशक-पूर्वोक्त, पृष्ठ ३८ ।

१६. मुमुक्षुता का आरोहणक्रम - विवेचक - श्री शशीकान्त म० सेठ; प्रका० - पूर्वोक्त, प्रकाशन वर्ष १९८९ ई०, पृष्ठ १३६; मूल्य - १५ रूपये।

जैन जगत्

इन्दौर में आचार्यसम्राट श्री देवेन्द्रमुनि जी महाराज के सान्निध्य में विविध आयोजन

आचार्यसम्राट श्री देवेन्द्रमुनि जी महाराज के चातुर्मासार्थ विराजने से यहां पर धर्मकी अभूतपूर्व प्रभावना हुई। उनके दैनिक प्रवचन में देश के विभिन्न भागों से श्रद्धालुगण पहुंचे। दि० ६ अगस्त को आचार्यश्री ने श्री प्रेमसुख जी महाराज व ७ अगस्त को मरुधरकेशरी श्री मिश्रीमलजी महाराज के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विस्तृत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाश डाला। ८ अगस्त को उन्होंने रक्षाबंधन के पावनपर्व के अवसर पर उसके महत्त्व की विवेचना की । दिनांक ९ अगस्त को मासखमण करने वाले ११ तपस्वियों का सम्मान किया गया। १४ अगस्त को जन्माष्टमी के शुभपर्व पर आचार्य श्री ने कर्मयोगी श्रीकृष्ण के जीवन और व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। १५ अगस्त को स्वाधीनता दिवस के अवसर पर उन्होंने राष्ट्र के नाम संदेश दिया । १७ अगस्त को उनके द्वारा प्रतिभाशाली बालक-बालिकाओं का सम्मान किया गया।

१९ अगस्त से २६ अगस्त तक पर्युषण पर्व के अवसर पर प्रतिदिन अपने आध्यात्मिक प्रवचनमाला के अन्तर्गत आचार्यश्री ने दान, दीक्षा, नारी जीवन की महत्ता, संवत्सरीमहापर्व आदि महत्त्वपूर्ण विषयों की सविस्तार चर्चा की।

दिनांक ३१ अगस्त को सामूहिक क्षमापना का आयोजन किया गया जिसमें तेरापंथी समुदाय की महासती श्री कनकरेखा जी, कई मंदिरमार्गी संत तथा गुजराती समाज की महासती श्री भारती बाई व गौतम मुनि आदि के प्रवचन हुए।

दिनांक ३ सितम्बर को श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्यसम्राट आत्माराम जी महाराज की जयन्ती सोल्लास मनायी गयी। ५ सितम्बर को एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गयी जिसमें महासती स्व० श्री सोहनकुंवर जी और स्व० रूपेन्द्र मुनि जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। इसी दिन आचार्य श्रीजयमल की भी जयन्ती मनायी गयी।

दिनांक २८ सितम्बर से ४ अक्टूबर तक उपाध्याय पुष्कर मुनि जी महाराज की जयन्ती मनायी गयी। जयन्ती कार्यक्रम के अंतिम दिन ४ अक्टूबर को मुख्य आयोजन रहा जिसमें राजस्थान सरकार के शिक्षामंत्री श्री गुलाबचन्द्र कटारिया ने प्रमुख अतिथि के रूप में भाग लिया। इस अवसर पर श्वे० स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष श्री हस्तीमल मुणोत, महामंत्री श्री माणकचंद जी कोठारी, समाजरत्न श्री हीरालाल जैन तथा समाज के पदाधिकारी और बड़ी संख्या में देश के विभिन्न भागों से पधारे भक्तजन उपस्थित थे। सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री नेमनाथ जैन ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया और आचार्यश्री के सानिध्य में पौष्टिक आहार (गर्भवती गरीब महिलाओं हेतु) वितरण, रोगमुक्ति, व्यसन मुक्ति एवं ज्ञान-ध्यान की अपनी योजनाओं का शुभारम्भ किया जिसकी सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आचार्यश्री देवेन्द्रमुनि जी महाराज का जन्मदिवस होने से धनतेरस के दिन विभिन्न वक्ताओं ने आचार्यश्री के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। दीपावली के पावन पर्व पर अपने उद्बोधन में आचार्यश्री ने लौकिक दीपावली के साथ-साथ आध्यात्मिक दीपावली मनाने का आग्रह किया। इन्दौरवासियों के लिए यह अत्यन्त सौभाग्य की

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

बात है कि पूज्य आचार्यसम्राट की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से श्री नेमनाथ जी द्वारा पार्श्वनाथ विद्यापीठ की एक शाखा का इन्दौर में दिनाक १५ नवम्बर से शुभारम्भ हुआ है।

राजकोट में आगमसूत्र का विमोचन सम्पन्न

रायलपार्क, राजकोट ३० अगस्त:

स्थानकवासी जैन उपाश्रय में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री केशूभाई पटेल के सानिध्य में **जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर-आचारांगसूत्र पुष्प ३-४** की विमोचन विधि एवं गुजराती भाषा में विवेचन युक्त आगम की समर्पण विधि का कार्यक्रम ३० अगस्त को सम्पन्न हुआ। पुस्तक का विमोचन करते हुए मुख्यमंत्री जी ने मुनिराज श्री तिलोकमुनि जी का अभिवादन करते हुए आचार की आवश्यकता से अपना वक्तव्य प्रारम्भ किया जो धार्मिक विचारों के साथ करीब ४० मिनट तक चला।

"जैन परम्परा में तीर्थंकरों की अवधारणा" विषयक संगोष्ठी सम्पन्न

उदयपुर १९-२० सितम्बर : समताविभूति आचार्य श्री नानेश एवं युवाचार्य श्री रामेश के सानिध्य तथा आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर के सहयोग से श्री नवचेतना समता युवा मंच द्वारा विगत १९-२० सितम्बर को **जैन परम्परा में तीर्थंकरों की अवधारणा** विषय पर द्विदिवसीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के संयोजक और आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान के प्रभारी डॉ० सुरेश सिसोदिया ने विषय प्रवर्तन किया। संगोष्ठी के प्रथम सत्र में पार्श्वनाथ विद्यापीठ के प्रवक्ता, युवा विद्वान् डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय ने तीर्थंकर अरिष्टनेमि पर अपना महत्त्वपूर्ण शोधनिबन्ध प्रस्तुत किया। इस सत्र में डॉ० उदयचन्द जैन एवं डॉ० मंजू सिरोया ने भी अपने शोधपत्रों का वाचन किया। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में डॉ० धर्मचन्द जैन; डॉ० जगतराम भट्टाचार्य और डॉ० प्रेमसुमन जैन ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। २० सितम्बर को संगोष्ठी के तृतीय सत्र में डॉ० सुरेश सिसोदिया और डॉ० आर० एम० लोढ़ा ने अपने शोध पत्र पढ़े। संगोष्ठी के अंतिम सत्र में उसी दिन डॉ० हुकुमचन्द जैन, डॉ० जीतेन्द्र बी० शाह, श्री कमल भूरा और डॉ० देव कोठारी के शोधपत्र प्रस्तुत हुए। संगोष्ठी के समापन समारोह में अखिल भारतीय साधुमार्गी जैनसंघ, बीकानेर के पदाधिकारी गण भी बड़ी संख्या में पधारे। समारोह के मुख्यअतिथि श्री सागरमल जी चपलोत ने सभी विद्वानों को श्री नवचेतना समता युवा मंच की ओर से स्मृतिचिन्ह भेंट किया। संगोष्ठी के सभी सत्रों का सकुशल संयोजन एवं संचालन डॉ० सुरेश सिसोदिया ने किया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाराष्ट्रप्रान्तीय जैन श्रावक संघों का शिविर सम्पन्न

मुम्बई ३० सितम्बर : श्रमणसंघीय महामंत्री श्री सौभाग्यमुनि 'कुमुद' के सानिध्य और जैन कान्फ्रेन्स के उपाध्यक्ष श्री शांतिलाल जी छाजेड़ की अध्यक्षता में महाराष्ट्र प्रान्त के विभिन्न जैन श्रावक संघों के उच्च पदाधिकारियों का एक दिवसीय मार्गदर्शन शिविर पिछले दिनों नेमाडी बाड़ी, ठाकुरद्वार में सम्पन्न हुई। इस शिविर में बड़ी संख्या प्रत्येक जिले के जैन संघ के अध्यक्ष व मंत्री सम्मिलित हुए।

देश की अखण्डता सन्तों पर निर्भर है-

आचार्य विमलसागर जी

टीकमगढ़: सुप्रसिद्ध विचारक, जैनाचार्य श्री विमलसागर जी ने पिछले दिनों पार्श्वसागर त्यागी व्रती भवन के प्रांगण में अपनी प्रवचनमाला के अन्तर्गत भारी संख्या में एकत्रित जनसमुदाय के बीच कहा कि देश की अखण्डता प्राचीन काल से ही सन्तों के ऊपर निर्भर रही है और आज भी उन्हीं पर है। उन्होंने कहा कि सन्तों द्वारा समय-समय व्यक्त पर किये गये सद्विचार ही हमारे जीवन में आदर्श बनकर अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाते हैं। देश की वर्तमान राजनीति की चर्चा करते हुए उन्होंने लोगों के नैतिक मूल्यह्रास पर अत्यन्त दुःख प्रकट किया और कहा कि विश्वशांति के लिए राजनीति में धर्म का प्रवेश और सन्तों का मार्गदर्शन राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए अनिवार्य है।

श्री ऋषिमंडल पूजाविधान सम्पन्न

कानपुर ३० सितम्बर : महानगर कानपुर में चातुर्मास कर रहे परमपूज्य उपाध्याय श्री विद्यासागर जी महाराज के सानिध्य में दि० २१ सितम्बर से २९ सितम्बर तक अष्टदिवसीय **श्री ऋषिमंडल पूजाविधान** सानन्द सम्पन्न हुआ।

मुनिश्री सुमनकुमार जी महाराज की ४९ वीं दीक्षा जयन्ती सम्पन्न

चेन्नई ४ अक्टूबर : श्रमणसंघीय सलाहकार मुनिश्री सुमनकुमार जी की दीक्षा की ४९ वीं जयन्ती यहां सोल्लास मनायी गयी। इस अवसर पर श्री रिखबचन्द जी लोढ़ा, श्री किशनलाल जी वैताला, श्री भँवरलाल जी सांखला आदि विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों ने मुनिश्री के जीवन पर प्रकाश डाला और उनके दीर्घायु होने की कामना की। इस अवसर पर जरूरतमन्द लोगों को भोजन-वस्त्र आदि प्रदान किये गये। एक प्रस्ताव पास कर यह भी निर्णय लिया गया कि सम्पूर्ण तमिलनाडु में स्थित जैन स्थानकों की एक सूची का प्रकाशन और सम्पूर्ण राज्य में साधु-साध्वियों के विचरण की व्यवस्था की जाये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन सम्पन्न

४-६ अक्टूबर : जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माता जी के सानिध्य में भगवान् ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें २० कुलपति/प्रतिकुलपति तथा देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के जैन विद्या विभागों, जैनपीठ तथा जैनधर्म-दर्शन के १०८ विद्वान् सम्मिलित हुए। तीन दिनों के ६ सत्रों में तिब्बती उच्च शिक्षा केन्द्र, वाराणसी के प्रो० एस० रिम्पोछे, जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, दिल्ली के कुलपति प्रो० अलादीन अहमद; महेशयोगी विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति प्रो० आद्याप्रसाद मिश्र, गुलवर्गा विश्वविद्यालय, गुलवर्गा के कुलपति प्रो० मुनियम्मा, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर के कुलपति प्रो० एस० एन० हेगड़े, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के कुलपति प्रो० एम० एस० रंगा आदि २० कुलपतियों ने भगवान् ऋषभदेव की शिक्षाओं, वैदिक ग्रन्थों में भगवान् ऋषभदेव के उल्लेखों, जैनधर्म का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव, पर्यावरण-संरक्षण के सम्बन्ध में जैनधर्म की भूमिका और समाज व्यवस्था-राजनैतिक अवस्था आदि पर अपने विचार व्यक्त किये। इस पुण्य अवसर पर समागत विद्वानों द्वारा जम्बूद्वीप घोषणापत्र स्वीकार किया गया, जिसके अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से जैन अध्ययन केन्द्रों की स्थापना एवं तद्विषयक कार्यक्रमों को गति प्रदान करने का अनुरोध किया गया। इस सम्मेलन में विभिन्न प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं में प्राकृत भाषा को भी स्थान देने की केन्द्र व राज्य सरकारों से मांग की गयी और विभिन्न विश्वविद्यालयों में वर्ष में एक दिन ऋषभदेव समारोह आयोजित करने तथा वर्तमान में जैनविद्या में कार्यरत अध्ययन केन्द्रों व शोधपीठों में प्राध्यापकों के समुचित पद स्वीकृत करने का अनुरोध किया गया।

इसी अवसर पर शरदपूर्णिमा के दिन आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माता जी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से ऋषभदेव राष्ट्रीय विद्वत् महासंघ की स्थापना भी की गयी। जैन विद्या के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान् प्रो० प्रेमसुमन जैन इसके प्रथम अध्यक्ष मनोनीत किये गये और डॉ० अनुपम जैन, डॉ० शेखरचन्द जैन को क्रमशः महामंत्री और कार्याध्यक्ष पद का कार्यभार दिया गया। इस संघ के परामर्श मंडल में प्रो० भागचन्द जैन तथा ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमार को स्थान दिया गया।

आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माता जी के जन्मदिन के अवसर पर दि० त्रिलोक शोध संस्थान के उदार सहयोग से गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ की भी स्थापना की गयी। विक्रमविश्वविद्यालय उज्जैन के पूर्व कुलपति प्रो० आर० आर० नादगांवकर इस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शोधपीठ के निदेशक नियुक्त किये गये। जैन विद्या के क्षेत्र में शोध करने के इच्छुक निम्नलिखित पते पर आवेदन करें।

गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ
C/o दि० जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर - २५०४०४ (मेरठ),
उत्तर प्रदेश

पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिसर का इन्दौर में शुभारम्भ

श्रीवर्धमान सेवा केन्द्र, इन्दौर के तत्त्वावधान में दिनांक १५ नवम्बर १९९८ को आचार्यसम्राट श्री देवेन्द्रमुनि जी महाराज की पावन निश्रा में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी के इन्दौर परिसर का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर बोलते हुए आचार्यश्री ने कहा कि आध्यात्मिक शिक्षण द्वारा आत्मा का अंतर्वृत्तियों को शिक्षित किया जा सकता है। यह शिक्षा सदैव कल्याणकारी होता है क्योंकि यह महत्त्वाकांक्षा नहीं अपितु नम्रता लाता है; विनय और विवेक को जागृत करता है। आचार्यश्री ने आगे कहा कि ज्ञान ज्योति है और अज्ञान अन्धकार है। ज्ञान आत्मा का निजगुण है और उसे प्रकट करने के लिये ही पार्श्वनाथ विद्यापीठ की स्थापना हो रही है। पूज्यश्री शालिभद्रजी महाराज के मंगलाचरण से प्रारम्भ हुए समारोह में महासती श्रीकनकरेखा जी, महासती श्री शांतिकुंवर जी, महासती श्री ललितप्रभाजी, श्री गौतममुनि जी, श्री जगतचन्द्र विजय जी महाराज और श्री नरेशमुनि जी महाराज ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री दीपचन्द गार्डी एवं अध्यक्ष श्री इन्द्रभूति बरार थे। पद्मश्री श्री बाबूलाल पाटोदी, डॉ० प्रकाश बांगानी, श्री हीरालाल पारिख, श्री जोधराज लोढ़ा, श्री सुजानमल बोरा, श्री लक्ष्मीचंद मंडलिक, श्री शांतिलाल धाकड़, डॉ० एन० पी० जैन (पूर्व राजदूत) इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री वर्धमान सेवा केन्द्र के अध्यक्ष श्री नेमनाथ जैन ने अतिथियों का स्वागत किया और बताया कि पार्श्वनाथ विद्यापीठ के इंदौर परिसर की पूरी योजना एक करोड़ रूपये की हैं तथा इसके लिए भवन निर्माण हेतु पृथक से उपयुक्त जमीन की तलाश की जा रही है। पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी में पिछले साठ वर्षों से संचालित है। इंदौर के परिसर के निदेशक होंगे डॉ० सागरमल जैन, जिन्होंने बीस वर्षों के अथक प्रयासों से विद्यापीठ को विश्वविख्यात बनाया। उनके मार्गदर्शन में जैन धर्म पर अब तक चालीस विद्यार्थी पी-एच० डी० प्राप्त कर चके हैं। इंदौर में परिसर खलने से यहां के विद्वानों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

और जिज्ञासु विद्यार्थियों को भी आध्यात्मिक विषयों के अध्ययन और शोधकार्य की प्रेरणा मिलेगी ताकि वे जैन विद्या के विविध आयामों को उद्घाटित कर सकें।

आपने बताया कि इंदौर परिसर में फिलहाल आठ हजार दुर्लभ धर्मग्रंथों का पुस्तकालय है। इसमें शीघ्र ही तीन हजार पुस्तकें और आने वाली हैं। पत्रकार वार्ता में उपस्थित श्री शांतिलाल धाकड़, श्री जयंतीभाई संघवी एवं श्री एन० के० जैन ने बताया कि पी-एच० डी० और डी० लिट्० के लिए शोध कार्य के साथ इस विद्यापीठ में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर अन्य विषयों के पाठ्यक्रम भी चलाये जाएंगे। ये हैं- जैन विद्या (धर्म, दर्शन, समाज एवं संस्कृति), प्राकृत भाषा एवं जैन साहित्य, तनाव प्रबंधन, 'नैदानिकी मनोविज्ञान, ध्यान एवं योग तथा अहिंसा, शांति शोध एवं मूल्य शिक्षा।' इसके अतिरिक्त, विद्यापीठ **जैन विद्या मनीषी** और **जैन विद्या वाचस्पति** जैसी उपाधियों हेतु कक्षाएं भी संचालित करेगा। देश के लब्धप्रतिष्ठित जैन विद्वानों ने विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में आकर शोध-अध्ययन-संपादन को गतिशील बनाने के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान की है।

इस अवसर पर प्रसिद्ध समाजसेवी श्री शांतिलाल धाकड़ का श्री श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी समाज की ओर से अभिनंदन किया गया। अभिनंदन का वाचन श्री जिनेश्वर जैन ने किया।

अभिनंनदनपत्र श्री गार्डी, श्री नेमनाथ जैन, श्री पाटोदी और डॉ० प्रकाश बांगानी ने भेंट किया। श्री धाकड़ ने कहा कि मैं समाज में समन्वय, संगठन और विकास के लिए कार्य करता रहूंगा उन्होंने समाज के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर **जैनिज्म इन ग्लोबल पर्स्पेक्टिव, जैन कर्मोलॉजी** और **अपरिग्रह 'द ह्यूमन सोल्यूशन'** पुस्तकों का विमोचन श्री गार्डी, डॉ० बांगानी और श्री पाटोदी ने किया। इस अवसर पर आचार्यश्री देवेन्द्र मुनिजी की पुस्तक **श्रावकव्रत, आराधना एवं श्रावक के चौदह नियम** पुस्तक का भी विमोचन किया गया। पार्श्वनाथ विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित नवीन पुस्तकों का सेट श्री इन्द्रभूति बरार द्वारा आचार्य देवेन्द्र मुनि के चरणों में अर्पित किया गया। पार्श्वनाथ विद्यापीठ, इन्दौर परिसर के निदेशक डॉ० सागरमल जैन ने विद्यापीठ की कार्ययोजना व उद्देश्य की विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की। पार्श्वनाथ विद्यापीठ के प्रशासनिक अधिकारी, प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय भी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि श्री दीपचंद गार्डी ने बोलते हुए कहा कि हमें ज्ञान एवं ज्ञानियों की पूजा करनी चाहिए। उनका सम्मान करना चाहिए, ज्ञानियों के माध्यम से ही हमें ऐसे विद्यापीठ संचालित करने में सहयोग मिलता है। आज जैन धर्म का विशद् अध्ययन आवश्यक है, इन्दौर में इसका शुभारम्भ एक सुखद संयोग है। इसके माध्यम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से समाज के सभी वर्ग, संत-सती एवं धर्म में रुचि रखने वालों की जिज्ञासा शांत होगी, वहीं इस कार्य द्वारा देश की सेवा भी होगी। पद्मश्री श्री पाटोदी ने भी इस अवसर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। समारोह का संचालन श्री हस्तीमल झेलावत और आभार प्रदर्शन श्री अनिल भंडारी ने किया।

सम्राट खारवेल स्मृति पुस्तकालय भवन का शिलान्यास सम्पन्न

नई दिल्ली १९ नवम्बर : कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली के परिसर में सम्राट खारवेल स्मृति पुस्तकालय भवन का उड़ीसा के मुख्यमंत्री माननीय श्री जानकी वल्लभ पटनायक के करकमलों द्वारा दिनांक २९ नवम्बर को आयोजित एक भव्य समारोह में शिलान्यास किया गया। पूज्य आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध उद्योगपति साहू श्री रमेशचन्द जैन ने की। इस समारोह में बड़ी संख्या में समाज के प्रबुद्ध वर्ग उपस्थित थे।

जैनधर्म-दर्शन का शरद्कालीन शिक्षण शिविर सम्पन्न

दिल्ली १६ अक्टूबर: भोगीलाल लहेरचन्द इस्टिट्यूट ऑफ इण्डोलाजी, दिल्ली में प्रथम बार १५ दिवसीय शरद्कालीन विशेष शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। दि० ३ अक्टूबर से प्रारम्भ हुए इस शिविर का उद्घाटन टाइस ऑफ इण्डिया के प्रबन्ध सम्पादक साहू रमेशचन्द्र जैन ने किया। इस शिक्षण शिविर में देश भर से चुने हुए ३५ अध्येताओं ने भाग लिया। १६ अक्टूबर को अयोजित समापन समारोह के अवसर पर श्री के० पी० ए० मेनन, कुलाधिपति, श्री लालबहादुरशास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली, प्रो० वाचस्पति उपाध्याय, प्रखर चिन्तक प्रो० नामवर सिंह, प्राकृत भाषा एवं साहित्य के मूर्धन्य विद्वान् स्वनामधन्य प्रो० सत्यरंजन बनर्जी तथा भारत सरकार के कई उच्चपदाधिकारी उपस्थित थे। अपने उद्बोधन में वक्ताओं ने शिविर के आयोजकों की सराहना की और अपने सुझाव भी दिये।

श्रीमती विनय जैन का अनुकरणीय प्रयास

अन्य भारतीय समाजों की भांति जैन समाज में भी बढ़ते हुए आडम्बरों, फिजूलखर्ची, त्योहारों पर उपहारों के आदान-प्रदान आदि को रोकने के लिए अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स की महिला शाखा की नवनिर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती विनय जैन ने उक्त कुप्रथा के विरोध में समाचार पत्रों और सभी स्थानकों में इस्तहार लगवा कर एक अनुकरणीय कार्य किया है और इसमें बहुत अंशों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

में उन्हें सफलता भी मिली है। श्रीमती जैन ने अपने इस प्रयास की सफलता से उत्साहित होकर अब दहेज विरोधी अभियान प्रारम्भ करने का निश्चय किया है और इस कार्य में समाज से आपेक्षित सहयोग की मांग की है।

अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स (महिला शाखा) का अधिवेशन सम्पन्न

लुधियाना २९ नवम्बर: श्री अखिल भारतीय श्वे० स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स (महिला शाखा) का एक दिवसीय अधिवेशन स्थानीय आत्मवल्लभ पब्लिक सीनियर हायर सेकेन्डरी स्कूल के विशाल प्रांगण में सोल्लास सम्पन्न हुआ, जिसमें समाज की प्रबुद्ध महिलाओं एवं पदाधिकारियों के साथ-साथ बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर पच्चीस लाख रूपयों की राशि से महिलाकल्याणकोष की भी स्थापना की गयी। इस कोष के ब्याज से अर्जित धनराशि का उपयोग महिला कल्याण के कार्यों में किया जायेगा।

डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी' पुरस्कृत

पार्श्वनाथ विद्यापीठ के पूर्व शोधछात्र और वर्तमान में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के जैन दर्शन विभाग के अध्यक्ष डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी' को पिछले दिनों दि० जैन अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा (अलवर-राजस्थान) में उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी म० सा० के सानिध्य में श्रुत संवर्धन संस्थान, मेरठ की ओर से आयोजित समारोह में बिहार के राज्यपाल श्री सुन्दरसिंह भंडारी ने प्रशस्तिपत्र, अंग वस्त्र एवं जैनरत्न की मानद् उपाधि से विभूषित करते हुए वर्ष १९९८ के **सुमतिसागर स्मृतिपुरस्कार** से सम्मानित किया। इसी समारोह में श्री नरेन्द्रप्रकाश जैन एवं श्री चेतनप्रकाश पाटनी को भी इसी प्रकार सम्मानित कर पुरस्कृत किया गया। पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिवार डॉ० प्रेमी की इस उपलब्धि पर उनका हार्दिक अभिनन्दन करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शोक समाचार

डॉ० (श्रीमती) कमलप्रभा जैन के पिता की दुःखद मृत्यु

पार्श्वनाथ विद्यापीठ की पूर्व प्रवक्ता एवं डीजल रेल कारखाना, वाराणसी पूर्व महाप्रबंधक श्री राजेन्द्र कुमार जैन की पत्नी डॉ० (श्रीमती) कमल प्रभा जैन के पिता जम्मू निवासी श्री बलवन्त राय जैन का दिनांक १६-१२-९८ को एक व दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। आप सफल व्यवसायी, धर्म परायण उदारमना सुश्रावक थे। धर्म और साधु सन्तों के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियों में आप सदैव अग्रणी रहते थे। आप नारी शिक्षा प्रति विशेष रूप से समर्पित थे। आप ने अपनी पुत्रियों को उच्च शिक्षा तो दी ही साथ ही समाज में भी लोगों को नारी शिक्षा के प्रति प्रेरित किया।

आप इतने सरल स्वभाव और साधुवृत्ति के थे कि दुर्घटना वाले दिन भी सुबह तीन बजे से अपनी धर्मपत्नी को उत्तराध्ययन सूत्र पढ़कर सुनाते रहे और संस का मोह त्यागने की प्रेरणा देते रहे। आप अपने पीछे दो पुत्र, तीन पुत्रियाँ तथा न पोतों का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

पार्श्वनाथ विद्यापीठ में आपकी दुःखद मृत्यु का समाचार सुनते ही एक श सभा आयोजित कर आपको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी तथा मृतात्मा शान्ति प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गयी।

जैन भवन जम्मू में भी आपके शोक में एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित व गयी जिसमें समग्र जैन समाज के प्रतिनिधियों ने आपको भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित कर

❖

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org